# 'DHARMNEER BHARATI KE KATHA SAHITYE MAIN STRI KA SWAROOP'

Dissertation submitted to the University of Hyderabad in partial fulfilment of the award of

**MASTER OF PHILOSOPHY**

IN

HINDI

BY


**RAKHI**

**(20HHHL12)**


**2022**

**UNDER THE SUPERVISION OF**

**PROF. R. S. SARRAJU**


Department of Hindi, School of Humanities

University of Hyderabad

Hyderabad-500046

INDIA

# ‘धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप’

{हैदराबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में **एम.फिल. की उपाधि** हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध}


## शोधार्थी

## राखी

## (20HHHL12)


**2022**


**शोध-निर्देशक**

**प्रो. आर. एस. सर्राजू**

हिंदी विभाग

मानविकी संकाय

हैदराबाद  विश्वविद्यालय

हैदराबाद-500046

तेलंगाना

भारत

# DECLARATION

I, **RAKHI (**Registration no**.20HHHL12**) hereby declare that this dissertation entitled **“DHARMNEER BHARATI KE KATHA SAHITYE MAIN STRI KA SWAROOP” [धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप]** submitted by me under the guidance and supervision of **PROF. R .S. SARRAJU** is a bonafide research work. I also declare that it has not been submitted previously in a part or in full to this University or any other University or Institution for award of any degree or diploma. I hereby agree that my dissertation can be deposited in shodhganga/ INFLIBNET.

Date : **RAKHI**

Place : **20HHHL12**

Signature of the Student

# CERTIFICATE

This is to certify that this dissertation entitled “DHARMNEER BHARATI KE KATHA SAHITYE MAIN STRI KA SWAROOP” {**धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप**} submitted by RAKHI bearing Reg No. 20HHHL12 in partial fulfilment of the requirements for the award of Master of Philosophy in HINDI is a bonafide work carried out by her under my supervision and guidance which is plagiarism free dissertation.

The dissertation it has not been submitted previously in a part or in full to this University or any other University or Institution for award of any degree or diploma.

Signature of the supervisor

**(PROF. R. S. SARRAJU)**

Head of the Department

PROF. GAJENDRA KUMAR PATHAK

Dean of the School

PROF.V. KRISHNA

# अनुक्रमणिका

## अनुक्रमणिका


पृष्ठ संख्या

**भूमिका** **8-11**

**प्रथम अध्याय :- धर्मवीर भारती के जीवन का रचनात्मक विकास** **12-48**

**1.1 धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व का विकास**

1.1.1 जन्म

1.1.2 शिक्षा

1.1.3 पारिवारिक और वैवाहिक जीवन

1.1.4 आजीविका-कर्मक्षेत्र

**1.2 धर्मवीर भारती के जीवन का रचनात्मक विकास**

1.2.1 उपन्यास

1.2.2 कहानी

1.2.3 काव्य संग्रह

1.2.4 नाटक (काव्य नाटक/ गीति नाट्य)

1.2.5 एकांकी

1.2.6 निबंध

1.2.7 अनुवाद साहित्य

**द्वितीय अध्याय:- धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप** **49-108**

2.1 **चयनित कथा साहित्य में सामाजिक धरातल**

2.1.1 अनमेल विवाह

2.1.2 दहेज

2.1.3 जातिवाद

2.1.3 अशिक्षा

2.1.5 देवदासी

2.1.6 विधवा जीवन

2.2 **चयनित कथा साहित्य में आर्थिक धरातल**

2.3 **चयनित कथा साहित्य में पारिवारिक धरातल**

2.4 **चयनित कथा साहित्य में व्यक्तिगत धरातल पर स्त्री के विभिन्न स्वरूप**

2.4.1 माँ

2.4.2 पत्नी

2.4.3 बहन

2.4.4 चाची

2.4.5 मौसी

2.4.6 प्रेयसी (प्रेमिका)

**तृतीय अध्याय:- धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री सरोकार** **109-129**

3.1 स्त्री स्वतंत्रता

3.2 स्त्री स्वतंत्रता का हनन

3.3 स्त्री और यौन नैतिकता

3.4 अस्मिता की तलाश में संघर्षरत स्त्री

3.5 स्त्री और विवाह

3.6 निष्कर्ष

**उपसंहार** **130-133**

**संदर्भ** **134-137**

# भूमिका

धर्मवीर भारती हिन्दी साहित्य का जाना-माना नाम है। बहुप्रतिभा के धनी भारती जी का स्थान हिन्दी साहित्य जगत में महत्त्वपूर्ण है। आधुनिक साहित्यकारों में धर्मवीर भारती ने अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से साहित्यिक कलाकारों के बीच एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया हैं। उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी रचनात्मक क्षमता का परिचय दिया है। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार होने के साथ-साथ वे एक सफल कवि, नाटककार, निबंधकार, समीक्षक, चिंतक, संपादक और अनुवादक भी रहे हैं। चिंतन और संवेदनशीलता के साथ कल्पना प्रभावी समावेश धर्मवीर भारती के साहित्य का महत्त्वपूर्ण पक्ष रहा है। मुख्य रूप से उन्होंने अपने साहित्य जीवन की शुरुआत गद्य साहित्य से की थी। धर्मवीर भारती ऐसे पहले सम्पूर्ण कथाकार हैं। जिन्होंने हिंदी कथा साहित्य में स्त्रियों को पुरुषों के मुकाबले अधिक अर्थपूर्ण बनाया और भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री विरोधी सोच का गहन अध्ययन भी किया। जिसके कारण उनकी रचनाधर्मिता को एक नया आयाम मिला है।

अपने समय और समाज पर गहरी पकड़ और सभी विधाओं पर कुशल लेखनी के कारण ही उनके कथा साहित्य को ठोस धरातल मिला है। उनका भाव-तत्त्व जितना गहरा है चिंतन उतना ही गंभीर। युगीन यथार्थ को उन्होंने बड़ी बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया है। भारती जी ने अपनी वैचारिकता को भारतीय संस्कारों से सींचा और गहन अध्ययन से पुष्ट किया है। जो उनके विचारों को व्यापकता और चिंतन को गहराई प्रदान करता है। उत्कृष्ट साहित्य की यह पहचान होती है कि वह न केवल समसामयिक हो बल्कि हर काल में भी उतना ही प्रासंगिक हो जितना कि आज है। भारती जी का  कथा साहित्य भी इसी कोटि में आता है। वे न केवल तत्कालीन समाज की दुखती रग पकड़ने में सफल हुए हैं अपितु भविष्य की घटनाओं का आकलन करने की दूर दृष्टि भी उनके पास थी। इसीलिए आने वाली कई पीढ़ियों के मार्गदर्शन करने की क्षमता उनके साहित्य में विद्यमान है। क्योंकि उन्होंने अपने कथा साहित्य में स्त्रियों को केंद्र में रखा है और साथ ही उनके विभिन्न रूपों को भी प्रस्तुत किया है।

मनुष्य के जीवन में पुरुष की ही तरह स्त्री का भी अपना महत्त्व है क्योंकि समाज के निर्माण में वह भी अपनी सहभागिता प्रदान करती चली आ रही है। अपनी भूमिकाओं का निर्वाह करते हुए स्त्री समाज का अभिन्न अंग बन जाती है। समाज में स्त्री सदियों से माँ, पत्नी, बहन, बेटी, सास और बहू आदि न जाने कितने ही अनेक दायित्वों का निर्वाह करती चली आ रही है। कहा जा सकता है कि मनुष्य का जीवन नारी के बिना अपूर्ण है। स्त्रियाँ समाज का अनावश्यक हिस्सा नहीं है बल्कि पुरुष की तरह समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उतनी ही अनिवार्य हैं। स्त्री तो जीवन की वह धुरी है, जहाँ से जीवन संचालित होता है। धुरी ठीक होगी तो जीवन का संचालन भी ठीक होगा, अन्यथा गड़बड़ा जाएगा। भारती जी के कथा साहित्य की प्रमुख विशेषता यह है कि उनके साहित्य में मध्यवर्गीय व निम्न मध्यवर्गीय स्त्रियों की अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ के रूप में हुई है। भारती जी ने  आर्थिक तंगी में जी रहे, जर्जर रूढ़ियों, परंपराओं तथा झूठी मर्यादाओं में जकड़े हुए मध्यवर्ग का जीवन करीब से देखा था। वे स्वयं भी इसी वर्ग की उपज थे इसीलिए वे मध्यवर्गीय जीवन के कटु यथार्थ से अच्छी तरह वाकिफ थे। उनके कथा साहित्य में अधिकतर स्त्रियाँ भी इसी वर्ग की हैं चाहे वह जमुना हो,सत्ती हो, या फिर दिनू की माँ हो। पुरानी रूढ़ियों, परंपराओं के दम घोटू अनैतिक तथा विकृतियों से भरे विषाक्त वातावरण में जी रहे मध्यवर्गीय समाज की स्त्रियाँ इसे अपनी नियति समझकर चुपचाप सहती हैं। व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने की, विद्रोह करने की शक्ति वे खो चुकी हैं। परिस्थितियों के आगे हार मानकर उस अंधकार पूर्ण जीवन जीने के लिए विवश हैं। भारती जी ने ऐसी अस्मिताहीन लाचार स्त्रियों के प्रति खीज प्रकट की है। उनका कहना है कि जो लोग व्यवस्था के विरुद्ध नहीं लड़ते हैं, संस्कारों का अनुकरण करते हैं उनकी मर्यादाशीलता भी सिर्फ उनकी कायरता ही होती है। भारती जी मानव नियति को पूर्व निर्धारित नहीं मानते थे। उनका कहना था कि मनुष्य स्वयं अपने भविष्य को बनाता और मिटाता है।रूढ़ियों, कुंठाओं, अविवेक, मूर्च्छना, मृत परंपरा, भय आदि बंधनों में जकड़ी स्त्रियों की मुक्ति कैसे की जाए? इस प्रश्न से वे लगातार जूझते रहे। वे स्त्रियों को समाज की स्वतंत्र, सार्थक इकाई मानते थे। उनकी दृष्टि से स्वातंत्र्य का अर्थ व्यापक था। स्वातंत्र्य उनके लिए केवल बाह्य परिस्थिति न होकर आंतरिक मूल्य

भी था। वे स्त्रियों स्वातंत्र्य के हिमायती अवश्य थे, पर स्त्रियों की स्वातंत्र्य के नाम पर अराजकता, उच्छृंखलता, निरंकुशता और दायित्वहीनता का समर्थन नहीं करते थे। उनके लिए स्वातंत्र्य के मायने थे मर्यादा पूर्ण, मूल्य परक दायित्व युक्त आचरण जो भारतीय परम्परा के अनुकूल हो।

इस लघु शोध-प्रबंध को अध्ययन एवं विश्लेषण की दृष्टि से भूमिका और उपसंहार के अतिरिक्त तीन अध्यायों में विभक्त किया गया है।

प्रथम अध्याय में धर्मवीर भारती के जीवन का व्यक्तित्व के विकास के साथ रचनात्मकता के विकास को दिखाया गया है। जिसमें संक्षिप्त रूप से भारती के जीवन का अनुशीलन किया गया है। जिसमें भारती के जन्म, शिक्षा, पारिवारिक और वैवाहिक जीवन, आजीविका, कर्मक्षेत्र, विदेशयात्रा, सम्मान, पुरस्कार के कुछ वैशिष्टों को रेखांकित किया गया है। साथ ही रचनात्मक विकास के अंतर्गत उनकी कृतियों उपन्यास, कहानी, काव्य-संग्रह, काव्य-नाटक, एकांकी, निबंध, अनुवाद साहित्य का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके रचनाओ की विशेषताओं को रेखांकित किया गया है।

द्वितीय अध्याय में धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री के स्वरूपों को विभिन्न धरातलों पर दिखाया गया है। जिनमें सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और व्यक्तिगत धरातल को शामिल किया गया है, इसके अंतर्गत स्त्री की स्थिति को विभिन्न रूपों के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय में धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री सरोकारों को केंद्र में रखकर स्त्री की समस्याओं को दिखाया गया है। जिसमें स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री स्वतंत्रता का हनन, स्त्री और यौन नैतिकता, अस्मिता की तलाश में संघर्षरत स्त्री, स्त्री और विवाह का विश्लेषण किया गया है।

अंत में उपसंहार, संदर्भ ग्रंथ सूची, पत्र-पत्रिकाओं तथा वेब लिंक के नाम संलग्न किए गए हैं।

इस शोध कार्य को संपन्न बनाने के लिए शोध में मुख्य रूप से विवेचनात्मक, विश्लेषणात्मक,और आलोचनात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के विषय चयन से लेकर संपन्न होने तक मेरे शोध निर्देशक प्रो. आर. एस. सर्राजू जी जैसे उद्भट चिन्तक एवं विचारक के साथ सन्नद्ध होकर मुझे यह कार्य संपन्न करने का सुअवसर प्राप्त

हुआ। गुरुदेव ने अपने अति व्यस्ततम समय में से जो महत्त्वपूर्ण भाग मुझे प्रदान किया, इसके प्रति मैं उनका आभार तथा कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। आपने समय-समय पर मुझे सुझाव तथा सलाह देते हुए मेरे शोध कार्य की कठिनाइयों को दूर किया। साथ ही मैं गुरुवर विभागाध्यक्ष प्रोफेसर गजेन्द्र कुमार पाठक सर तथा भीम सिंह जी की भी आभारी हूँ, जिन्होंने मेरी इस सोच को एक नयी दिशा देने में मेरी हर कदम पर सहायता की। उनके सुझाव एवं प्रोत्साहन मेरे लिए उपयोगी रहे।

इसके साथ ही मुझे मेरी अग्रज भावना दी, सुशांत सिंह शर्मा और अंकित दुबे भैया, आशीष कुमार और चेतन तथा अपनी अनुज काजल सिंह जैसे लोगों का विशेष सहयोग मिला। इसके लिए मैं उनके प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूँ। इसके साथ ही मैं अपने तमाम मित्रों का शुक्रिया अदा करना चाहती हूँ जिन्होंने इस लघु शोध प्रबंध कार्य को पूरा करने में मेरी यथासंभव सहायता की।

मैं अपने स्वर्गीय पिता श्री देवेन्द्र नाथ शर्मा की आजीवन कृतज्ञ रहूँगी। जिन्होंने मुझे शोध कार्य करने की प्रेरणा दी और समय-समय पर मेरा मनोबल बढ़ाते हुए सदैव शोध कार्य के लिए प्रोत्साहित किया। मेरे पिता अप्रत्यक्ष होकर भी निरंतर मेरे विचारों में, कार्यों में, मेरे साथ रहकर मुझे जीवन के प्रति आस्थावान बनाये रखते हैं। मैं अपनी माता श्रीमती संगीता देवी और बहन वैजन्ती के प्रति भी आभार प्रकट करती हूँ। जिनका इस शोध कार्य में प्रेरणाप्रद साथ रहा।

मैंने इस शोध प्रबन्ध कार्य को नयी दृष्टि से देखने-परखने का पूर्ण प्रयास किया है। धर्मवीर भारती के साहित्य में नवीन तथ्यों को स्वीकार कर आधुनिक दृष्टिकोण से कार्य किया है। इस शोध प्रबन्ध की प्रासंगिकता और उपयोगिता इस बात पर निर्भर करेगी कि शोध प्रबन्ध में जिन मूल्यों को अपनी विवेचना का विषय बना है। वह सुधी पाठकों एवं समीक्षकों के लिए कितना अधिक उपयोगी हो पाता हैं। फिर भी मुझे आशा है कि यह शोध प्रबन्ध प्रबुद्ध पाठकों के लिए नयी प्रस्तुति करेगा। शोध कार्य रूपरेखा के मुताबिक पूरा किया गया है।

हैदराबाद राखी

## प्रथम अध्याय

## धर्मवीर भारती के जीवन का रचनात्मक विकास

### 1.1 धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व का विकास

1.1.1 जन्म

1.1.2 शिक्षा

1.1.3 पारिवारिक और वैवाहिक जीवन

1.1.4 आजीविका-कर्मक्षेत्र

### 1.2 धर्मवीर भारती के जीवन का रचनात्मक विकास

1.2.1 उपन्यास

1.2.2 कहानी

1.2.3 काव्य संग्रह

1.2.4 नाटक (काव्य/ गीति नाटक)

1.2.5 एकांकी

1.2.6 निबंध

1.2.7 अनुवाद साहित्य

## प्रथम अध्याय

## धर्मवीर भारती के जीवन का रचनात्मक विकास

"साहित्य मनुष्य का ही कृतित्व है।"[1]

किसी भी रचनाकार के साहित्य संसार का अध्ययन करने से पूर्व उस रचनाकार के जीवन में निहित व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है क्योंकि वह जिन संस्कार, परिवेश-परिस्थितियों में पला बढ़ा, जिन क्षणों का अनुभव करता है। वह जाने-अनजाने उनसे प्रभावित भी होता है। फिर चाहे वह प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में हो या अप्रत्यक्ष रूप में। वह सभी तत्त्व रचनाकार की रचना में उपस्थित अवश्य होते हैं। इसलिए उनका साहित्य उनके जीवन अनुभव से सदैव जुड़ा रहता है। साथ ही रचनाकार के जीवन यात्राओं का ब्यौरा भी उनके साहित्य में झलकता है। जिससे उनका व्यक्तित्व विकसित भी होता है और उनके भीतर का साहित्यिक कलाकार भी विशिष्ट रूप में समाज के सामने उभर कर आता है। किसी भी साहित्यकार के व्यक्तित्व की उपेक्षा करके उनकी रचनाओं को पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता। क्योंकि प्रत्येक रचनाकार की अपनी कुछ मान्यताएं-अभिरुचियाँ एवं जीवन दृष्टियाँ होती हैं। स्वंय धर्मवीर भारती ने अपने काव्य 'सात गीत वर्ष' में कहा है– "समूची जीवन प्रक्रिया किसी न किसी रूप में रचना के क्षण से संबद्ध होती है।"[2]

रचनाकार अपनी रचनाओं में "पाए हुए और पाकर खोए हुए संसार को किसी एक स्तर पर रचते हैं... जो खरा काव्य है। उसकी रचना प्रक्रिया में कितने ही अप्रत्यक्ष रूप हो किंतु जीवन प्रक्रिया अनिवार्यता उलझी रहती है।"[3] इसीलिए यह पूर्ण रूप से सत्य है कि रचनाकार की वाणी में अपना चरित्र प्रस्तुत होता है।

---

1 धर्मवीर भारती ,मानव मूल्य और साहित्य, भूमिका, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पाचवां संस्करण जनवरी 2010 , नई दिल्ली

2 धर्मवीर भारती, सात गीत वर्ष, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण जनवरी 1976, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 10

3 धर्मवीर भारती, सात गीत वर्ष, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण जनवरी 1976, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 10

इसी बात को और भी स्पष्ट करते हुए हरिवंश राय बच्चन ने अपनी आत्मकथा 'नीड़ का निर्माण फिर' में कहा है– "कवि के मस्तिष्क का यही तो चमत्कार है कि वह हल कहीं भी चलाएं भूमि जुतती है, उसकी स्मृति के ही बीच वह कहीं भी छींटता है तो पौधा उगता है भावना की धरती पर।"[4]

आधुनिक साहित्यकारों में धर्मवीर भारती ने अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम से साहित्यिक कलाकारों के बीच एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपनी रचनात्मक क्षमता का परिचय दिया है। सुप्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार होने के साथ-साथ वे एक सफल कवि, नाटककार, निबंधकार, समीक्षक, चिंतक, संपादक और अनुवादक भी रहे हैं। चिंतन और संवेदनशीलता के साथ कल्पना प्रभावी समावेश धर्मवीर भारती के साहित्य का महत्वपूर्ण पक्ष रहा है। मुख्य रूप से उन्होंने अपने साहित्यिक जीवन की शुरुआत गद्य साहित्य से की थी।

सन् 1946 के आसपास आस्कर वाइल्ड की कहानियों का अनुवाद करके साहित्य के गलियारों में अपना पहला कदम रखा था। इसके उपरांत ही उन्होंने कथा लेखन का शुभारंभ किया था। भारती ने जिंदगी से अलग रह कर नहीं अपितु, जिंदगी के संघर्ष को झेलते हुए अपने तत्व ज्ञान की प्यास को तृप्त करने का प्रयत्न किया है। उन्होंने अपनी इस प्यास का परिचय देते हुए– "जानने की प्रक्रिया में जीने और जीने की प्रक्रिया में जाने वाले मिजाज को अपना रखा है।"[5] वे साहित्यिक जगत में जमीनी तौर पर जो घटित हो रहा है। उसी को रचनात्मक लहजे में लिखकर एक विधा में बांध देते हैं। इससे यह जाहिर होता है कि धर्मवीर भारती आकाशीय बात न कर, जमीनी धरातल पर यथार्थ की बात करते हैं। वे अपने परिवेश और वातावरण से भरपूर परिचित होने के उपरांत ही अपनी लेखनी में उसे शामिल करते हैं। जिससे साहित्य में व्यक्त किए गए प्रत्येक भाव प्रत्यक्ष रूप से उजागर हो सकें। वे अपने कथा साहित्य में समाज में व्याप्त परंपरा बद्धता, रूढ़िवादिता तथा वर्तमान जीवन के संकट बोध की अभिव्यक्ति भी करते हैं। वे साहित्य क्षेत्र में बनी बनाई परिपाटी या लीक से हटकर चलने वाले साहित्य को लिखते हैं

---

[4] हरिवंश राय बच्चन ,नीड का निर्माण फिर,राजपाल एंड सन्ज, चौथा संस्करण 1976 ,पृष्ठ संख्या 101,

[5] डॉक्टर चंद्रभानु सीताराम सोनवणे ,धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग, पंचशील प्रकाशन ,जयपुर पृष्ठ संख्या 14

क्योंकि वह अपने कथा-वृतांत में प्राकृतिक परिवेश और भौगोलिक सीमाओं के साथ-साथ इतिहास के आयामों, विभिन्न संस्कृतियों समाज और उनमें रहने वाले लोगों के आचार-विचार, रहन-सहन, खानपान आदि की भी सूक्ष्म अभिव्यक्ति करते चलते है। इस प्रकार धर्मवीर भारती ने समाज, राजनीति, भाषा, साहित्य आदि सभी विषयों पर स्वतंत्रता से निर्भीक चिंतन किया है। जो उस समय के अन्य साहित्यकार नहीं कर सके। उन्होंने अपने भाव बोध को विकसित करके अपने समय के परिवर्तनशील संदर्भों की मानवीय चेतना को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। इसलिए निर्मल वर्मा, धर्मवीर भारती को किसी खास ढांचे में फिट नहीं होने वाले एक ऐसे गतिमान लेखक के रूप में देखते हुए कहते हैं कि– "जिन्होंने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से साहित्य की प्रत्येक विधा को नया अप्रत्याशित मोड़ दिया कहानियाँ हो या उपन्यास या नाटक उनमें ऐसी ताजी मौलिक दृष्टि लेकर आए जिसे किसी कलाकार में देख कर अनायास उसके लिए जीनियस शब्द मन में कौंधता है।"[6]

जिस परिस्थिति व व्यक्ति विशेष ने उनके व्यक्तित्व को प्रभावित किया और जिस क्षण विशेष ने उनकी रचनात्मकता को नए मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया, भारती के जीवन एवं रचनाओं के संबंध में इन सबका क्या महत्त्व है? इसका उनके साहित्य पर क्या प्रभाव दिखाई पड़ता है? इसको समझना भी बहुत आवश्यक है।

भारती के व्यक्तित्व एवं जीवन से संबंधित, विभिन्न बातों, घटनाओं का जिक्र उनके अनेक मित्रों, आलोचकों के द्वारा उनके बारे में लिखे संस्मरणों, लेखों, पत्रों में उपलब्ध है, परंतु भारती के जीवन से संबंधित जानकारी स्वयं उनके द्वारा लिखित पत्र के रूप में उपलब्ध है। जिसे धर्मवीर भारती ने किसी शोधकर्ता के अनुरोध पर लिखा था। उनके जीवन से संबंधित पड़ावों को हम उनके ही शब्दों से जान सकते हैं। इस पत्र के संबंध में पुष्पा भारती लिखती हैं कि यह पत्र कब और किसके लिए लिखा था, बहुत कोशिशों के बाद इसकी जानकारी नहीं मिल सकी है। परंतु धर्मवीर भारती के पत्र से यह स्पष्ट है

[6] संपादक पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की साहित्य साधना, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या 96-97

कि उन्होंने किसी शोधकर्ता के आग्रह पर ही लिखा है– “चूंकि आपकी थीसिस के लिए आवश्यक है अतः संक्षेप में मैं अपने जीवन और उस पर पड़े प्रभाव की रूपरेखा लिख रहा हूँ।”[7]

आइए आगे हम प्रतिभा सम्पन्न कथाकार धर्मवीर भारती के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हैं।

**1.1.1 जन्म**

धर्मवीर भारती विलक्षण प्रतिभा के धनी व्यक्ति थे। उनका जन्म 25 दिसंबर 1926 को प्रयागराज के अतसुइया मोहल्ले में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री चिंरजीवी लाल वर्मा और माँ का नाम चंद्रदेवी है। चिरंजीवी लाल एक जमीदार परिवार में जन्मे थे,पर उन्होंने जमींदारी छोड़ दी थी और सरकारी नौकरी तथा ठेकेदारी के काम में लगे रहे जिसके करण वे कई स्थलों पर रहते थे, परंतु अंत में इलाहाबाद में स्थाई रुप से बस गए। वही डॉक्टर धर्मवीर भारती का जन्म हुआ था। धर्मवीर भारती की माँ आर्य समाजी थी। माँ के पड़ोस में रहने वाली स्त्रियाँ सनातनी विचारधारा की थी। इन सभी स्त्रियों का घर में आना-जाना था और बालक भारती पर असीम स्नेह भी था। माँ से प्राप्त संस्कारों ने सहायता दी और पड़ोसी महिलाओं के प्रभाव ने भारतीय पुराणों के चरित्रों व घटनाओं के प्रति इनके मन में एक ललक कायम कर दी। इसलिए धर्मवीर भारती के साहित्य में सनातनी पौराणिक कथाओं एवं बिंबो के प्रति एक सतत चिंतन आग्रह देखने को मिलता है। साथ ही कथा साहित्य में माँ के संस्कारवादी विचारधारा का प्रत्यक्ष प्रमाण भी देखने को मिलता है।

**1.1.2 शिक्षा**

---

[7] संपादक पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती से साक्षात्कार, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 7

धर्मवीर भारती की आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई परंतु बाद में इलाहाबाद के डी.ए.वी. हाईस्कूल में दाखिला हुआ। धर्मवीर भारती आठवीं कक्षा में पढ़ रहे थे तभी दुर्भाग्यवश उनके पिता का देहांत हो गया था। पिता की मृत्यु के बाद उन्हें आर्थिक अभाव का सामना करना पड़ा। उन भयानक दिनों में दूर के रिश्ते के मामा अभय कृष्ण चौधरी की सहायता से उच्च शिक्षा पूर्ण करने का अवसर मिला। आर्थिक अभाव और पारिवारिक दुखद परिस्थितियों में भी उच्च शिक्षा में सफलता प्राप्त की। धर्मवीर भारती की माँ आर्य समाजी थी। इसलिए पिता की मृत्यु के बाद कर्ज उतारने और गुजर बसर करने के लिए छोटी बहन को लेकर गुरुकुल में नौकरी करने चली गई। भारती जी मामा के पास रहकर आगे की पढ़ाई-लिखाई करने लगे। एक ओर वजीफों के सहारे भारती आगे बढ़ते रहे तो वहीं दूसरी ओर सन् 1942 में इंटरमीडिएट की परीक्षा पास करने के बाद उन्होंने सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी भाग लिया इसके कारण उनकी पढ़ाई का एक वर्ष छूट गया।

सन् 1945 में बी.ए. हिंदी में सबसे अधिक अंक प्राप्त करने पर इन्हें चिंतामणि घोष स्वर्ण पदक मिला। सन् 1947 में एम.ए. हिंदी में भी ये प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। कड़ी मेहनत करने के बाद सिद्ध साहित्य पर शोध प्रबंध लिखकर पी.एच.डी की उपाधि भी प्राप्त की। चंद्रकांत बांदिवेडकर कहते हैं कि– "भारती ने अपने प्राध्यापकीय जीवन के आरंभिक काल में धीरेंद्र वर्मा के कुशल निर्देशन में सिद्ध साहित्य जैसे जटिल विषय पर अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। भारती जैसा आधुनिक संवेदना संपन्न, प्रतिभावान साहित्य सृजन, शोध में रुचि रखने और विकट रास्ते पर चलकर सार्थक गरिमा के साथ शोध कार्य पूरा किया। यह अपने में एक सुखद आश्चर्य है।"[8] कॉलेज की पढ़ाई के दौरान धर्मवीर भारती कुछ साल डॉ धीरेंद्र वर्मा के संपर्क में रहे जो आर्य समाजी विचार धारा के थे। इसलिए भारती पर डॉ धीरेंद्र वर्मा का गहरा प्रभाव रहा। उन्हें तर्कशीलता और मर्यादावादी दृष्टिकोण भी उन्हीं से प्राप्त हुआ। भारती का जीवन बचपन से ही कठोर श्रम और अभाव से गुजरता रहा है। पढ़ाई-लिखाई तथा घर का खर्च चलाने के लिए उन्होंने छोटे-मोटे सभी तरह के कार्य भी किए। उनको यह कार्य करने में किसी भी तरह का कोई संकोच

[8] चंद्रकांत बांदिवेडकर, धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य अकादेमी, पहला संस्करण 2001,नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 10

जीवन में न था। भारती का जीवन सहज सरल नहीं था। सतत संघर्षों के बीच गुजरता रहा परंतु संघर्ष उन्हें तोड़ नहीं पाया। वास्तव में संघर्षों ने उन्हें तेजस्वी बनाया। उनका कहना था कि "आदमी जिंदगी का सफर तय करता है राहों की ठोकरें और मुसीबत उसके व्यक्तित्व को पुख्ता बनाती है। उसकी आत्मा को परिपक्व बनाती चलती है।"[9]

इन दिनों उनके जीवन पर टॉलस्टॉय के 'वार एण्ड पीस' का स्थायी प्रभाव पड़ा। अपने क्षेत्र को मजबूत करने के लिए अभ्युदय पत्रिका में उपसम्पादक और संगम में सह-सम्पादक के रुप में युवावस्था से ही कार्य करना शुरू कर दिया और साथ ही हिंदुस्तानी एकेडमी में भी काम किया। पत्रकारिता की आरंभिक शिक्षा मालवीय और जोशी जी से मिली। इस समय धर्मवीर भारती अपनी कहानियों का लेखन कार्य कर रहे थे। भारती पर इस समय आस्कर वाइल्ड और प्रसाद का बहुत प्रभाव था। आगे चलकर इन पर मार्क्सवाद का प्रभाव पड़ा और प्रगतिशील लेखक संघ के स्थानीय मंत्री भी बने, किंतु उनकी कट्टरता और देशद्रोही नीतियों से उनका बहुत जल्द ही मोहभंग हो गया। और अंत में वे अपनी भारतीय परंपरा की संस्कृतियों की ओर लौट आए थे और यहीं से उनके जीवन में भारतीय संस्कृति के रंग घुलने लगे थे।

### 1.1.3 पारिवारिक और वैवाहिक जीवन

धर्मवीर भारती ने जीवन भर अंतर विरोधों का सामना किया है परंतु व्यक्तिगत एवं पारिवारिक स्तर पर उन्हें कुछ अधिक ही अंतर्विरोध का सामना करना पड़ा। सन् 1955 में एक पंजाबी शरणार्थी स्त्री से धर्मवीर भारती का विवाह हुआ परंतु संस्कारों में अंतर के कारण एक ऐसी विचित्र घटना शुरू हुई जिसमें सबसे पहले घर की फिर दाम्पत्य जीवन की नींव ही हिला कर रख दी। इसके कारण उनका जीवन पूरी तरह से अस्त-व्यस्त हो गया था। इसका वर्णन हम कुछ इस प्रकार प्रस्तुत कर रहे है– "विवाह के उपरांत

---

9 डॉ सरिता शुक्ला, धर्मवीर भारती: युग चेतना और अभिव्यक्ति, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या 15

घटी घटना ने उनका मोहल्ला छुड़वा दिया। उस समय मन पर पत्थर रखकर नव विवाहित दाम्पत्य संबंध से समझौता करने के कारण मोहल्ला छोड़ तो दिया। लेकिन कहीं मन को यह ऐसा एहसास होने लगा था कि यह संबंध सूत्रों के टूटने की शुरुआत है। मोहल्ले से टूटकर किसी से जुड़ना संभव नहीं। और सारी कोशिश के बावजूद वह आशंका सच निकली। जिस गृहस्थ जीवन के कारण मोहल्ला छूटा था, दो-तीन साल लड़खड़ाने के बाद वह गृहस्थ जीवन भी टूट गया।"[10] धर्मवीर भारती का पहली पत्नी से विवाह विच्छेद भी हुआ। इस संबंध से उनकी एक बेटी भी हुई थी। इस विवाह विच्छेद से भारती के मित्रों में काफी हलचल पैदा हुई इस दौरान उन पर तीखे व्यंग्य भी कसे गए परंतु उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन को अपने तक ही सीमित रखा। उन्होंने व्यक्तिगत दुख अकेले ही सहन किया पर इसे कभी सार्वजनिक रूप नहीं दिया। पहले विवाह से हुई बेटी को उन्होंने बहुत प्रेम से पाला। इसमें उनकी दूसरी पत्नी पुष्पा शर्मा का महत्वपूर्ण योगदान रहा। धर्मवीर भारती सन् 1960 में धर्मयुग पत्रिका के मुख्य संपादक बनकर मुंबई आए और पुष्पा शर्मा से उनका विवाह संपन्न हुआ। पुष्पा भारती के जीवन में आते ही शुभ संकेत भी साथ आने लगे थे, क्योंकि उनके आने से भारती का जीवन विपन्नता से संपन्नता की ओर बढ़ने लगा था।

पुष्पा भारती से एक बेटा और बेटी पैदा हुई। पुष्पा भारती से विवाह करना धर्मवीर भारती के लिए बहुत ही सुखद संतोष और शांति प्रदान करने वाली महत्वपूर्ण घटना उनके जीवन में रही। वह अपना जीवन पत्नी पुष्पा भारती और तीन बच्चे के संग खुशहाली के साथ जीवन यापन कर रहे थे। उनके आने के उपरांत भारती ने देश-विदेश की यात्रा भी की। वे इंग्लैंड, पश्चिमी जर्मनी, फ्रांस, इटली, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, मॉरिशस, चीन आदि अनेक देशों में गये। एक सांस्कृतिक दूत के रूप में उन देशों के साथ भारत के सांस्कृतिक संबंधों को और भी अधिक मजबूत करने में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया जो अविस्मरणीय है।

[10] प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण ,कहानियां सांस की कलम से ,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ,तीसरा संस्करण2014 ,नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 24

### 1.1.4 आजीविका– कर्मक्षेत्र

शिक्षा प्राप्ति के लिए लगातार कठोर परिश्रम करने के कारण धर्मवीर भारती में लिखने की योग्यता का विकास हो रहा था। शिक्षा का अर्थ खर्च जुटाने के लिए कुछ पत्रिकाओं के संपादन विभाग में सहायक के रूप में काम करना पड़ा। इस सिलसिले में उन्होंने अभ्युदय पत्रिका में उपसम्पादक और संगम में सहसम्पादक के रूप में काम किया और साथ ही हिंदुस्तानी एकेडमी से जुड़े रहे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापक का पद प्राप्त हो गया जिस पद पर यह सन् 1960 तक बने रहें। इसके उपरांत सन् 1960 में हिंदी की सुप्रसिद्ध साप्ताहिक पत्रिका धर्मयुग के मुख्य संपादक बनकर मुंबई में स्थाई रूप से रहने चले गए।

सन् 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। इसी बीच अकाल विषयक रचना का संकलन महादेवी के बंग दर्शन ने भारती के किशोर मन को गहराई से प्रभावित किया इससे प्रेरित होकर उन्होंने कथा साहित्य के अंतर्गत अनेक कहानियाँ लिखी जो ‘मुर्दों का गाँव’ नामक कहानी संग्रह के रूप में प्रकाशित हुई और किशोरावस्था में भारती जी सुभाष चंद्र बोस से अधिक प्रभावित थे। “राष्ट्रीयता की प्रखर भावना के कारण भारती ने हाईस्कूल के समय से ही अपने नाम के साथ ‘भारतीय’ उपनाम अपना लिया था उपनाम अंतिम अक्षर 'य' बी.ए. तक पहुंचते-पहुंचते लुप्त हो गया और अंत में धर्मवीर भारतीय से वह धर्मवीर भारती बन गए थे।”[11]

धर्मवीर भारती को तीखे जीवन संघर्ष से गुजरना पड़ा और अपने जीवन का मार्ग खुद बनाना पड़ा उनके जीवन का विशिष्ट महत्वपूर्ण पहलू प्रेम रहा है। प्रेम को वे मनुष्य के जीवन की शाश्वत भूख के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। एक जगह वह स्वयं लिखते हैं– “मैं अक्सर किसी निर्जन गुलाबी द्वीप, शिलाओं से बंधी किसी बंदिनी उदासिन जलपरी की कल्पना किया करता था। जिसे वह तलवारों से जंजीरों काटकर

[11] कादम्बिनी मासिक पत्रिका, जून 1973,पृष्ठ संख्या 70

आजाद कर देगा फिर फैली-फैली मखमली बालू पर दोनों रंगबिरंगी सिपिओं और मूंगे-मोतीयों से खेलेंगे जिंदगी भर, साथ-साथ रहेंगे जिंदगी भर।"[12]

धर्मवीर भारती को दो चीजों से बहुत लगाव था पढ़ाई और घुमक्कड़ी। उनको दो चीजों की बेहद प्यास है एक तो नई-नई किताबों की और दूसरी अज्ञात संकरी दिशाओं को जाती हुई लंबी निर्जन छाया धार सड़कों की।… सुविधा मिलती तो वह जिंदगी भर धरती की परिक्रमा करते रहते। उन्होंने अपने जीवन में अनगिनत दिशाओं में यात्रा की। सन् 1961 में वे कॉमनवेल्थ रिलेशन कमेटी के आमंत्रण पर पहली बार इंग्लैंड और यूरोप की यात्रा की। सन् 1962 में पश्चिमी जर्मनी की सरकार पर वहाँ की यात्रा भी की। सन् 1964 में उन्होंने मॉरिशस की जनता की समस्या का अध्यन अध्यापन वहाँ जाकर ही किया था। इसके बाद सन् 1966 में भारतीय दूतावास के अतिथि गृह में रहकर इंडोनेशिया और थाईलैंड की यात्राएं की। तो कभी बांग्लादेश की गुप्त यात्रा की और दिसंबर में भारतीय थल सेना के साथ के युद्ध के वास्तविक मोर्चे के रोमांचक अनुभव भी उन्होंने प्राप्त किए।

भारती को घुमकक्ड़ी से कहीं अधिक लगाव पढ़ाई से था। इसके पीछे उनकी किसी अनजान प्रक्रिया में विद्यमान ज्ञान को समझने की प्यास छिपी हुई थी। वह स्वयं कहते है कि "जानने की प्रक्रिया में जीने और जीने की प्रक्रिया में जाने वाला मिजाज जिन लोगों का है, उनमें मैं अपने को पाता हूँ।"[13]

उन्होंने सिद्ध साहित्य पर अपना शोध कार्य किया है। जिसके कारण इन पर दर्शन का काफी प्रभाव पड़ा। भागवत की वैष्णवता के संस्कार भी उनके मन पर अधिक पड़े इसलिए वह अपनी प्रेमिका को जीवन की भागवत कहते थे। धर्मवीर भारती स्वभाव से संकोच और कल्पना प्रिय व्यक्ति थे। उन्होंने गद्य और पद्य की सभी विधाओं को अपनी अभिव्यक्तियों का सफल माध्यम बनाया है। साहित्य की अन्य विधाओं के अलावा संस्मरण, रिपोर्ताज एवं इंटरव्यू जैसी विधा में भी अपनी कलम का जादू दिखाया।

[12] अज्ञेय, दूसरा तार सप्तक, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 176

[13] डॉक्टर चंद्रभानु सीताराम सोनवणे, धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग, पंचशील प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या 14

साहित्य की अमूल्य सेवा करने के उपलक्ष्य में उन्हें सन् 1994 में के.के.बिडला फाउंडेशन की ओर से व्यास सम्मान से सम्मानित भी किया गया।

धर्मवीर भारती प्रेम की अभिव्यक्ति को साहित्य का महत्वपूर्ण पक्ष मानते थे। उनके लिए प्रेम की दिशा दृष्टि के प्रथम दिवस से कविता की अनिवार्य दिशा रही है और सृष्टि के अंतिम दिशा तक रहेगी। रूमानियत को उन्होंने नए रुप में कविता में ढाला है। 'ठंडा लोहा' के आरंभ की कुछ कविताओं 'इन फिरोजी होंठों पर बर्बाद मेरी जिंदगी', 'गुनाह का गीत', 'मुग्धा' आदि में उन्होंने अपने मन की समस्त यौवन-सुलभ भावनाओं और मन की प्यास को बहुत साहस के साथ सहज सरल रूप में चित्रित करने का प्रयास किया। परन्तु आगे चलकर युग-परिवेश के कारण रोमांटिक प्रवृति का स्थान कुंठा, घुटन, अकेलापन, अनास्था, यथार्थ आदि युग की प्रमुख प्रवृत्तियों ने ले लिया। कथाकार ने उन्हें स्वयं स्वीकराते हुए कहा है– "किशोरावस्था के प्रणय, रूपाशक्ति और आकुल निराशा से एक पावन, आत्म समर्पणमयी वैष्णव भावना और उसके माध्यम से अपने से बाहर की व्यापक सच्चाई को हृदयंगम करते हुए संकीर्णताओं और कट्टरता से ऊपर एक जनवादी भावभूमि की योजना मेरी इस यात्रा के प्रमुख मोड़ हैं।"[14] इसका सबसे अच्छा उदाहरण अंधायुग, बंद गली का आखिरी मकान, गुलकी बन्नो, सावित्री नंबर दो, मेरे लिए यह नहीं और सूरज का सातवाँ घोड़ा हैं। ये कृतियाँ युग परिवेश के यथार्थ को पूर्णता से प्रस्तुत करती है। और साहित्य में जीवन के विविध अनुभवों की अभिव्यक्ति करना उनका मुख्य लक्ष्य रहा है।

### 1.2. धर्मवीर भारती का रचनात्मक विकास

साहित्यकार का आंतरिक सौंदर्य ही उसके व्यक्तित्व और उसकी लेखनी में झलकता है। क्योंकि वह दूसरे व्यक्तियों से अलग होता है। उसके भीतर समाज को लेकर एक अलग ही दृष्टिकोण होता है। जिसे

[14] धर्मवीर भारती, प्रगतिवाद: एक समीक्षा, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयागराज,पृष्ठ संख्या 195,

वह अपनी रचनाओं के माध्यम से उजागर करने का प्रयास करता है। धर्मवीर भारती ऐसे कथाकार हैं, जिन्होंने अपने युग के साहित्य को पर्याप्त रुप से प्रभावित किया और वर्तमान में भी युग परिवेश को गहरे स्तर पर अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। वे अपने युग के ऐसे कथाकार हैं जिनमें सभी कालों की स्पष्ट अभिव्यक्ति पाई जाती है। हिन्दी साहित्य जगत में धर्मवीर भारती का अभ्युदय उत्तर छायावाद काल में हुआ। अध्ययन के समय से ही उनकी रचनाएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने लगी थी। सन् 1951 में अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरे सप्तक' में इन्हें भी शामिल किया गया, जब इनकी आयु केवल 25 वर्ष की थी। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी कलम चलाई है।

**उनकी कृतियों की सूची निम्न प्रकार है:-**

**उपन्यास**

(क) गुनाहों का देवता, 1949

(ख) सूरज का सातवाँ घोड़ा, 1952

(ग) ग्यारह सपनों का देश, 1960

(प्रारंभ व समापन)

**कहानी संकलन**

(क) मुर्दों का गाँव, 1946

(ख) स्वर्ग और पृथ्वी, 1949

(ग) चाँद और टूटे हुए लोग, 1955

(घ) बंद गली का आखिरी मकान, 1969

(ङ) सांस की कलम से, 2000

**काव्य संग्रह**

(क) ठंडा लोहा, 1952

(ख) सात गीत वर्ष, 1959

(ग) कनुप्रिया, 1959

(घ) सपना अभी भी, 1993

**नाटक**

(क) अंधायुग (काव्य/ गीति नाटक), 1954

**एकांकी** (संकलन)

(क) नदी प्यासी थी ,1954

**निबंध**

(क) ठेले पर हिमालय ,1958

(ख) पश्यन्ती, 1969

(ग) कहनी-अनकहनी, 1970

(घ) कुछ चेहरे कुछ चिंतन, 1995

(ड) शब्दिता, 1997

**शोध प्रबंध**

(क) सिद्ध साहित्य, 1968

**आलोचना**

(क) प्रगतिवाद: एक समीक्षा, 1949

(ख) मानव मूल्य और साहित्य, 1960

**रिपोर्ताज**

(क) युद्ध यात्रा,1972

(ख) मुक्तक्षेत्रेः युद्धक्षेत्रे, 1973

**अनुवाद**

(क) आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ ,1946

(ख) देशांतर (इक्कीस देशों की आधुनिक कविताएँ), 1960

**पत्र संकलन**

(क) अक्षर अक्षर यज्ञ, 1999

**संपादन (पत्रिका)**

(क) संगम-सहायक संपादक के रुप में कार्य

(ख) निकष-सहायक संपादक के रुप में कार्य

(ग) आलोचना-सहायक संपादक के रुप में कार्य

(घ) धर्मयुग-प्रधान संपादक के रुप में कार्य

(ङ) हिन्दी साहित्य कोश (ग्रन्थ)- सहायक संपादक के रुप में कार्य

(च) अर्पित मेरी भावना (भगवती चरण अभिनंदन ग्रन्थ) प्रधान संपादक में कार्य

(झ) अभ्युदय -उपसम्पादक के रुप में कार्य।

**साक्षात्कार**

(क) धर्मवीर भारती से साक्षात्कार, 1999

**उनकी प्रमुख कृतियों की चर्चा नीचे की जा रही है।**

**1.2.1 उपन्यास**

'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' धर्मवीर भारती के दो सुप्रसिद्ध उपन्यास हैं। जो वर्तमान समय में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है।

**गुनाहों का देवता (1949)–** धर्मवीर भारती का उपन्यास 'गुनाहों का देवता' सन् 1949 में प्रकाशित हुआ था। यह उपन्यास केवल प्रेम संबंधी आदर्शवादी अनुभूतियों की सशक्त और सहज अभिव्यक्ति ही नहीं करता है अपितु आत्म और देह का प्रेम, वासना के यथार्थ धरातल और आदर्श का वर्तमान जीवन मूल्यों के अंतर्द्वंद्व को भी व्यक्त करने का प्रयास करता है। यह एक चरित्र प्रधान उपन्यास है। जिसमें लेखक ने मनोवैज्ञानिक ढंग से पात्रों का चरित्र-चित्रण किया है। पात्रों के सजीव चरित्र-चित्रण से ऐसा लगता है मानो उपन्यासकार ने स्वयं देखे-परखे और भोगे हुए जीवन को प्रतिपादित कर दिया हो। इसलिए इस उपन्यास के पात्र जीते-जागते मानवों के प्रतिरूप लगते हैं। क्योंकि यह उपन्यास अपने भीतर इतनी गहराई लिए हुए है कि हम अपने जीवन और यौवन की बहुत सारी समस्याओं को सुलाझा सकते है। साथ ही शिक्षित मध्यवर्गीय समाज का जीता जागता चित्रण भी उक्त उपन्यास में देख सकते हैं।

'गुनाहों का देवता' उपन्यास का कथानक तीन खंडों में विभाजित है, और अंत में एक छोटा-सा उपसंहार है। यह उपन्यास मुख्यतःएक पुरूष और तीन स्त्रियों से संबंधित है। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से यह उपन्यास विशेष महत्वपूर्ण है। उपन्यास का प्रमुख पात्र चंदर कुमार कपूर है। चंदर अपनी सौतेली माँ से झगड़कर

पढ़ने के लिए प्रयाग भाग आया था। वह डॉ. शुक्ला के मार्गदर्शन में शोधकार्य कर रहा था। डॉ. शुक्ला उसके लिए संरक्षक और पिता से भी बढ़कर थे। उनके घर में चंदर का अधिकार बड़े बेटे के समान था। डॉ. शुक्ला की एकमात्र लड़की सुधा के प्रति चंदर के मन में आकर्षण था। सुधा चंदर के लिए आत्मा के समान पवित्र थी। चंदर उसे अपने व्यक्तित्व से भी अधिक चाहने लगा था। उसके लिए सुधा की पलक का एक आँसू भी देवता की तरह था और सुधा का फूल जैसा चेहरा उसे पागल बना देता था।

प्रेम संबंधी आदर्शवादी धारणा के कारण चंदर ने अपनी प्रेयसी सुधा के शरीर से अपने को दूर रखने का प्रयास किया और एक दिन चंदर ने अपने हाथों से सुधा के जीवन को दूसरी पगडंडी पर मोड़ दिया। चंदर ने खुद अपनी प्रयेसी सुधा को कैलाश से विवाह करने के लिए विवश कर दिया। चंदर और सुधा दोनों अपने पारस्परिक आकर्षण को 'प्रेम' के प्रचलित शब्द में सीमित नहीं करना चाहते थे। इसलिए वे दोनों अपने को शारीरिक आकर्षण से दूर रखने का प्रयत्न करते हैं।

शरीर और आत्मा को अलग-अलग रखने के चक्कर में फंसकर दोनों टूटकर बिखर जाते हैं। वह यथार्थ जिंदगी को समझने में धोखा खा जाते हैं। इसके मन में सुधा के शरीर के लिए आकर्षण अनजाने में विद्यमान है। सुधा के विवाह करने के बाद चंदर ने अनुभव किया कि सुधा उसके लिए सांसों से भी अधिक आवश्यक थी। चंदर के आदर्शवादी प्रेम की प्रतिक्रिया काम वासना की प्यास के रूप में प्रकट हुई। वह अभिशप्त 'पम्मी' के पास एक भ्रष्ट देवता के रूप में पहुँच गया। आध्यात्मिक प्रेम की प्यास माँसल बंधन में आकर बुझ गई। पवित्र प्रेम की व्याख्या का अनुसरण करने के कारण 'सुधा' उससे छिन गई और माँसल मात्र के गुनाह के कारण वह पम्मी से दूर बना रहा।

बिनती के प्रति चंदर का आकर्षण उसका सुधा से संबंधित होना है। सुधा के ससुराल चले जाने के बाद चंदर रोज शाम बिनती के यहाँ जाता और बिनती के माध्यम से सुधा में डूबकर चला आता था। सुधा की मृत्यु के बाद चंदर सुधा की राख से बिनती की माँग भरकर माँग को चूम लेता है। सुधा की राख को बिनती की माँग में सिंदूर के रूप में प्रयोग करके चंदर उसके और सुधा के पवित्र संबंध का परिचय देता है।

'गुनाहों का देवता' उपन्यास के बारे में पुष्पा वास्कर अपनी पुस्तक में लिखते हैं कि– "वास्तव में प्रेम वासना और रोमांटिक भावना को कथा बनाकर लिखी गई रचना विख्यात अवश्य होती है किंतु सफल नहीं।परन्तु गुनाहों का देवता सफल और विख्यात, दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।"[15]

उपन्यास की भाषा बोलचाल की प्रभावी भाषा है। उर्दू शब्दों का प्रयोग कुछ अधिक हुआ है। अलंकार की दृष्टि से उपन्यास की शैली सरस एवं सुंदर है। उपमाओं एवं उत्प्रेक्षाओं का सुंदर प्रयोग उपन्यास में हुआ है।

**सूरज का सातवाँ घोड़ा (1952)–** 'गुनाहों का देवता' उपन्यास के बाद सन् 1952 में धर्मवीर भारती का दूसरा उपन्यास 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' प्रकाशित हुआ। विषय और शिल्प दोनों दृष्टियों से यह उपन्यास 'गुनाहों का देवता' उपन्यास से भिन्न है। इसमें आदर्शवादी प्रेम का संगीत सुनने वाले 'चंदर' और 'सुधा' जैसे पात्र नहीं जो सामाजिकता के प्रति पूरी तरह से बेखबर हैं। इस उपन्यास में व्यापक सामाजिक सत्य को लेखक ने लघु धरातल पर अंकित करने का प्रयास किया है। मध्यवर्गीय समाज का चित्रण करने के साथ साथ प्रगतिवादी और माक्सर्वादी भारतीय विचारधाराओं का उल्लेख करना इसमें लेखक का लक्ष्य रहा है। इसके लिए उन्हें आकाश के सपनों में विहार करने की प्रेरणा देने वाली स्वप्निल प्रेम की कहानी का परित्याग करके यथार्थ की स्वप्न भंग करने वाली ठोस धरती पर उतरना पड़ा है। इस धरती पर उतरने के बाद उन्होंने देखा था रोमांटिक भावुकता और सांप्रदायिक मर्यादा के आवरण के नीचे हमारी सामाजिक जिंदगी में सब तरफ गंदगी और कीचड़ फैला हुआ है। "इस गंदगी और कीचड़ के वीभत्स और घृणित पहलुओं का चित्रण करने के लिए भारती ने मध्यवर्ग के जीवन को माध्यम बनाया है, क्योंकि वे इस जीवन से संबंधित होने के कारण अच्छी तरह से परिचित हैं।"[16]

---

[15] धर्मवीर भारती: व्यक्ति और साहित्य-डां पुष्पा वाँ स्कर, अलका प्रकाशन, पृष्ठ संख्या 128

[16] डॉक्टर चंद्रभानु सीताराम सोनवणे, धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग, पंचशील प्रकाशन जयपुर ,पृष्ठ संख्या 97

मध्यवर्गीय जीवन के विविध यथार्थ पहलुओं को चित्रित करने के लिए धर्मवीर भारती ने प्रेम कहानियों का सहारा लिया है। जिसमें यथार्थ सामाजिक जीवन को अभिव्यक्त किया गया है। इसमें सुधा जैसे पात्र के बदले 'लीली' जैसे पात्र हैं, जिसके लिए प्रेम आत्मा का संगीत नहीं है। मध्यवर्ग के युवक-युवतियों में प्रेम को सार्थकता प्रदान करने लिए साहस नहीं है। यह प्रेम आर्थिक विवशता से परिचालित है। ये कहानियाँ वास्तव में प्रेम नहीं वरन् उस जिंदगी का चित्रण करती हैं, जिसे आज का मध्यवर्ग और निम्नमध्यवर्ग आज भी जी रहा है या जीने को बाध्य है।

जमुना और तन्ना जैसे पात्रों के माध्यम से लेखक ने समाज में विकृत अर्थव्यवस्था आदि के कारण मध्यवर्ग के युवक-युवतियों के काम-जीवन की विकृतियों का चित्रण किया है। तीन स्त्री पात्रों के माध्यम से इन विकृतियों का अवलोकन किया गया है। जमुना लगभग नब्बे प्रतिशत मध्यवर्ग की लड़कियों का प्रतिनिधित्व करती है। जमुना, तन्ना से प्रेम करती है। उसके पिता एक मामूली क्लर्क होने के कारण शादी में दहेज नहीं दे सकते इसलिए तन्ना से उसकी शादी नहीं हो पाई है। उसकी शादी एक तिहाजु जमींदार के साथ हुई। जमींदार बूढ़ा था इसलिए रामधन तांगे वाले को उसे संभाल लेना पड़ा। जमुना के पतन का कारण डरपोक तन्ना है, जो उसे साहस नहीं दे सका।

मध्यवर्ग की भावुक लड़की 'लीली', देवदास और स्कंदगुप्त पढ़कर प्रेम सीख जाती है। वह समझती है कि प्रेम में प्रेमी के लिए कभी अधिकार की भावना नहीं होती। लीली का प्रेमी माणिक अपनी प्रेमिका से कोई मोह नहीं रखता है। इन स्त्री पात्र के अलावा तीसरा महत्वपूर्ण स्त्री पात्र सत्ती है जो निम्नमध्यवर्ग की है। गरीब होते हुए भी सुंदर है इसीलिए वह अपने अभिभावक की जहरीली निगाह का शिकार बनती है।

जमुना, लीली और सत्ती के माध्यम से इस उपन्यास में जिस समाज का चित्रण हुआ है। वह बेहद गंदा, और अप्रीतिकर है। लेकिन इसमें जीवन के प्रति आस्था है। "जीवन के प्रति अडिग आस्था ही 'सूरज

का सातवाँ घोड़ा' है। जो हमारी पलकों में भविष्य के सपने और वर्तमान के नवीन आकलन भेजता है। ताकि वह रास्ता बना सके जिस पर होकर भविष्य का घोड़ा आएगा।"[17]

निष्कर्षवादी कथाओं के रूप में इस उपन्यास की कहानियों का व्यंग्यमय निष्कर्ष आकर्षक है। उपन्यासकार अपने उद्देश्य, विकृत सामाजिक व्यवस्था को अंकित करने में पूर्णतः सफल हुआ है। उपन्यास में बोलचाल की भाषा के अनुरूप मुहावरों और कहावतों का प्रयोग हुआ है और कहीं-कहीं पर उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी हुआ है। उपन्यास में वर्णित हास्य और व्यंग्य हमें जिंदगी को बदलने की प्रेरणा देते हैं।

### 1.2.2 कहानी

धर्मवीर भारती हिन्दी के जाने माने कहानीकार हैं। 'गुलकी बन्नो', 'बंद गली का आखिरी मकान' आदि कहानियों ने उन्हें श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में प्रतिष्ठित किया है। अभी तक उनके चार कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं– मुर्दों का गाँव, स्वर्ग और पृथ्वी, बंद गली का आखिरी मकान और चाँद और टूटे हुए लोग। इन कहानी संग्रहों की समस्त कहानियों का संकलन 'साँस की कलम से' कहानी संग्रह में पुष्पा भारती के संपादन में हुआ है। इसमें कुल 36 कहानियाँ संकलित है।

कहानी संकलन में 'चाँद और टूटे हुए लोग','भूखा ईश्वर' और 'कलंकित उपासना' तीन खंडों में विभक्त है। प्रथम खंड की कहानियाँ किसी अन्य संकलन में प्रकाशित नहीं हुई थी। द्वितीय खंड की कहानियाँ 'मुर्दों का गाँव' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई थी। तृतीय खंड की कहानियाँ पहले एक संकलन के रूप में छपी थीं।

धर्मवीर भारती की पहली कहानी 'तारा और किरण' है, जो एक रूपक कथा है। इसका विषय प्रेम है। 'चाँद और टूटे हुए लोग' की आधी से अधिक कहानियाँ प्रेम से संबंधित हैं। लेखक का रोमांटिक प्रेम

[17] धर्मवीर भारती सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन उनतालीसवां पृष्ठ संख्या 68

के साथ सामाजिक विषयक दृष्टिकोण इन कहानियों में व्यक्त हुआ है। 'तारा और किरण' कहानी में प्रेम के स्वरूप का विश्लेषण करते हुए यौवन पर आश्रित रहने वाले प्रेम को नश्वर कहा गया है। प्रेम अमर होता है। प्रेम में आत्मदान होता है। प्रेम में नारी पूजा की तरह पवित्र होती है। 'पूजा' कहानी का नायक नक्षत्र कहता है– 'तुम्हारा स्नेह मेरे लिए केवल प्रतिस्नेह की ही नहीं बल्कि पूजा की वस्तु रहा है।' 'चाँद और टूटे हुए लोग' के प्रथम खंड की कहानियों में एकान्तिक समाज-विरोधी प्रेम के साथ-साथ, काम संबंधों और मानव संबंधों का चित्रण भी हुआ है।

सन् 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' ने धर्मवीर भारती के किशोर मन को आंदोलित कर दिया था। सन् 1943 के बंगाल के अकाल के कारण उनका मन पीड़ा से कराह उठा, जिससे प्रेरित होकर उन्होंने अकाल से संबंधित अनेक कहानियाँ लिखी थीं। यही कहानियाँ बाद में 'चाँद और टूटे हुए लोग' के द्वितीय खंड में प्रकाशित हुई। इन कहानियों में अकाल से संबंधित दर्दनाक घटनाओं के वर्णन के साथ-साथ शासन और धर्म-व्यवस्थाओं पर कठोर व्यंग्य किया गया है। भूख से बेहाल होकर कुछ भी खा लेते है और बाद में बीमार पड़ने पर इन्हें सरकारी अस्पताल में दाखिल नहीं किया जाता क्योंकि उनके मर जाने से सरकार की बदनामी हो जाएगी। इन कहानियों में लेखक ने समाज के शोषक सेठों पर गहरा व्यंग्य किया है। एक ओर भूखे लोग दम तोड़ रहे हैं और दूसरी ओर सेठों के बच्चों को हॉर्लिक्स बनाकर पिलाया जाता है। दुकानदार अपने फायदे के लिए चार आने सेर से खरीदे हुए चावल को दो रूपये सेर के भाव से बेच रहे हैं। धर्म-व्यवस्था पर भी इन कहानियों में गहरा व्यंग्य किया गया है। अकाल पीड़ितों को सहायता पहुँचाने वाले लोग भी इस कार्य में धर्म का भेदभाव भुला नहीं पाते हैं।

अकाल संबंधी इन कहानियों को छोड़कर शेष कहानियों में संबंधों को अभिव्यक्ति मिली है। 'नारी और निर्वाण' में मातृत्व को निर्वाण से श्रेष्ठ कहा गया है। 'कुलटा' कहानी में मातृत्व की पीड़ा व्यक्त हुई है। 'भूखा ईश्वर' में माता का वात्सल्य, ही विद्रोह का केंद्र बिंदु बन गया है। 'हरिनाकुस और उसका बेटा' कहानी का विषय देशभक्ति है। 'अगला अवतार' कहानी में ढोंगबाजी पर व्यंग्य किया गया है। धुआँ

कहानी में लोगों के बर्बर स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। इस तरह उक्त संकलन की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और आदर्श का मिला जुला रूप देखने को मिलता है।

**बंद गली का आखिरी मकान (1969)–** धर्मवीर भारती का अंतिम कहानी संकलन 'बंद गली का आखिरी मकान' है। इस संकलन में चार कहानियाँ संकलित की गई हैं। पिछले संकलनों की कहानियों से ये कहानियाँ कला और शिल्प दोनों दृष्टियों से अधिक विकसित दिखाई पड़ती हैं। और इनके सुप्रसिद्ध होने का कारण भी यही है।

'गुलकी बन्नों', 'बंद गली का आखिरी मकान' कहानी संकलन की पहली कहानी है। गुलकी का चरित्र इस कहानी का मुख्य विषय है। यह एक यथार्थवादी कहानी है। गुलकी अपने पिता की अकेली संतान है। उसका पति कसाई जैसा है। जब उसको मरा हुआ बच्चा पैदा होता है, तो उसका पति उसे सीढ़ी पर से ढकेल देता है। जिसके परिणामस्वरूप गुलकी जीवन भर के लिए कुबड़ी हो जाती है। इसके बाद उसके पति ने एक दूसरी औरत रख ली। गुलकी अपने पति के इन कामों के लिए भी अपने को दोषी मानती है, पति को नहीं। गुलकी पति को परमेश्वर मानती है और उसके प्रति समर्पित होने की भावना रखती है। जो इसके आदर्श प्रेम को स्पष्ट करता है। पति के द्वारा घर से निकाले जाने के बाद गुलकी अपने मायके लौट आती है और जिवाकं यापन के लिए एक दुकान खोलती है। अपने खेलने के चबूतरे पर गुलकी की दुकान लगते देख मुहल्ले के बच्चों को गुस्सा आता है और इसलिए वे कभी दुकान पर धूल फेंकते हैं तो कभी मिलकर उसे पीटते हैं, लेकिन यही बच्चे गुलकी की विदाई से गुमसुम होकर रोते भी है। गुलकी के निरीह चरित्र को लेखक ने यथार्थवादी भावना के स्पर्श के साथ कहानी में उपस्थित किया है। कहानी में यथार्थता पैदा करने के लिए लेखक ने स्थानीय बोली का प्रयोग किया है। जिसके कारण कहानी में स्वाभाविकता आई है और वातावरण को संजीवता मिली है। इसी कहानी में स्त्री का त्याग की मूरत और परंपरागत स्वरुप भी देखने को मिलता है।

‘बंद गली का आखिरी मकान’ कहानी संकलन की दूसरी कहानी ‘सावित्री नंबर दो’ है। इस कहानी में सती सावित्री की तुलना में आधुनिक सावित्री का विश्लेषण किया गया है। नंबर दो की सावित्री न तो पवित्र है, न निष्ठामयी, जो अपने पति के लिए मृत्यु को जीत सके। इसके विपरीत वह स्वयं अपनी मृत्यु की प्रतीक्षा करती है और उससे संबंधित सभी लोग उसकी मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

विवाह के बाद सावित्री की सास ने आशीर्वाद देते हुए कहा था– जैसा नाम वैसी बनो बहू। सावित्री ने वैसा बनने की कोशिश तो की थी पर परिस्थितियों के कारण अपने पति की मौत तक की कामना करने लगी। जब सावित्री एक असाध्य रोग से ग्रसित हो जाती है तो परिस्थिति में भी परिवर्तन आने लगता है। ससुराल वाले (पति को छोड़कर) उसका साथ छोड़ देते हैं। सावित्री के मरने की प्रतीक्षा करने से पहले ही ससुराल वाले अपने बेटे के लिए दूसरी लड़कियों के फोटो मंगवाना शुरू कर देते हैं। सावित्री अपने मायके चली आती है। दिन रात सारे लोग उसकी परिचर्चा करने लगते हैं। सावित्री का मन आत्मविश्वास, असंतोष और घुटन  से भर जाता है। लेकिन यह आत्मविश्वास जल्द ही तितर बितर हो जाता है उसे जब अपनी छोटी बहन के साथ पति के संबंध के बारे में जब पता चलता है तो वह पूरी तरह से टूट जाती है। इसलिए सावित्री की बीमारी पति को उससे दूर ले जाती है और ‘राजाराम’ के निकट खींच लाती है। जो दो वर्षों से उससे संबंधित है। इस कहानी में राजाराम का प्रसंग कुछ रोमांटिक है। राजाराम की याद आज भी उसे ताजगी से भर देती है। अपने से कई साल बड़ी रोगिणी सावित्री के प्रति राजाराम के लगाव में स्पर्श मात्र से तृप्ति की प्रवृत्ति मौजूद है। राजाराम के लगाव के प्रसंग में सावित्री के लिए बीमारी ‘एक जड़ाउ कवच’ की तरह बन गई थी। राजाराम के आने के कारण उसका जीवन बोझ बन गया।

मृत्यु की प्रतीक्षा अब उसकी नियति है। ‘सावित्री नंबर दो’ कहानी में लंबी असाध्य बीमारी में घुलते हुए व्यक्तित्व की मानसिकता को उपस्थित किया गया है। सावित्री छह साल से मृत्यु भय से ग्रस्त है। वह धीरे-धीरे मरते हुए मौत को जी रही है। बरसों से पीड़ित इस बीमारी के कारण वह एक ओर जिंदगी से वंचित है और दूसरी ओर मौत से अस्वीकृत। उसकी स्थिति उस चबेने की तरह है, जो आधा मौत के

मुँह में है और आधा उसकी गोद में। पति का प्रेम धीरे-धीरे मरता जा रहा है। पति सोचता है, जो मरने वाली है, उसके लिए दिल क्यों दुखाया जाए। सिर्फ पति ही नहीं, उसकी माँ भी उसकी मौत की प्रतीक्षा कर रही है। माँ सोचती है सावित्री का पति उसकी छोटी बहन 'सीलो' को अपना ले तो दहेज़ से छुटकारा मिल जाएगा।

उक्त कहानी आत्म-कथात्मक शैली में कही गई है। कहानी का देशकाल अत्यंत सीमित है। धर्मवीर भारती के साहित्य में गंध संवेदना की जो सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है। यह कहानी उसका अच्छा उदाहरण है। इस कहानी में मौत की महक का उल्लेख इस प्रकार हुआ है– 'कमरे भर में मोगरे की तेज महक है। मगर इन सब में भी मौत की महक दबती नहीं।'

'बंद गली का आखिरी मकान' कहानी संकलन की तीसरी कहानी है। 'यह मेरे लिए नहीं' इस कहानी का पात्र 'दीनू' है। दीनू के चरित्र में काल्पनिकता कम और यथार्थता अधिक है। दीनू अपने नामानुसार दीन है। आर्थिक आधार टूट जाने के कारण दीनू को अनेक कठिन परिस्थितियों के बीच अपना बचपन गुजारना पड़ा। ट्यूशन पढ़ाकर उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी और अपने आत्म-सम्मान को बनाए रखा। आर्थिक दुरावस्था के बीच रहते हुए भी दीनू ने कभी रिश्तेदारों का अहसान स्वीकार नहीं किया। जब दीनू नौकरी करने लगा तो इन्हीं रिश्तेदारों को माँ ने उसके सिर पर थोपना चाहा। डॉक्टर चाचा और चाची जो दीनू के सगे चाचा और चाची नहीं थे, दीनू को विपन्न अवस्था में सहारा दिया था। माँ ने उन्हीं को घर से निकाल दिया। अपने अध्ययन काल में दीनू 'सांजी' की ओर आकृष्ट हुआ था। सांजी अन्यत्र विवाहित होकर चली गई। सांजी के अभाव में निराधार दीनू बिखरने लगा। सांजी के बाद दीनू के जीवन में 'अर्पणा दी' (अर्पणा बनर्जी) आई। किन्तु अर्पणा के माँ-बाप को दीनू और अर्पणा का विवाह मंजूर नहीं था इसलिए अर्पणा उसको छोड़कर अपने पिता के साथ चंदन नगर चली जाती है।

इन विपरीत परिस्थितियों में अगर दीनू की माँ ने उसे समझा होता, तो दीनू का जीवन सँवर गया होता, किन्तु माँ दीनू की ओर से बेखबर थी उन पर पति की आखिरी निशानी मकान की मरम्मत करने की धुन सवार थी। जब माँ ने विवाह भी दीनू पर लादना चाहा तो वह विद्रोह कर उठा और हॉस्टल चला गया।

इसके बाद शासन कर्ता माँ की प्रतिमा चूर-चूर हो गई माँ के दीन रूप को देखकर दीनू उद्विग्न हो उठा। पहले पिता, बाद में सांजी ने उसे निराधार बना दिया। माँ का अविश्वास उसके लिए जहर साबित हुआ। नितांत अकेला दीनू "यह जो 'मैं' है, यह भी मेरे लिए नहीं"[18] की स्थिति में पहुँच जाता है।

'बंद गली का आखिरी मकान' कहानी उक्त संकलन की अंतिम कहानी है। उक्त संकलन का नामकरण इसी कहानी के आधार पर किया गया है। गली के अंत का कच्चा मकान इस कहानी का घटना स्थल है। जहाँ आकर गली बंद हो जाती है। इस मकान के मालिक मुंशीजी भी मकान की तरह अकेले हैं। जिस 'बिटौनी' के पालन-पोषण के लिए वे अविवाहित रहे। जब वही 'बिटौनी' उन्हें भरी सभा में नीच कह देती है, तो मुंशी जी का दिल टूट जाता है। माँ की मृत्यु के बाद उन्होंने अपनी बहन बिटौनी को लड़की के रूप में पाला था। उसी बिटौनी ने उन्हें पीड़ित किया था।

मुंशीजी के चरित्र के विविध पहलू इस कहानी का विषय है। बिटौनी, बिरजा, राधेराम, हरिराम आदि के साथ मुंशीजी के संबंधों को इस कहानी में उपस्थित किया गया है। बिरजा ने मुंशीजी को स्वीकार करके समाज में उन्हें पिता का दर्जा दिया था। मुंशी जी की मानसिक स्थिति का सुंदर चित्रण पूरी कहानी में सुंदर ढंग से हुआ है। कहानी का कथानक बहुत लंबा है। कहानी की भाषा अत्यंत सहज है। गली-मुहल्ले की भाषा के साथ-साथ उर्दू के शब्दों का प्रयोग भी कहानी में हुआ है। शब्दों में अलंकार का प्रयोग भी सुंदर ढंग से हुआ है।

इस तरह उपर्युक्त कहानियों के आधार पर ये कहा जा सकता है कि धर्मवीर भारती उपन्यासकार होने के साथ-साथ एक सफल कहानीकार भी थे।

### 1.2.3 काव्य संग्रह

[18] प्रस्तुति पुष्पा भारती, सांस की कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या 286

धर्मवीर भारती की चार काव्य कृतियाँ है– 'ठंडा लोहा', 'सात गीत वर्ष', 'सपना अभी भी' और 'कनुप्रिया'।

**ठंडा लोहा (1952)–** धर्मवीर भारती की छह वर्षों की चुनी हुई रचनाओं का संकलन ठंडा लोहा में प्रकाशित हुआ। इसमें कुल 36 कविताएँ है। जिनमें से अधिकांश गीत हैं और कुछ लंबी एवं लघु कविताएँ हैं। समय-समय पर लिखे होने के कारण कविताओं के विषय और शिल्प में विविधता दिखाई देती है। इस संकलन में कवि की उदासी और निराशा के साथ-साथ आशा एवं आस्था का स्वर सुनाई देता है। प्रायः सभी गीतों में दर्द की स्थिति पाई जाती है। ठंडा लोहा को अगर प्रणयानुभूति का सुख-दुःख मिश्रित काव्य संग्रह कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी। इसमें संकलित रचनाओं में कवि की वैयक्तिकता, प्रणयानुभूति, किशोरावस्था की रूपाशक्ति एवं कहीं-कहीं प्रेम की असफलता के फलस्वरूप निराशा तथा टीस से युक्त मनोदशा का चित्रण हुआ है। प्रेम के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण कवि की इन कविताओं में भली भांति हुआ है, परंतु प्रेम का वियोग पक्ष ही अधिक उभर कर आया है। कारण उसमें दर्द की चरम सीमा है। उसके दर्द में पारम्परिक बोध नहीं है। उनकी अभिव्यक्ति में नवीनता है।

उक्त कविता संकलन में रूमानियत के साथ-साथ दर्द और कसक की सार्थक अभिव्यक्ति हुई है। कवि स्वीकारता है कि–

"यह थके कदम, यह हवा सर्द
यह जख्म चीरता हुआ दर्द
तो क्या है वह जिन्दगी न जिसमें मिलता कोई छुटकारा?"[19]

इस संकलन में प्रणयानुभूति की सहज अभिव्यक्ति के साथ-साथ आज के वैज्ञानिक युग की समस्याएँ, अकेलापन, उदासी, दर्द और घुटन की अभिव्यक्ति हुई है। युग की समस्याओं के बीच व्यक्ति पूरी तरह

[19] ठंडा लोहा, धर्मवीर भारती पृष्ठ संख्या 69

जी नहीं पाता है। उसका स्वर पीड़ा के अजीब भार से दब सा जाता है। इसी पीड़ा को कवि ने अपनी कविता में उभारना चाहा है -

"उन्मन मन पर एक अजब सा अलस उदासी भार,
मंदती पलकों के फूलों पर जल बूंदों का शोर,
मन में उठती गुप-चुप पुरवैय्या की मृदुल लहर
विस्मृतियाँ होती चकनाचूर
हृदय से टकराकर भरपूर
उमड़ कर घिर आता है बरसाती प्यार।"[20]

**सात गीत वर्ष**– 'ठंडा लोहा' के बाद धर्मवीर भारती की दूसरा कविता संकलन 'सात गीत वर्ष' है, जिसमें 59 कविताएँ संकलित है। इस संकलन में 1952 से 1959 तक की कविताओं का संकलन किया है। इस संकलन की कविताएँ अपने में पूर्ण हैं और कवि की विशिष्ट भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रत्येक कविता में हुई है। दो तिहाई से अधिक कविताओं में कवि की मूल भावना प्रेम-प्रणय की अभिव्यक्ति रही है। सभी कविताओं में कवि की वैयक्तिक चेतना उभरी है। प्रेम की माँसलता को अनेक कविताओं में, अभिव्यक्ति मिली है। 'केवल तन का रिश्ता' कविता में माँसल प्रेम की अभिव्यक्ति निम्न प्रकार से हुई है–

"तन का
केवल तन का रिश्ता भी
माँसलता से कितना ऊपर उठ जाता है।"[21]

[20] वहीं, पृष्ठ संख्या 9

[21] धर्मवीर भारती, सात वर्ष का गीत, पृष्ठ संख्या 44

इस कविता संकलन की भूमिका में इन कविताओं का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए लेखक इसे महत्वपूर्ण क्षणों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति मानते हैं। क्षण की महत्ता का प्रतिपादित करते हुए कवि ने जीवन के विभिन्न पक्षों का सहज चित्रण किया है। आस्था-अनास्था, विश्वास-अविश्वास जैसी मानसिक स्थितियों का चित्रण कवि ने बड़े सहज ढंग से किया है। व्यक्ति हमेशा किसी न किसी रूप में अपने युग परिवेश से तिरस्कृत रहा है। वह हर तरह से अकेला है। अकेलेपन की पीड़ा से दब सा जाता है। यह अकेलापन तब और प्रखर हो जाता है, जब व्यक्ति को यांत्रिक गति से दौड़ते हुए भीड़ में अनदेखे, अनचाहे, असंपृक्त चेहरों से परायेपन की झांकी दिखती है। और ऐसे में वह अपने को एकदम अजनबी महसूस करने लगता है। कवि ने इसी अजनबीपन को अपनी कविताओं के माध्यम से कहना चाहा है–

"एक अजनबी को देख
आँगन में नहाती हुई गौरेय्या भागी
झुरमुट में छिपकर व्याकुलता से चहकी
मुझको पहचान आज
आज इतने दिनों बाद देख
थाले की जूही कुछ डोली, उदासी से महकी
सिर्फ एक तुम थी जो हिली नहीं, डुली नहीं
जीने पर खड़ी रही यादों में डुबी-सी, ख्यालों में बहकी।"[22]

इस संकलन की कुछ कविताओं में स्वाभिमान, स्वतंत्रता, देशप्रेम आदि भावनाओं को एक जागरूक नागरिक की भांति धर्मवीर भारती ने उन्मुक्त भाव से अभिव्यक्त किया है। इस संकलन में सिर्फ कथ्य पक्ष ही नहीं अभिव्यक्ति पक्ष भी सशक्त है। भाषा की सहजता इस संकलन की एक और विशेषता है। इस संकलन में भावगत विविधता के साथ शिल्प क्षेत्र में नए-नए प्रयोग किए गए हैं। इसमें जहाँ एक ओर

[22] वहीं पृष्ठ संख्या 47

आशा और विश्वास की अभिव्यक्ति है, वहीं कवि की रोमाँटिक प्रवृत्ति को इसमें सुंदर अभिव्यक्ति मिली है। भावों के अनुकूल भाषा एवं छंद, बिंब, प्रतीकों के प्रयोग हैं। प्रयोगात्मकता इस संकलन की विशेषता है।

**सपना अभी भी (1956)–** इस संकलन में सन् 1959 से लेकर सन् 1993 तक की कविताएँ है। इस संकलन में चौंतीस वर्ष के बीच लिखी कविताएँ है। 'सपना अभी भी' संकलन में सभी प्रकार की रचनाएँ हैं। जिसमें पुराने किले में समकालीन इतिहास से लेकर पकी उम्र का प्यार तथा जनांदोलन की ललकार की कविताएँ हैं। "भारती जी की संवेदना परिधि में सब एक विशिष्ट मार्मिकता से अभिव्यक्त होते हैं और सबसे बड़ी बात यह कि इतिहास का विश्लेषण हो या सोनारू जैसे निर्वासित इतिहास-वृद्ध की पीड़ा हो, कहीं भी छद्म बौद्धिकता नहीं, बड़बोले उपदेश नहीं, सिद्धांत छाँटने का आडम्बर नहीं एक सहज संवेदनाशील अभिव्यक्ति, जो सीधे मर्म को छू जाये।"[23]

**कनुप्रिया (1959)–** 'कनुप्रिया' पाकर खो देने की व्यथाभरी प्रेम कहानी है। इसकी मूल भावना प्रेम है। अपनी रोमांटिक प्रेम की अभिव्यक्ति धर्मवीर भारती ने 'राधा' के माध्यम से की है। भक्तियुगीन आध्यात्म के आवरण में भारती ने 'राधा-कृष्ण' की केलि-क्रीड़ाओं को ढकना चाहा है। इसमें राधा कहीं कृष्ण की जन्म जन्मांतर की रहस्यमयी संगिनी है, तो कहीं वह कृष्ण की शक्ति है और कहीं 'योगमाया'। 'कनुप्रिया' के वर्णनों के अनुसार 'राधा-कृष्ण' प्रकृति और पुरुष है।
'कृष्ण' की प्रेमिका के अतिरिक्त 'कनुप्रिया' की राधा कहीं-कहीं राधिका भक्त के रूप में भी आई है। रीतिकालीन नायिका रूप एवं भक्तिकालीन नायिका रूप एवं भक्तिकालीन देवी रूप के अलावा 'राधा' का 'आधुनिक रूप' भी 'कनुप्रिया' में मिलता है। 'राधा' का दुःख आहत प्रणय का दुःख है। प्रेम की

[23] धर्मवीर भारती,सपना अभी भी, पृष्ठ संख्या 28

सहजता एवं आत्मविभोरता की वह प्रतिमा है। आधुनिक व्यक्तिवादी समस्याओं का हल इसमें भावाकुल तन्मयता से रागात्मक स्तर पर किया गया है। 'कनुप्रिया' एक प्रबन्धात्मक काव्य है। लेकिन प्रबंध की स्थूलता इसमे नहीं है। संवेदना एवं सरलता इस काव्य की मुख्य प्रवृत्ति रही है। इसमें कुल मिलाकर 'उन्नीस गीत' है। संपूर्ण कथानक पूर्ववृत के माध्यम से कहा गया है। इसमें केवल एक ही चरित्र है 'राधा'। 'राधा' के माध्यम से कृष्ण के व्यक्तित्व को भी इसमें अभिव्यक्ति मिली है। भाषा में तत्सम, तद्भव, देशज एवं उर्दू-फारसी शब्दों का प्रयोग इसमें हुआ है। अलंकारों के प्रयोग की दृष्टि से यह कृति बहुत ही समृद्ध है। उपमाओं, रूपकों का सुंदर प्रयोग इसमें हुआ है। बिम्ब एवं प्रतीकों का सफल प्रयोग इस कृति की सबसे बड़ी विशेषता है। 'राधा कृष्ण' के रूपायित किया गया है। घटना एवं शब्द इसमें पौराणिक जरूर हैं पर भाव आधुनिक ही है। परंपरा एवं आधुनिकता का सुंदर सम्मिश्रण इस काव्य कृति में हुआ है।

### 1.2.4 नाटक

**अंधायुग (काव्य/गीति नाटक)**– सन्1954 में धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' प्रकाशित हुआ। यह एक दृश्य काव्य है। इसमें कवि ने 'महाभारत' के पौराणिक कथानक के माध्यम से युद्ध की विभीषिका, अनास्था, अविश्वास, अमर्यादा, प्रतिहिंसा, प्रतिशोध एवं आत्मघात आदि युगीन समस्याओं का चित्रण किया है। आस्था, विश्वास, मर्यादा, सत्य, धर्म, श्रद्धा तथा सद्भाव आदि भावों की प्रतिष्ठा कवि ने इस काव्य नाटक के माध्यम से की है। इस नाटक में यथार्थ और आदर्श का सुंदर समन्वय किया गया है। इस काव्य नाटक में कुंठा, निराशा आदि विश्वव्यापी मनःस्थितियों का विश्लेषण नाटककार का लक्ष्य है। परंपरागत एवं सामाजिक मूल्यों के संघर्ष को इसमें अभिव्यक्त किया गया है। कृष्ण चरित्र में नाटककार ने मर्यादा एवं सत्य जैसे व्यापक संदर्भों पर आस्था व्यक्त की है और अमर्यादित जीवन की हीनता व्यक्त की है। विदुर, गांधारी जैसे पारंपरिक पात्रों के माध्यम से मर्यादा और सत्य के व्यापक महत्व की प्रतिष्ठा की है जो इस प्रकार समझी जा सकती है–

"माता धैर्य धारण करें

कवच यह मिथ्या है

मर्यादित आचरण कवच है

जो व्यक्ति को बचाता है"[24]

मर्यादा के साथ-साथ कवि ने कृति में सत्य की महत्ता प्रतिपादित की है। मूल्यांधता की समस्या को सुलझाने के लिए उन्होंने दायित्व मुक्त, मर्यादित, मुक्त आचरण का उपाय बताया है। डॉ. हुकूमचंद राजपाल के शब्दों में "भारती जी 'अंधायुग' के माध्यम से जीवन का अवलोकन करना चाहते है। जिसका आधार पौराणिक कथानक नवीन संदर्भों में व्यक्त माना जा सकता है। अत: 'अंधायुग' को मर्यादा, आस्था, सत्य की सार्थक अभिव्यक्ति, अस्तित्व बोध एवं युगबोध के जीवन की दृष्टि से सम्यक निरूपण समाज में नारी का समुचित मूल्यांकन एवं वैयक्तिक धारणाओं आदि की दृष्टि से समर्थ कृति रूप में स्वीकार किया जा सकता है। विशेषकर मानव अस्तित्व एवं युग-सत्य का यथार्थ प्रकटीकरण करने में कवि की सफलता अद्वितीय है।"[25]

### 1.2.5 एकांकी

अन्य साहित्यिक विधाओं की भांति धर्मवीर भारती ने एकांकी भी लिखे हैं। 'नदी प्यासी थी' उनकी एकांकियों का संकलन है जो 1954 में प्रकाशित हुआ था। इसमें पांच एकांकी 'नदी प्यासी थी','नीली झील','आवाज का नीलम','संगमरमर पर एक रात' एवं 'सृष्टि का आखिरी आदमी' संगृहीत है। इन पाँच एकांकियों में से चार रंगमंचीय एकांकी है और एक रेडियो के लिए लिखा गया है। इस संकलन की सभी एकांकियों से प्रत्येक के संवाद काव्यात्मक हैं। एकांकी तत्वों से ज्यादा इनमें काव्यात्मक संवेदना है। मंचीय संकेतों को हटा देने पर वे लघुकाव्य प्रतीत होते हैं।

---

[24] धर्मवीर भारती,अंधा युग,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकशन,नई दिल्ली पृष्ठ, संख्या 97

[25] धर्मवीर भारती, साहित्य के विविध आयाम, हुकुमचंद राजपाल ,पृष्ठ संख्या 65

**नदी प्यासी थी**– ‘नदी प्यासी थी’ एकांकी संकलन की पहली एकांकी है। असफल प्रेम की पीड़ा इस एकांकी में व्यक्त हुई है। इस एकांकी के प्रमुख पात्र ‘राजेश’ है जो ‘कामिनी’ से प्रेम करता है। दोनों प्रेमियों ने निश्चय किया था कि वे जीवन भर अलग रहेंगे और एक दूसरे से प्रेम का प्रतिदान नहीं लेंगे। लेकिन जब ‘कामिनी’ किसी और की पत्नी बन जाती है तो उससे अपने आपको दूर करना राजेश को असंभव लगता है। प्रेम की इसी असफलता के कारण सारी जिंदगी उसे व्यर्थ मालूम होने लगती है। वह अनुभव करने लगता है कि जिंदगी क्रूर है, कुरूप है, घिनौनी है और आदमी लाख कोशिश करने पर भी उसे बदल नहीं सकता। असफल प्रेम की प्रतिक्रिया स्वरूप नारी मात्र के प्रति उसका मन कटुता से भर जाता है लेकिन जब वह ‘पद्मा’ के संपर्क में आता है। उसकी ममता से वह बेचैन हो उठता है।

उक्त एकांकी संवाद, देशकाल एवं पात्रों के चरित्र की दृष्टि से भी सफल है। भावी घटनाओं का सुंदर सांकेतिक नाटकीय प्रयोग भी इसमें हुआ है। यह एकांकी शुरू से अंत तक गंभीरता से युक्त है।

**नील-झील**– ‘नदी प्यासी थी’ एकांकी संकलन की दूसरी एकांकी है ‘नील झील’ है। इस एकांकी का विषय ऐन्द्रजालिक कल्पना से समन्वित है। इसलिए रंगमंच की दृष्टि से यह उपयुक्त नहीं है। इसमें प्रजातंत्र की व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है। इसमें ‘नील झील’ के देश की आदर्श व्यवस्था का उल्लेख किया गया है। नील झील के देश के लोग “चट्टानों की छाती फोड़कर जिंदगी उगाते हैं और बाँस की टहनियों को गुदगुदा कर संगीत बिखेरते हैं।”[26]

इसलिए वे हर तरह से सुखी संपन्न है। इसमें लेखक का कहना है कि जब प्रेम का स्थान मशीन और पैसा ले लेते हैं तो स्वतंत्रता का नारा लगाने वालो की आत्मा मर जाती है। ऐसी स्वतंत्रता की स्थिति में एक व्यक्ति श्रम बेचने के लिए विवश होता है और दूसरा खरीदने के लिए स्वतंत्र होता है। ऐसी स्वतंत्रता

---

[26] धर्मवीर भारती, नदी प्यास थी, पृष्ठ संख्या 37

की व्यवस्था में एक व्यक्ति सेना लेकर 'नील झील' के देश में लौटता है, जिसने लोगों को मशीनों में झोंककर पैसा इकट्ठा किया है, क्योंकि इस जनतंत्र की व्यवस्था में सत्ता शोषक के हाथ में थी और तंत्र प्रजा के पास था। ऐसी स्वतंत्रता की व्यवस्था में मनुष्य अपनी संवेदना खो बैठता है। मानवीय व्यवस्था पर गहरा व्यंग्य किया गया है। लेखक के भावों को व्यक्त करने के लिए संवाद भी भावों के अनुरूप हैं।

**आवाज का नीलम**– 'आवाज का नीलम' एकांकी में मानवीय संवेदनशीलता से प्रेरित एक पत्रकार की स्थिति का मनोवैज्ञानिक चित्रण हुआ है। इस एकांकी का नायक 'दिवाक'' एक ऐसा पत्रकार है। जिसने नंगी भूखी जनता की आवाज को अपनी पत्रकारिता का उद्देश्य बनाया था और अपने पत्र का नाम आवाज रखा था। अनेक मुसीबतों के बावजूद उसने अपना पत्र बंद नहीं किया था, पर पत्नी की बीमारी के लिए हुए कर्ज़ों को चुकाने के लिए उसे अपनी आवाज विवश होकर सेठ के पास बेचनी पड़ी। सेठ बाजोरिया 'आवाज' को खरीद लेता है। स्वतंत्रता के बाद पत्रकारिता की इसी व्यापारीकरण-व्यवस्था पर धर्मवीर भारती ने इस एकांकी में प्रकाश डाला है।

**संगमरमर की एक रात**– 'नदी प्यासी थी' एकांकी संकलन की चौथी एकांकी है 'संगमरमर की एक रात'। लोकप्रसिद्ध जहाँगीर और नूरजहाँ की प्रेम कहानी इस एकांकी का विषय है। इस एकांकी में नूरजहाँ और जहाँगीर के प्रेम संबंधी अंतर्द्वंद्व का चित्रण है और साथ-साथ दोनों को द्वंद्वहीनता की स्थिति तक पहुँचाने तक की स्थिति का चित्रण भी इसमें हुआ है। नूरजहाँ और जहाँगीर का प्रेम संबंध शाहजहाँ और अकबर को नामंजूर था। नूरजहाँ की शादी शेरे अफगान से हो जाती है। शादी के सत्रह वर्ष बाद जब नूरजहाँ के पति शेरे अफगान की हत्या कर दी जाती है। तो जहाँगीर उसे आगरा के राजमहल में ले आते हैं। आगरा के महलों में रहती हुई भी नूरजहाँ जहाँगीर का दिया हुआ गुजारा स्वीकार नहीं करती और मेहनत-मजदूरी से अपना गुजारा करने लगती है। क्योंकि उसे यह गलतफहमी थी कि शेरे अफगान की हत्या जहाँगीर ने कार्रवाई है। दूसरी ओर नूरजहाँ को दिल से चाहते हुए भी जहाँगीर उसे जबरदस्ती अपने

हरम में नहीं डाल सका, क्योंकि बीस साल पहले उसने नूरजहाँ की पूजा की थी। नूरजहाँ का प्यार पाने के लिए जहाँगीर आज भी उतना पागल था, जितना बीस साल पहले था। नूरजहाँ अपने निर्णय के संबंध में अनजाने में सोचने लगती है। उसकी सारी आकांक्षाएं निराधार साबित होती है और अंत में वह जहाँगीर को अपना लेती है।

इस एकांकी की विषयवस्तु को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। भाषा प्रयोग की दृष्टि से भी एकांकी सफल है। मुगलों से संबंधित होने के कारण इस एकांकी की भाषा उर्दूमय है।

**सृष्टि का आखिरी आदमी (रेडियो एकांकी)**– 'नदी प्यासी थी' एकांकी संकलन की आखिरी एकांकी सृष्टि का आखिरी आदमी है। रेडियो के लिए लिखे जाने के कारण इसका प्रमुख आधार ध्वन्यात्मकता है। इस एकांकी का विषय अनिश्चित भविष्य से संबंधित है। इसमें भविष्य को वर्तमान के रूप में उपस्थित किया गया है।

भौतिकवादी पश्चिमी सभ्यता के कारण मनुष्य की स्थिति हीन से हीनतर होती जा रही है। संवेदनशून्य व्यक्तिवादी सभ्यता के कारण नफरत के काले बादल इकट्ठे होते जा रहे हैं और जनता विवश है। शासकों को अपनी शक्ति का अभिमान है। वे जनता की आवाज को बंदूकों से दबा देना चाहते हैं लेकिन जब मुर्दा जनता का ज्वालामुखी धधक उठता है तो उसे शोषक-शासक रोक नहीं पाता है। देखते ही देखते 'सभ्यता की गंदी बेशर्म कहानी' समाप्त हो जाती है। प्रतीकों का अत्यंत सुंदर प्रयोग इस एकांकी में हुआ है। आशामय भविष्य पर इस एकांकी में आस्था दिखाई पड़ती है।

### 1.2.6 निबंध

कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी के अतिरिक्त धर्मवीर भारती ने निबंधों की रचना भी की है। निबंध संकलन 'ठेले पर हिमालय' पुस्तक में हुआ है। समय-समय पर उन्होंने 'कहनी अनकहनी' स्तंभ

के अंतर्गत अनेक छोटे-छोटे टिप्पणीनुमा निबंध लिखे हैं। इसके अतिरिक्त 'ठेले पर हिमालय', 'पश्यंती' आदि संकलनों में कई छोटे-बड़े निबंधों का संकलन किया गया है।

धर्मवीर भारती के निबंधों में वैविध्य मिलता है। भाषा-समस्या के साथ-साथ साहित्य की अनेक समस्याओं का विवेचन उन्होंने अपने निबंधों में किया है। भाषा और साहित्य के अतिरिक्त राजनीति आदि विषयों पर भी इन निबंधों में विचार किया गया है। निबंध में कहीं-कहीं पर हास्य व्यंग्य का प्रयोग भी हुआ है। ठेले पर हिमालय संकलन में अनेक व्यंग्यपूर्ण निबंध है। शैली की दृष्टि से भी ये निबंध सफल है। उद्धरण द्वारा अनेक कथन की पुष्टि करने की प्रवृत्ति को लेखक ने ज्यादातर अपनाया है। उर्दू के शब्दों का प्रयोग निबंधों में काफी किया गया है।

गद्य साहित्य में श्रद्धांजलियों और मृत्यु लेखों का भी विशिष्ट स्थान है। 'निराला' की मृत्यु पर 'सत मुए का रोइए' शीर्षक श्रद्धांजलि उन्होंने संस्मरणात्मक ढंग से लिखी थी। यह लेख अत्यंत प्रभावशाली है। 'अपनी मौत' नामक शीर्षक से उन्होंने एक मृत्यु लेख भी लिखे है। यह एक आत्मविश्लेषणात्मक निबंध है। इसके अतिरिक्त उन्होंने 'भारतेंदु जयंती' पर मैं चाँद के कलंक को प्यार करता हूँ शीर्षक श्रद्धांजलि लिखी है। इस लेख में लेखक ने भारतेंदु के व्यक्तित्व को उज्ज्वल बनाया है।

धर्मवीर भारती को घूमने का बहुत शौक था। इसलिए उन्होंने अनेक यात्रा संस्मरण भी लिखे है। 'ठेले पर हिमालय' संकलन में दो यात्रा सस्मरण संकलित हैं– 'ठेले पर हिमालय' और 'कूर्माचल में कुछ दिन' हिमालय से संबंधित इन संस्मरणों में पर्वतीय सौंदर्य का सुंदर चित्रण हुआ है। अन्य साहित्यिक विधाओं की तरह धर्मवीर भारती ने 'आलोचना' भी लिखी है। उन्होंने 'प्रगतिवाद: एक समीक्षा' और 'मानव मूल्य और साहित्य' नामक दो आलोचना ग्रंथ लिखे हैं।

धर्मवीर भारती ने अन्य साहित्यिक विधाओं की भांति बांग्लादेश के युद्ध के संबंध में 'मुक्ताक्षेत्रेःयुद्धक्षेत्रे' नामक एक रिपोर्ताज भी लिखा है। एक सच्चे पत्रकार के नाते उन्होंने स्वयं युद्धक्षेत्र का दौरा किया था और अपनी आँखों देखी घटनाओं को रिपोर्ताज में उपस्थित किया था। सैनिकों के अत्याचारों, युद्ध की मानसिकता एवं देश के साधारण साधनहीन नागरिकों की दुर्दशा का सजीव चित्रण उन्होंने इस पुस्तक

में किया है। बांग्लादेश एवं पाकिस्तान के युद्ध के ऐतिहासिक-सामाजिक संदर्भ पर इसमें प्रकाश डाला गया है। उक्त रिपोर्ताज की भाषा अत्यंत सरल है। कहीं-कहीं बंगला शब्द और छोटे-छोटे बंगला भाषा के वाक्य भी हैं, जो भावाभिव्यक्ति को सशक्त बनाते हैं। इस पुस्तक में नौ रिपोर्ताज और एक साक्षात्कार (इंटरव्यू) हैं। लेखक ने मुक्तिवाहिनी के सेनापति कर्नल उस्मानी का इंटरव्यू भी लिया है, जिसमें उन्होंने कर्नल उस्मानी की मानवीयता पर प्रकाश डाला है। ये रिपोर्ताज 'धर्मयुग' में धारावाहिक प्रकाशित हुए तथा हिन्दी साहित्य में एक अलभ्य योगदान के रूप में स्वीकृत हुए।

### 1.2.7 अनुवाद साहित्य

धर्मवीर भारती ने कई कहानियों एवं कविताओं का अनुवाद भी किया है। अनुवाद साहित्य उन्हें सफल अनुवादक के रूप में प्रतिष्ठित करने में समर्थ हैं। 'देशांतर' में 161 अनुदित कविताओं का संकलन है। ये कविताएँ अनुवाद के अनुशीलन से मुक्त प्रतीत होती है। पढ़ने पर ये कविताएँ मौलिक कविताएँ प्रतीत होती हैं। युद्ध यात्रा और आस्कर वॉइल्ड की कहानियाँ उनकी दो अनुदित पुस्तकें हैं।

इस तरह धर्मवीर भारती के साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने से पता चलता है कि वे सिर्फ एक सफल कहानीकार, उपन्यासकार ही नहीं बल्कि कवि, निबंधकार, समालोचक एवं अनुवादक भी हैं। साहित्य की कोई भी विधा उनकी लेखनी से अछूती नहीं रही। काव्य से लेकर पत्रकारिता तक सभी विधाओं में उन्होंने सफल रूप से अपनी कलम चलाई है। धर्मवीर भारती ने अपने लेखन कार्य में सभी समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। "किसी भी युग का महान प्रतिभाशाली कलाकार अपने युग की ज्वलंत समस्याओं की उपेक्षा नहीं कर सकता। एक महान कलाकार जीवन की गहन संवेदना, उससे ऊपर उठने की प्यास और चारों ओर के अंधेरे को चीर कर एक सशक्त जीवन दर्शन की मशाल लेकर आगे बढ़ने का साहस होता है।"[27]

[27] भारती ग्रंथावली 5 संपादक चंद्रकांत बांदिवेडकर संख्या 153

## संदर्भ ग्रंथ सूची


1. धर्मवीर भारती, मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पाँचवाँ संस्करण 2019 नई दिल्ली, भूमिका
2. धर्मवीर भारती, सात गीत-वर्ष,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण जनवरी 1976, नई दिल्ली , पृष्ठ संख्या 10
3. धर्मवीर भारती, सात गीत वर्ष, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण जनवरी 1976 ,नई दिल्ली, , पृष्ठ संख्या 10
4. हरिवंश राय बच्चन,नीड़ का निर्माण फिर, राजपाल एंड संन्ज, चौथा संस्करण 1976 ,पृष्ठ संख्या 101,
5. डॉक्टर चंद्रभानु सीताराम सोनवणे,धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग, पंचशील प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या14
6. संपादक पुष्पा भारती,धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली,दूसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या 96-97
7. संपादक पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती से साक्षात्कार ,भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण 2004,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 7
8. चंद्रकांत बांदिवेडकर,धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य अकादेमी,पहला संस्करण 2001,नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 10
9. डॉ सरिता शुक्ला,धर्मवीर भारती: युग चेतना और अभिव्यक्ति, चिंतन प्रकाशन,प्रथम संस्करण, कानपुर, पृष्ठ संख्या 15
10. प्रस्तुति पुष्पा भारती ,धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण ,कहानियां सांस की कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,तीसरा संस्करण2014 ,नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 24
11. कादम्बिनी मासिक पत्रिका, जून 1973,पृष्ठ संख्या 70
12. दूसरा तार सप्तक, अज्ञेय, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, पृष्ठ संख्या176
13. डॉक्टर चंद्रभानु सीताराम सोनवणे, धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग, , पंचशील प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या 14
14. धर्मवीर भारती ,प्रगतिवाद:एक समीक्षा, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयागराज,पृष्ठ संख्या 195,
15. डां पुष्पा वाँ स्कर ,धर्मवीर भारती: व्यक्ति और साहित्य, अलका प्रकाशन,कानपुर, प्रथम संस्करण, पृष्ठ संख्या 128
16. डॉक्टर चंद्रभानु सीताराम सोनवणे ,धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग,पंचशील प्रकाशन जयपुर ,पृष्ठ संख्या 97
17. धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन उनतालीसवां संस्करण, पृष्ठ संख्या 68
18. प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण,सांस की कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या 286
19. धर्मवीर भारती ,ठंडा लोहा,साहित्य भवन लिमिटेड,इलाहाबाद,पृष्ठ संख्या 69
20. वहीं, पृष्ठ संख्या 9
21. धर्मवीर भारती, सात गीत वर्ष , भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण जनवरी 1976 ,नई दिल्ली, , पृष्ठ संख्या 144
22. वहीं, पृष्ठ संख्या 47
23. धर्मवीर भारती,सपना अभी भी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 28
24. धर्मवीर भारती,अंधा युग,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकशन,नई दिल्ली पृष्ठ, संख्या 97

25. डॉ हुकुमचंद राजपाल,धर्मवीर भारती,:साहित्य के विविध आयाम,विभू प्रकाशन, पहला संस्करण,पृष्ठ संख्या65

26. धर्मवीर भारती,नदी प्यास थी,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकशन नई दिल्ली,पृष्ठ संख्या 37

27. संपादक चंद्रकांत बांदिवेडकर, भारती ग्रंथावली 5,पृष्ठ संख्या 153

# दूसरा अध्याय

# धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री का स्वरूप

**2.1 चयनित कथा साहित्य में सामाजिक धरातल**

**2.1.1 अनमेल विवाह**

**2.1.2 दहेज**

**2.1.3 जातिवाद**

**2.1.4 अशिक्षा**

**2.1.5 देवदासी**

**2.1.6 विधवा जीवन**

**2.2 चयनित कथा साहित्य में आर्थिक धरातल**

**2.3 चयनित कथा साहित्य में पारिवारिक धरातल**

**2.4 चयनित कथा साहित्य में व्यक्तिगत धरातल पर स्त्री के विभिन्न स्वरूप**

**2.4.1 माँ**

**2.4.2 पत्नी**

**2.4.3 बहन**

**2.4.4 चाची**

**2.4.5 मौसी**

**2.4.6 प्रेयसी (प्रेमिका)**

# दूसरा अध्याय

# धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री स्वरूप

व्यक्ति और समाज का परस्पर अन्योयाश्रित संबंध होता है। व्यक्ति के बिना समाज तथा समाज के बिना व्यक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, वह समाज का अंग है और समाज से कटकर वह नहीं रह सकता है क्योंकि व्यावहारिक स्तर पर उसका विकास असंभव है। समाज सदैव मनुष्य को विकसित होने का अवसर प्रदान करता है। व्यक्ति की बौद्धिक मानसिक शक्तियों का स्रोत समाज ही होता है। मनुष्य को शक्ति एवं प्रेरणा समाज से ही प्राप्त होती है समाज व्यक्ति को दिशा प्रदान करता है।

जिस प्रकार व्यक्ति सामाजिक मर्यादा का पालन करता है, उनकी रक्षा करता है उसी प्रकार समाज भी व्यक्ति की रक्षा करता है। यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन करता है तो समाज उसे दंडित भी करता है। समाज व्यक्ति का सोद्देश्य संगठन है, जो विभिन्न विचारों और भावनाओं आदि के कारण परस्पर जुड़ा रहता है तथा जिस की गति की विशिष्ट दिशा भी होती है।

मनुष्य के जीवन में पुरुष की ही तरह स्त्री का भी अपना महत्व है क्योंकि समाज के निर्माण में वह भी अपनी सहभागिता प्रदान करती चली आ रही है अपनी विभिन्न भूमिका का निर्वाह करते हुए स्त्री समाज का अभिन्न अंग बन जाती है। समाज में स्त्री सदियों से माँ, पत्नी, बहन, बेटी, सास और बहू आदि न जाने कितने ही अनेक दायित्वों का निर्वाह करती चली आ रही है अंत में कहा जा सकता है कि मनुष्य का जीवन नारी के बिना अपूर्ण है। “स्त्रियाँ समाज का अनावश्यक हिस्सा नहीं है बल्कि पुरुष की तरह समाज के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उतनी ही अनिवार्य हैं।”[28] “स्त्री तो जीवन की वह धुरी है,

[28] डॉ.अमिता मुखर्जी ,वूमेन इन इंडिया लाइफ एंड सोसायटी, पुस्तक महल प्रकाशन, पहला संस्करण,1996, पृष्ठ संख्या 275

जहाँ से जीवन संचालित होता है धुरी ठीक होगी तो जीवन का संचालन भी ठीक होगा, अन्यथा गड़बड़ा जाएगा।"[29]

समाज को यदि हम एक गाड़ी के रूप में देखें तो स्त्री एवं पुरुष उस गाड़ी के दो बराबर चलने वाले पहिए हैं। इनमें कहीं जब भी किसी कारणवश असंतुलन बनता है, तभी गाड़ी डगमगाने लगती है। स्त्री पुरुष की जन्मदात्री, पाल पोसकर समर्थ बनाने वाली उसकी माँ, प्रेमिका, बहन, दोस्त, पत्नी तथा पुत्री आदि विभिन्न स्वरूपों में सहायिका एवं सेविका बनी। वह उसकी उन्नति में सदैव आगे एवं सुख सुविधाओं को जुटाने में सहायक रही है। इसलिए प्रत्येक युग में स्त्री के स्वरूप को लेकर साहित्यकारों, चितंको, कवियों, नाटककारों व खासतौर पर कथाकारों ने अपने दृष्टिकोण से स्त्री के विभिन्न स्वरूपों पर समय सापेक्ष अपने विचार प्रकट किए हैं। फिर चाहे उनमें प्राचीन काल के ऋषियों से लेकर आधुनिक काल के साहित्यकार तक शामिल क्यों न हो।

इस अध्याय में हम आगे जिस कथाकार के चयनित कथा साहित्य पर बात करने जा रहे हैं। उनका हिंदी साहित्य जगत में आधुनिक काल के कथाकारों में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। उन्होंने विविध विधाओं में अपनी रचनात्मक क्षमता का परिचय दिया है। निर्मल वर्मा के अनुसार "भारती हमारे समय के उन दुर्लभ, असाधारण लेखकों में से थे, जिन्होंने अपनी सर्वोतान्मुखी प्रतिभा से साहित्य की हर विधा को एक नया, अप्रत्याशित मोड़ दिया है।"[30] जिसमें उन्होंने अपनी लेखनी क्षमता का भरपूर प्रयोग किया। हिंदी साहित्य संसार में धर्मवीर भारती का लेखन उस दौर में शुरू हुआ जब दोनों विश्व युद्ध समाप्त हो चुके थे और भारत का स्वतंत्रता आंदोलन अपने चरम पर था देश को आजाद होने में थोड़ा ही वक्त शेष रह गया था परंतु देश को स्वाधीन होने के साथ ही विभाजित भी होना पड़ा। जिसके कारण परिवर्तन के एक नए दौर का शुभारंभ हुआ। परिवर्तन और प्रगति के इस दौर में एक महत्वपूर्ण पक्ष जो दिखाई देता है, वह स्त्री स्वरूप में परिवर्तन को लेकर भी था इन बदलावों की झलक हमें इलाचंद्र जोशी के कथा साहित्य

[29] आशारानी व्होरा, नारी शोषण आईने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982,पृष्ठ संख्या 225

[30] संपादक पुष्पा भारती,धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली,दूसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या 20

के साथ-साथ जैनेंद्र और अज्ञेय के कथा साहित्य में भी देखने को मिलती है। परंतु इन सभी कथाकारों के कथा साहित्य से एक कदम आगे की ओर बढ़ते हुए धर्मवीर भारती का कथा साहित्य दिखाई देता है क्योंकि उस दौर में धर्मवीर भारती ऐसे कथाकार थे। जिन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में न सिर्फ मध्यवर्ग, निम्नमध्य वर्ग व निम्न वर्ग की सकलांग स्त्रियों के दु:ख दर्द को अभिव्यक्ति दी अपितु, विकलांग स्त्रियों के दु:ख दर्द को भी अपने शब्दों के माध्यम से एक ठोस धरातल देने का प्रयास किया। उन्होंने अपने कथा साहित्य को व्यावहारिक रूप से स्त्री के जीवन से जोड़ा है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक, आर्थिक दृश्य पर भी विस्तृत एवं वस्तुपरक पड़ताल की है जो स्त्री स्वरूप से प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष दोनों रूपों से जुड़ी हुई है। उन्होंने स्त्री समस्या से संबंधित मूल बिंदु पर अपनी दूर दृष्टि से समाज में घटित व्यवस्था पर करारा प्रहार कर चुनौती देने का प्रयास भी किया है। समाज में स्त्री के जीवन की आपबीती को धर्मवीर भारती ने अपने शब्दों की माला में पिरो कर व्यक्त किया है। उन्होंने स्त्री स्वरूप लेखन में अपनी सहानुभूति और अभिव्यक्ति के प्रस्तुतीकरण में नए प्रयोग एवं लेखनी की विविधता को दर्शाया है। इसमें स्त्री के अनेक स्वरूप से जुड़े प्रश्न, परिस्थिति, व्यवस्था व सोच में विस्तार आदि उल्लेखनीय हैं। यहाँ पर एक बात मैं जोर देकर कहना चाहूंगी कि कथाकार धर्मवीर भारती ने पुरुष होते हुए भी स्त्री के दु:ख दर्द के उन सभी पहलुओं को अपने कथा साहित्य में बहुत ही बारीकी से एक व्यापक कैनवस पर उजागर किया है। और यह बात उस समय काल के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण रही है।

स्त्री को आज तक अपनी इच्छा से कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ है जो कुछ भी मिला वह दूसरो के बदौलत ही मिला। जिसमें पुरुष और पुरुषवादी सोच से प्रभावित स्त्रियाँ भी शामिल हैं। यह दुनिया का आधा हिस्सा होते हुए भी कई वर्षो से दुःख दर्द ही सहती आ रही है। इसी बात को स्पष्ट करते हुए सीमोन द बोउवार ने अपनी पुस्तक 'द सेकेंड सेक्स' में स्त्री की दयनी परिस्थिति को व्यक्त करते हुए कहा है– "वह पूरी मानवता का आधा हिस्सा  होते हुए भी पूरी एक जाति नहीं।"[31] यह कितने दुख की बात है

[31] अनु. डॉ प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिन्दी पाकेट बुक्स प्रकाशन नयी दिल्ली, नवीन संस्करण 2002 पृष्ठ संख्या19

कि सृष्टि की रचना जिसके अस्तित्व पर टिकी हुई है उसी के अस्तित्व को समाज द्वारा लगातार नकारा जा रहा है।

सृष्टि की संरचना की परिकल्पना स्त्री के बिना नहीं की जा सकती क्योंकि स्त्री ही एक ऐसी मनुष्य है जो अपार भावनाओं का घराना है। जिसके भीतर नयी व स्वस्थ सृष्टि की रचना की शक्ति संभावित है जो ठान लें तो सभी कार्यों को बहुत बख़ूबी के साथ करती है। स्त्री को छोड़कर या उसके स्वरूप को नकार कर सृष्टि की सुखद कल्पना ही नहीं की जा सकती। यदि ऐसा किया भी जाए तो सृष्टि का निर्माण नहीं हो सकता। इस बात को सभ्यता की शुरुआती दौर से लेकर अब तक देखा जा सकता है। जब-जब स्त्री  के रूपों को और उसके अस्तित्व को नकारा गया है  तब-तब तक हर युग में भीषण युद्ध देखने को मिले है जैसे राम रावण युद्ध के केंद्र में सीता और महाभारत का प्रचंड युद्ध केंद्र में द्रोपदी थी। ये दोनों घटनाएं इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जब भी स्त्री के चरित्र को चोट पहुंचाई जाएगी, तब समाज में युद्ध होना अनिवार्य है।

कॉलरिज स्वीकार करते हैं कि– "यदि ज्ञान पुरुषवादी है तो संवेदना स्त्रीवादी है और इन दोनों तत्त्वों के मिश्रण से ही सर्जना के क्षण उत्पन्न होते हैं।"[32]

सभ्यता के आदिमकाल से स्त्री और पुरुष दोनों ने मिलकर समाज की रचना की है, परंतु समय के बदलाव के कारण समाज में स्त्री संवेदना के लिए कोई जगह नहीं बची है स्त्री जिसे भारतीय समाज में पुरुष की अर्धांगिनी का दर्जा दिया गया है उसी आधे अगं की अस्मिता को आज नकारा जा रहा है। इस बात की पुष्टि जॉन स्टुअर्ट मिल अपनी पुस्तक 'स्त्रियों की पराधीनता' में स्पष्ट रूप से उल्लेखित करते हैं– "19 वीं शताब्दी में समाज में आमतौर पर लोग स्वतंत्रता और न्याय व्यवस्था की बुद्धि संगत अवधारणा को आत्मसात कर चुके हैं लेकिन स्त्री पुरुष संदर्भ में उनकी यह धारणा है कि शासन करने, निर्णय लेने और आदेश देने की स्वाभाविक क्षमता केवल पुरुषों में ही होती है।"[33]

---

[32] रेखा कस्तवार, स्त्री चिंतन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण: 2006,पृष्ठ संख्या, 21

[33] जॉन स्टूअर्ट मिल, स्त्रियों की पराधीनता, राजपकमल प्रकाशन 2016 पृष्ठ संख्या, 26

इस बात से स्पष्ट हो जाता है कि स्त्री के अस्तित्व को नकारा ही नहीं गया अपितु उसे पुरुषसत्तात्मक समाज द्वारा धूमिल करने की पूरी कोशिश भी की गई। यह षड़यंत्रकारी कार्य पुरुष बहुत ही चालाकी से युगों से करता आ रहा है। क्योंकि उसने स्त्री को हमेशा से घर परिवार की चार दीवारी के भीतर ही बंद करके रखा है जिसके कारण स्त्री स्वयं अपना अस्तित्व नहीं तलाश पाती परंतु आज वर्तमान युग में स्त्री अपने संघर्ष से अपनी अस्मिता और स्वतंत्रता की तलाश के लिए घर की चारदीवारी को लांघकर बाहर आने का साहस कर रही हैं। जिसमें वह अपने सभी स्वरूपों का पूर्णता के साथ प्रयोग भी करती है चाहे वह माँ हो, पत्नी हो, प्रेयसी हो, बहन हो या फिर सखी ही क्यों न हो। सभी रूपों का उपयोग कर वह अपनी पहचान बनाने के लिए अब समाज के सामने खुलकर आने में संकोच नहीं कर रही और यही स्वरूप हम धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में देखने का प्रयास करेंगे।

उनके कथा साहित्य में जहाँ सांस्कृतिक सौंदर्य बोध और बारीकी कलात्मक बोध दिखाई देता है। वहीं समाज के भीतर घुटन और खुली हवा में साँस लेने की अकुलाहट भी नजर आती है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में सामाजिक कुरीतियों में फंसे निम्न मध्यवर्गीय जीवन की घुटन का चित्रण किया, इसलिए वे अपने कथा साहित्य में 'मानव जीवन' और 'समाज जीवन' साथ-साथ 'स्त्री जीवन' को समग्रता में देखने का प्रयास करते हैं। यही कारण है कि वे एक ओर जहाँ स्त्री को आदर्श रूप में प्रस्तुत करते हैं तो वहीं दूसरी ओर उस आदर्श को तोड़कर एक नया प्रतिमान बनाने की जद्दोजहद करते हुए दिखाई देते हैं इस बात को हम उनके  कथा साहित्य के स्त्री पात्रों में प्रत्यक्ष रूप से देख सकते हैं जिसमें आदर्शवादी स्त्री पात्र के ढांचे को तोड़कर एक नई सोच रखने वाली आधुनिक स्त्री पात्र की संरचना को निर्मित करने का प्रयत्न भी करते हैं। परंतु वह आधुनिक स्त्री की परिणीति भारतीय समाज के परिप्रेक्ष्य में ही करते हुए नजर आते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों व कहानियों के सभी स्त्री पात्रों की दशाओं का यथार्थ रूप में वर्णन ही नहीं किया, अपितु उस यथार्थ के पथ में आने वाली बाधाओं को  तोड़ने का कार्य भी अपने कथा साहित्य के स्त्री पात्रों के माध्यम से ही किया है क्योंकि स्त्री उनकी लेखनी की ताकत के साथ औजार भी है। या यूँ कहें कि उनके समग्र साहित्य का आधार स्त्री है। कथाकार यह भली-भांति जानता

है कि स्त्री के बिना किसी भी कला साहित्य की रचना पूर्ण नहीं होती वह अधूरी ही रहती है इसीलिए उसने अपने साहित्य की प्रत्येक विधा में स्त्री को ही केंद्र में रखा है। "समझदार पुरुष, जो संसार का रुख पहचानते हैं और यह जानते हैं कि स्त्रियों को अधिक दिन तक अंधेरे में नहीं रखा जा सकता वह तो स्त्रियों की उन्नति का स्वागत करते हैं और उन्हें सहयोग प्रदान करते हैं।"[34]

इसी बात की पुष्टि के लिए उदाहरण स्वरूप उनके उपन्यास 'गुनाहों का देवता' को देख सकते हैं– पम्मी में पश्चिम का प्रेम चित्रित है जिसमें सुविचारित जांच पड़ताल, तर्क और अति औपचारिकता है। इसके विपरीत सुधा में भारतीय प्रेम कायम है जो किया नहीं जा सकता अनायास विकसित हो जाता है। वह निर्विकार घटित होता है। पम्मी का वासना विरोध वास्तव में उसकी गहरी स्वीकृति है। इधर सुधा के मौन प्रेम में वासना का अस्तित्व ही नहीं है। सेक्स, प्रेम और विवाह पर चंदर की पम्मी से जो बातचीत होती है। वह वास्तव में बहस नहीं बल्कि धर्मवीर भारती का एक पश्चिम सभ्यता से प्रभावित स्त्री के विचार हैं। इस समूची बहस में पम्मी द्वारा प्रस्तुत किए गए विचार एवं आधुनिक तर्क-वितर्क करने वाली स्त्री का दृष्टिकोण उपस्थित होता दिखाई देता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि धर्मवीर भारती स्त्री का एक आदर्शात्मक ढांचा बनाते हैं फिर उसे तोड़ते हैं और पुनःआधुनिकता के रंग में रंग कर एक नया ढांचा तैयार करते हैं। परंतु यह आधुनिक ढांचा भारतीय परिवेश से प्रभावित होता है।

नीचे अब हम धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री के विभिन्न रूपों का क्रमानुसार वर्णन करेंगे।

उन्होंने अपने कथा साहित्य में स्त्री के विभिन्न स्वरूपों को विभिन्न धरातल के माध्यम से व्यक्त किया है जैसे– सामाजिक धरातल, पारिवारिक धरातल, आर्थिक धरातल, व्यक्तिगत धरातल और वैचारिक धरातल। इन सब धरातलों से इतर, स्त्री को बदलते समय के साथ उसके बदलते रूपों में भी दिखाया गया है जैसे– स्वतंत्र, स्वावलंबी, स्वाभिमानी, निर्भीक, साहसी के साथ-साथ बलिदान की देवी,

[34] संपादक डॉक्टर संजय गर्ग,स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, सामयिक प्रकाशन,दूसरा संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 94

परंपरावादी व संस्कारवादी के स्वरुप  में भी दिखाया गया है। कथाकार धर्मवीर भारती की सुविख्यात कहानी 'गुलकी बन्नो' में जहाँ एक तरफ सती निर्भीक साहसी होने के साथ आत्मनिर्भर स्त्री है तो वहीं दूसरी तरफ बन्नो बलिदान की देवी, त्याग की मूरत के साथ-साथ परंपरावादी और संस्कारवादी स्त्री के रूप में दिखलाई देती है। अत: कथाकर ने सभी प्रतिनिधि स्त्रियों के विचार और संस्कार नितांत भारतीय ही रखे हैं। एकाध स्त्री को छोड़ दिया जाए तो सभी स्त्रियाँ भारतीय रंगों में सराबोर नज़र आएंगी।

**2.1 चयनित कथा साहित्य में सामाजिक धरातल**–

मानव समाज के मन मस्तिष्क का प्रेरक और पोषक होता है। मनुष्य जिस तरह के समाज में पलता बढ़ता है, उसका मन मस्तिष्क भी वैसे ही विकसित होता है। स्वस्थ समाज में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। इसलिए समाज व्यक्ति को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारणों में से एक है। दूषित समाज में पलने वाले व्यक्ति का मन चंचल हो जाता है। अतःसमाज के विषय में यह लोकोक्ति बहुत प्रचलित है– 'जैसा देश वैसा भेष' समाजवादी परिवेश जैसा होता है वैसा ही वहाँ का मानव होता है। इसलिए अच्छे समाज में पलने वाला व्यक्ति अच्छे संस्कारों का होता है।

सामाजिक संघटन, व्यक्तित्व निर्माण एवं राष्ट्रीय स्तर पर मूल्यों का अपना महत्त्व है। व्यक्ति समाज के प्रतिफल मूल्यों को जीवन में उतारकर एकरूपता पैदा करता है और उसी एकरूपता के कारण वह अपने  को बृहद समाज का अंग मानकर संतोष धारण करता है। यही मूल्य आदर्श व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करते है।

धर्मवीर भारती का कथा साहित्य समाज प्रधान साहित्य है जिसके अंतर्गत मुख्यता समाज एवं अंतर जगत के अनेक धरातलों का वर्णन किया गया है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में समाज की विभिन्न समस्याओं पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। समाज की शायद ही ऐसी कोई समस्या हो जिस पर कथाकार ने विचार न किया हो।

नारी समाज का एक अभिन्न अंग है यह कथाकार शुरू से ही जानता था इसलिए कथाकार ने समाज को नर-नारीमय कहा है। नारी, समाज और साहित्य का दर्पण है। अपने कथा साहित्य में भारती ने समाज में नारी के बहुआयामी व्यक्तित्व को अपने अनुभव युक्त दृष्टिकोण से सामाजिक धरातल के विभिन्न रूपों में प्रस्तुत किया है इसीलिए सामाजिक धरातल पर नारी का वर्गीकरण करना आवश्यक हो गया है।

भारतीय समाज में नारी का स्थान सदैव ऊँचा माना गया है क्योंकि समाज को नारी आगे बढ़ाती है एक नारी ही समाज को ऊँचे से ऊँचे स्थान पर बैठा सकती है और नीचे से नीचे स्तर पर ला सकती है। प्रेमचंद ने भी नारी का महत्त्व बताते हुए कहा है कि– "नारी अपने सहज सरल रूप में प्रेम समर्पण एवं विश्वास के गुणों से विभूषित है वह पुरुष की हिंसा वाणी को शांत करने वाली शीतल धारा है। विश्व की मूल कल्याणकारी शक्ति है स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितनी प्रकाश अंधेरे से।"[35]

मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन का आदर्श स्त्री ही है। वह इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है। इन सभी गुणों के होते हुए भी उसे समाज में अपना स्थान बनाने के लिए संघर्ष करना पड़ता है नारी को न जाने किन-किन परिस्थितियों व समस्या से होकर गुजरना पड़ता है। इनमें मुख्य समस्या आर्थिक स्वतंत्रता की है। अर्थ के अभाव से ही स्त्री को अशिक्षा, बाल विवाह, अनमेल विवाह, दहेज आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता है। प्राचीनकाल से देवदासी, पर्दाप्रथा, विधवा, अंतर्जातीय विवाह आदि समस्याएं हमारे सामने आती हैं जिसमें विधवा विवाह तथा अंतर्जातीय विवाह की समस्या आज भी देखने को मिलती है। इस पुरुष प्रधान समाज में नारी के व्यक्तित्व की स्वतंत्रता अत्यधिक आवश्यक है। परिस्थितियों के घेरे में ही फंसकर अच्छे आचरण वाला व्यक्तित्व अपनी अच्छाई को खोकर बुरे आचरण करने वाली स्त्री बन जाती है।

---

[35] स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास ,संपादक डॉक्टर संजय गर्ग, सामयिक प्रकाशन ,दूसरा संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या, 94

धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में विभिन्न सामाजिक धरातलों के द्वारा नारी के विभिन्न रूपों का विश्लेषण किया है जैसे– अनमेल विवाह, दहेज, अशिक्षा, बाल विवाह, जातिवाद, देवदासी व विधवा विवाह।

### 2.1.1 अनमेल विवाह/बेमेल विवाह

अनमेल विवाह की समस्या का जन्म दहेज की समस्या से होता है। आर्थिक कमजोरी के कारण कई परिवार दहेज नहीं जुटा पाते जिससे लड़की का विवाह अच्छे घराने में नहीं होता इसी कारण कभी-कभी लड़की के परिवार वाले उनका विवाह दिहाजु या तिहाजु लड़के से करा देते हैं। जो लड़की के योग्य बिल्कुल नहीं होता है। ऐसे विवाह को ही अनमेल विवाह कहते हैं।

समाज में अनमेल विवाह के कारण स्त्री का हर्ष बाहर खुलकर व्यक्त नहीं हो पाता और वे अंदर ही अंदर घुटती चली जाती है। जिसके चलते मानसिक द्वंद्व उसके भीतर सदैव बना रहता है। यह विवाह स्त्री की दासता और शोषण का एक ओर रूप प्रकट करता है। यह एक प्रकार की भयानक सामाजिक कुरीति है। सम्राट कथाकार प्रेमचंद ने अपने उपन्यास 'निर्मला' में अनमेल विवाह की विभीषिका को दिखाकर उस समय के समाज में चल रहे स्त्री शोषण को उजागर किया है। इसी का भयावह रूप आगे चलकर कथाकार धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में दिखलाई देता है। कुंवारी बेटी को घर में बैठाए रखना दुनिया का सबसे बड़ा पाप माना जाता है और यह हमारे समाज की सबसे पुरानी सड़ी हुई मानसिकताओ में से एक है। जिसे आजादी के इतने वर्षों बाद भी भारत के निम्नमध्य वर्गीय परिवारों में देखने को मिलती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास में दिखाई देता है। धर्मवीर भारती ने जमुना के माध्यम से उक्त समस्या का वर्णन किया है। जमुना के माता-पिता अपनी पुत्री के संरक्षण का भार दूसरे को सौंप कर स्वयं मुक्त होना चाहते थे इसलिए जब जमुना का विवाह कहीं नहीं हो पाया तो अंत में लोगों व समाज के डर से उसका विवाह एक अधेड़ उम्र के पुरुष से करा देते है।

जो लगभग जमुना के पिता की उम्र के बराबर था। इस दृश्य को उजागर करके लेखक समाज की विरूपता का यथार्थ चित्रण करता है।

जमुना के विवाह की बात रामोबीबी लाती हैं। वह जमुना की माँ से कहती है– "हमारा भतीजा घर का अकेला, न सास न ससुर, न नन्द न दिखानी, कौनो किचाइन नाहीं है घर में। नाना ओके नाम पर जागीर लिख गये हैं। घर में घोड़ा है, तांगा है। पुराना नामी खानदान है।"[36] रामोबीबी की यही बात जमुना की माँ को भा गई। वह अपने पति से जमुना के ब्याह की बात करती हैं पर उसका पति कहता है– "उसकी दो बीवियां मर चुकी हैं तिहाजू लड़का है। मुझसे चार-पाँच बरस छोटा होगा।"[37] लेकिन जमुना की माँ पुरुष की श्रेष्ठता बताती हुई कहती है कि "लड़का तिहाजू है तो क्या हुआ। मरद और दीवार जितना पानी खाते हैं उतना ही पुख्ता होते हैं।"[38] यहाँ यह बात स्पष्ट हो जाती है कि एक उम्र के बाद समाज में स्त्री केवल माता-पिता के सर का भार होती है। और इस भार को उतारने के लिए माता-पिता स्वयं अपनी पुत्री का जीवन कष्टों से भर देते हैं। केवल समाज के डर से माता-पिता यह भूल जाते हैं कि पुत्री उनकी अपनी है न कि समाज की। कथाकार ने आगे चलकर कुँवारी स्त्री के प्रति समाज का विकृत चेहरा हमारे सामने दिखलाने की भरपूर कोशिश की है– "हे राम-राम! बिटिया की तो बाढ़ तो देखो। जैसन् नाम तैसन् करनी। भादों की जमुना अब फाटी पड़ता है, एकर बियाह उआह कहूं नाहीं तय कियो?"[39]

जमुना के भार को उतारने के लिए माता-पिता उसका विवाह उससे तीन गुना बड़े पुरुष से करने से भी नहीं डरते हैं। जमुना के अनमेल विवाह में परिवार की आर्थिक स्थिति जिम्मेदार है साथ ही साथ लड़के के घर की आर्थिक संपन्नता एवं लड़की को कुँवारे बिठाकर रखने की समस्या भी जिम्मेदार है। कोई भी माँ ऐसा न करे, लेकिन मनुष्य सामाजिक परिस्थितियों का दास है। वह विवश है, उसे मजबूरी के कारण ऐसा करना पड़ता है। धर्मवीर भारती ने अनमेल विवाह को दो रूपों में दिखाया है। एक तो 'उम्र' के रूप

---

[36] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या28

[37] वहीं, पृष्ठ संख्या 28

[38] वहीं, पृष्ठ संख्या 29

[39] वहीं, पृष्ठ संख्या 28

में दूसरा 'मन न मिलने' के रूप में। एक ओर जहाँ जमुना और उसके पति में उम्र का कोई मिलाप न था तो वहीं दूसरी ओर तन्ना और लिली के अनमेल विवाह में विचारों का कोई मेल न था क्योंकि तन्ना और लिली उम्र के एक ही पड़ाव पर थे परंतु लिली अधिक पढ़ी लिखी, घमंडी, बात-बात पर मायके चली जाने वाली स्त्री थी। और तन्ना कम पढ़ा-लिखा होने के साथ वह डरपोक किस्म का आदमी था। इस बात को अच्छे से समझाने के लिए कथाकार ने स्पष्ट कहा है कि– "तन्ना की जिंदगी अजब-सी थी। पत्नी ज्यादा पढ़ी थी, ज्यादा धनी घर की थी, ज्यादा रूपवती थी, जो हमेशा ताना दिया करती थी।"[40]

धर्मवीर भारती के दूसरे उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में समाज को भीतर ही भीतर खोखला करती हुई इस समस्या को दिखलाया है। डॉक्टर शुक्ला, सुधा की राय लिए बिना उसका विवाह कैलाश के साथ तय कर देते है। परंतु शुरुआत में सुधा शादी करने के लिए मना कर देती है पर बाद में चंदर के कहने पर विवाह के लिए तैयार हो जाती है– "मैं जैसी हूँ, मुझे वैसे ही क्यों नहीं रहने देते! मैं किसी से शादी नहीं करूंगी। मैं पापा के पास रहूंगी। शादी को मेरा मन नहीं करता, मैं क्यों करूँ?"[41] कई बार अनमेल विवाह सामाजिक दबाव से नहीं पारिवारिक दबाव के कारण भी किए जाते हैं। "अगर अब तुम इनकार कर देती हो तो एक तरफ पापा को तुमसे धक्का पहुंचेगा, दूसरी और मेरे प्रति उनके विश्वास को कितनी गहरी चोट लगेगी। हम उन्हें क्या मुँह दिखाने लायक रहेंगे भला! तुम क्या चाहती हो? आज अपनी थोड़ी सी भावुकता के पीछे तुम सभी की जिंदगी चौपट करने के लिए तैयार हो? यह तुम्हें शोभा नहीं देता है। क्या कहेंगे पापा।"[42] सुधा का भी अनमेल विवाह कैलाश से हुआ। कैलाश अच्छे घर का पढ़ा-लिखा खुले विचारों का युवक है। इस तरह से सुधा के योग्य है फिर भी सुधा भावात्मक स्तर पर उससे संतुलन नहीं बना पाती है क्योंकि सुधा भावुक लड़की है और कैलाश जमीनी स्तर से जुड़ा हुआ व्यावहारिक लड़का। इस संदर्भ में कैलाश चंदर से कहता है– "इन जैसी लड़की के लिए तुम कोई कवि या कलाकार या

[40] वहीं, पृष्ठ संख्या 45

[41] धर्मवीर भारती, गुनाहों के देवता, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, तिहतरवां संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 106

[42] वहीं ,पृष्ठ संख्या 106

भावुक लड़का ढूंढते तो ठीक था मेरे जैसा व्यावहारिक और नीरस राजनीतिक इनके उपयुक्त नहीं हैं।"[43] कैलाश ऐसी लड़की से विवाह करना चाहता था। जो राजनीति में उसका हाथ पकड़ कदम से कदम मिलाकर साथ काम करें लेकिन सुधा को राजनीति में जरा भी दिलचस्पी नहीं थी दोनों की इच्छाओं, रुचियों और स्वभाव में बहुत अंतर था यही कारण था कि सुधा कैलाश के व्यक्तित्व को नहीं अपना पा रही थी और दिन प्रतिदिन वह घुटती चली जा रही थी।

कई दफा परिवार की मान मर्यादा के लिए स्त्रियों को अनमेल विवाह स्वीकार करना पड़ता है। फिर चाहे वह आजीवन उस विवाह बंधन में घुटती ही क्यों न रह जाएँ। धर्मवीर भारती ने अनमेल विवाह की सच्चाई को अपने साहित्य में उजागर किया था जो आज के समाज में भी प्रत्यक्ष रूप से देखने को मिल जाता है।

### 2.1.2 दहेज

हमारे समाज में दहेज समस्या एक ऐसा दीमक है जो समाज को अंदर ही अंदर से खोखला कर रहा है। यह समस्या राष्ट्र के माथे पर कलंक के टीके की तरह है। हिंदू समाज में दहेज वैवाहिक जीवन के लिए सबसे बड़ा अभिशाप है। दहेज न देने के कारण कई महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता रहा है और आज भी यह समस्या मुँह बाये खड़ी है इस समस्या के कारण महिलाओं को जिंदा जलाया जाना कोई नई बात नहीं है। इसी समस्या के कारण शिशु हत्या, अनमेल विवाह जैसी समस्याएं समाज में जन्म लेती हैं। इस समस्या पर कई कथाकारों ने अपनी कलम चलाई है। जिसमें धर्मवीर भारती भी शामिल हैं। वे समाज की विद्रूपताओं से भली-भांति रूप से परिचित थे। उन्होंने इन समस्याओं का चित्रण अपने 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास की दूसरी दोपहर के अनध्याय के अंतर्गत किया है। इसका उल्लेख कथाकार ने माणिक मुल्ला और श्याम की बातचीत द्वारा प्रस्तुत किया है। माणिक ने जब जमुना की कहानी सुनाई तो श्याम के उत्तर में इस समस्या की गहरी जड़ों को दिखाया है,कि किस तरह उस समय भी दहेज नामक

[43] वहीं, पृष्ठ संख्या 223

कुप्रथा चारों फेली हुई थी– “कहो श्याम, इस कहानी को सुनकर दुखी क्यों हो गए? क्या तुम जमुना को जानते थे? तो श्याम रूंधे हुए गले से बोला, नहीं मैं जमुना को नहीं जानता,लेकिन आज नब्बे प्रतिशत लड़कियाँ जमुना की परिस्थिति में हैं वे बेचारी क्या करें! तन्ना से उसकी शादी हो नहीं पाई,उसके बाप दहेज नहीं जुटा पाये।”[44]आगे भी कथाकार ने जमुना की माँ और रामोबीबी की बातचीत में इस समस्या के भयावह रूप को दिखाया है। रामोबीबी जमुना की माँ से पूछती है, जमुना का ब्याह तय क्यों नहीं किया? तब जमुना की माँ जवाब में कहती है कि– “बिरादरी  वाले दहेज बहुत माँग रहे हैं, कहीं जात-परजात में दे देने से तो अच्छा है कि माँ बेटी गले में रस्सी बाँधकर कुए में गिर पड़े।”[45] इस कथन से स्पष्ट होता है कि दहेज किस तरह समाज को धीरे-धीरे अपने भीतर जकड़ता जा रहा है। दहेज की समस्या के साथ जात-पात की समस्या भी इससे जुड़ी हुई है।

इसी उपन्यास में लिली की माँ दहेज के कारण अपनी एकलौती पढ़ी-लिखी लड़की का विवाह कम पढ़े लिखे तथा एक डरपोक पुरुष तन्ना से कर देती है, परंतु भविष्य में आगे चलकर उसका जीवन पूरा नष्ट हो जाता है और अंत में उसे अपनी माँ के पास आना पड़ता है। ‘गुनाहों का देवता’ उपन्यास में बिनती के ससुर ने दहेज के लालच में लड़के का पंगु होना छुपाया था।

डॉ. शुक्ला बिनती की शादी गर्मियों की बजाए जाड़े में करना चाहते थे लेकिन बिनती के ससुर इसके लिए एक शर्त पर राजी हुए की “अगहन तक हर तीज-त्यौहार पर लड़के के लिए कुर्ता-धोती कपड़ा और ग्यारह-बारह रुपये नजराना जाएगा और अगहन में ब्याह हो रहा है, तो सास-नन्द और जिठानी के लिए गरम साड़ी जाएगी और जब-जब दुबेजी गंगा नहाने प्रयागराज आयेंगे, तो उनका रोजाना एक थाल भोजन, कपड़े और एक स्वर्णमंडित जौ से होगा।”[46] डॉक्टर शुक्ला ने दूबे जी की सारी माँग पूरी की तब वह विवाह के लिए राजी हुए। इस तरह धर्मवीर भारती ने अपने उपन्यासों के माध्यम से दहेज की समस्या को उजागर किया है। दहेज की यह समस्या आज भी हमारे समाज में ज्यों की त्यों बनी हुई है।

---

[44] धर्मवीर भारती,सूरज का सातवां घोड़ा,प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या 26

[45] वहीं पृष्ठ संख्या 28

[46] धर्मवीर भारती ,गुनाह का देवता,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण ,पृष्ठ संख्या 73

### 2.1.3 जातिवाद

"जाति व्यवस्था जाने कितने सालों से हिंदुस्तान में कायम है।"[47]

समाज में दहेज की तरह जात-पात ने भी अपनी जड़े बहुत मजबूत कर रखी हैं। जाति व्यवस्था ने हमारे समाज को संकीर्णता के दायरे में बाँधकर रख दिया है। इसी कारण छुआछूत, खानपान और शादी ब्याह के झगड़े खड़े हो गए हैं कि आज तक हम उससे छुटकारा नहीं पा सके हैं। यहाँ तक कि आदमी को देखने से पहले उसकी जात को देखा जाता है। आज भी यह बहुत ही गर्व से कहा जाता है कि मेरी जाति उसकी जाति से ऊँची है। दुनिया में चारों ओर जहाँ देखो जाति का झगड़ा लगा हुआ ही रहता है। कबीर हो या प्रेमचंद सभी के साहित्य में जात-पात की समस्या को गहराई से देखा जा सकता है। कबीरदास का यह दोहा आज भी प्रासंगिक है–

"जाति पाती पूछे नहीं कोई
हरि को  भेज सो हरि का होई।"[48]

कथा साहित्य में प्रेमचंद ने भी जातिवाद पर अपनी कलम चलाई है। और धर्मवीर भारती ने भी अपने कथा साहित्य में इस समस्या को चित्रित किया है। 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास में जमुना के माध्यम से जातिवाद की समस्या का उल्लेख हुआ है। जमुना की माँ, तन्ना से जमुना का ब्याह इसलिए नहीं करना चाहती है क्योंकि तन्ना छोटी जात का है– "तन्ना थोड़े नीच गोत का था, और जमुना का खानदान सारी बिरादरी में खरे और ऊँचे होने के लिए प्रख्यात था"[49]

समाज में जातिवाद की खाई बहुत गहरी है कि हिंदू समाज भी इससे नहीं बच सका। कथाकार ने अपने दूसरों उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में जात-पात की समस्या को बहुत की गहराई से दिखाया है। उपन्यास

---

[47] धर्मवीर भारती ,गुनाह का देवता,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण ,पृष्ठ संख्या, 45

[48] https://hi.quora.co

[49] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा,प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या, 19

में डॉक्टर शुक्ला और चंदर के माध्यम से जातिवाद को चित्रित किया है। एक ओर जहाँ जातिवाद की आलोचना करते हुए चंदर कहता है–"रोटी बेटी की कैद थी। रोटी की कैद तो क़रीब-क़रीब टूट गई, अब बेटी की कैद थी…ब्याह-शादियाँ भी दो-एक पीढ़ी के बाद स्वच्छन्दता से होने लगेंगी।"[50]

वहीं दूसरी ओर डॉ. शुक्ला जैसे लोग शिक्षित ही नहीं एक प्रोफ़ेसर होते हुए भी जातिवाद को मानते हैं और कहते हैं कि– "अगर ऐसा होगा तो बहुत गलत होगा। इसमें जातिगत पतन होता है। ब्याह-शादी को कम से कम मैं भावना की दृष्टि से नहीं देखता, यह एक सामाजिक तथ्य है। और उसी दृष्टिकोण से हमें देखना चाहिए।"[51]

आगे चलकर स्वयं कथाकार ने जाति व्यवस्था के हिमायती डॉक्टर शुक्ला में हृदय परिवर्तन करवा कर जातिवाद की दीवार को धराशायी किया है क्योंकि जब सुधा मृत्यु सैया पर लेटी अपनी मृत्यु का इंतजार कर रही होती है, तब डॉक्टर शुक्ला को अपनी गलती का पता चलता है कि यदि उन्होंने जाति के भंवर में फँसकर सुधा का विवाह कैलाश से न कराकर चंदर से कराया होता तो आज उनकी प्यारी सुधा की यह हालत न होती। इस परिस्थिति में उनको जीवन का कटु अनुभव होता है और वे स्वीकार करते हैं कि हमारी जाति और विवाह की परम्परा पूरी तरह सड़ गई है और उसमें बदलाव लाने की आवश्यकता है।

धर्मवीर भारती के द्वारा जाति व्यवस्था के दुष्परिणाम की ओर संकेत करने का उद्देश्य यह है कि वह जातिव्यवस्था में जकड़े समाज की संकीर्ण सोच में बदलाव लाना चाहते थे और अपनी इसी वैचारिकता के अनुसार उन्होंने जातिव्यवस्था और समाजिक परंपराओं की प्रशंसा करने वाले डॉक्टर शुक्ला को अंत में इस निष्कर्ष पर पहुंचते हुए दिखाया है कि "हम लोग जिंदगी से दूर रहकर सोचते हैं कि हमारी सामाजिक संस्था स्वर्ग है यह तो जब उनमें धंसों, तब उनकी गंदगी मालूम होती है।"[52]

---

[50] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ,तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 45

[51] वहीं, पृष्ठ संख्या 45

[52] वहीं, पृष्ठ संख्या 187

### 2.1.4 अशिक्षा

स्त्री जीवन की जटिल समस्याओं का मूल कारण उसका अशिक्षित होना है। उस समय समाज में स्त्री शिक्षा के प्रति उपेक्षा का भाव  था। स्त्री का शिक्षा से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था। धर्मवीर भारती के उपन्यास 'सूरज का सातवां घोड़ा' में जमुना अशिक्षित थी। उसका मूल काम था सस्ते किस्म की प्रेम कहानियां और नए फिल्मों के गाने की किताब पढ़ना। जमुना के पति की मृत्यु के बाद उसे इतने बड़े महल में रहने के लिए रामधन टांगे वाले जैसे लोगों की सहायता लेनी पड़ी थी, क्योंकि वह अशिक्षित थी और इतने बड़े कारोबार की देखभाल करने में असक्षम भी थी।

कथाकार की कहानी 'बंद गली का आखिरी मकान' में बिरजा अशिक्षित होती है। उसे अपने तथा अपने दोनों बेटों की जिम्मेदारी मुंशी जी पर डालनी पड़ती है जिससे उसके छोटे बेटे से कई बार कहा सुनी भी होती रहती है। उसके छोटे बेटे हरिराम ने बड़े कड़े स्वर कहा– "माई रे तू हमारी जबान न खुलवाँ समझी। बड़ी मुंशीयाइन बनी है तो बन।"[53]

'कुल्टा','यह मेरे लिए नहीं' आदि ऐसी अन्य कहानियाँ शामिल हैं जिनमें स्त्री के अशिक्षित होने पर उसे अपना सम्पूर्ण जीवन मजबूरन पुरुष के हाथों में सौंपना पड़ता है।

### 2.1.5 देवदासी

आजादी से पहले भी और आजादी के बाद भी स्त्री के साथ एक गंभीर समस्या जुड़ी रही है वह देवदासी प्रथा है। देश स्वतंत्रता हो गया परन्तु स्त्री  को इस समस्या से निजात नहीं मिल सकी। पुराने समय में किसी व्यक्ति की संतान न हो या संतान जन्मते ही मर जाए तो वह व्यक्ति देव स्थान पर मनौती करता है कि उसको स्वस्थ संतान होने पर वे अपनी पहली संतान देव मंदिर में अर्पित करेंगे। ऐसी धार्मिक कर्मकांड या परंपरा के अनुसार उस संतान को देव मंदिर में भगवान का दास बनकर रहना पड़ता था। आजीवन ईश्वर का दास बनकर या देवदासी बनकर उसको अपना जीवन वही  व्यतीत करना पड़ता था। और धर्म

---

[53] पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस की कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 281

के ठेकेदार अपनी स्वार्थ पूर्ति के लिए उनसे मनचाहा सारा काम कराते थे। देवदासियाँ उनके अधीन होकर अनैतिक अपमानित और कलंकित जीवन व्यतीत करने को विवश हो जाती थी। कथाकार भी अपने समय की इस ज्वलंत समस्या को अनदेखा नहीं कर सका। उसने इस कुप्रथा पर अपनी कलम चलाई व देवदासी के कष्ट पूर्ण जीवन को सार्थक जमीन अपनी कहानी में दी। 'अमृत और मृत्यु' कहानी की अंजलि व 'पूजा' कहानी की पूजा ने देवदासी बनकर भी प्रेम को ही महत्वपूर्ण मानती है। पूजा तथा अंजलि का प्रेम समाज स्वीकार नहीं कर सका। क्योंकि समाज यह मानता है कि देशवासियों को प्रेम करने का कोई अधिकार नहीं होता है। देवदासी के जीवन का केवल एक ही आधार होता है। पत्थर के देवता। अंत में पूजा अपने पिता के आदेश अनुसार देवदासी बन जाती है। "आज मेरी सोलहवी वर्षगांठ पर यह मालूम हुआ कि मेरे पिता की इच्छा मुझे देवदासी बनाने की है।"[54]

### 2.1.6 विधवा जीवन

धर्मवीर भारती ने स्त्री जीवन की विभिन्न समस्याओ में 'विधवा जीवन की समस्या' को भी एक महत्वपूर्ण समस्या के रूप में देखा है। इस प्रथा ने स्त्री के अमानुषिक शोषण के साथ ही कई सामाजिक और नैतिक समस्याओं को जन्म दिया है। यह स्त्री जीवन की ऐसी विडंबना है जो निर्दोष स्त्री को अनेक दोषों का मूल बना देती है। भारतीय समाज में विधवाओं के साथ दोहरा शोषण होता है। एक ओर उसे समस्त मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया जाता है और दूसरी ओर उसके चरित्र की इतनी सूक्ष्म और पैनी दृष्टि से देख-रेख की जाती है जैसे भारतीय समाज का सारा अस्तित्व ही उसके चरित्र पर टिका हो। हमारे देश में विधवाओं की समस्या समाज के लिए चुनौती है। विधवाओं का जीवन समाज की दृष्टि से एक बोझ सा बन गया है। वाकई वह एक उपेक्षित वस्तु मानी जाती है। परिवार में विधवा स्त्री को कोई स्थान नहीं दिया जाता है। धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में विधवाओं के जीवन को दिखाया

[54] वहीं, पृष्ठ संख्या, 161

है। कि कैसे वह अकेले ही अपने परिवार व समाज की जिम्मेदारी का निर्वाह करती है। ‘सूरज का सातवां घोड़ा’ उपन्यास में लिली की विधवा माँ, लिली का विवाह अकेले ही करती है। और वहीं जमुना विधवा होने के बाद अपने पति की हवेली की देखरेख स्वयं ही करती है। दोनों अपना विधवा जीवन अपने नियमानुसार जीना चाहती हैं परंतु समाज उन्हें ऐसा करने नहीं देता है।

## 2.2 चयनित कथा साहित्य में आर्थिक धरातल

आजादी से पूर्व पूँजीवाद ने व्यक्ति संबंधों, सामाजिक संबंधों, मानव मूल्य व चरित्र के ऊपर अपना प्रभाव दिखाना आरंभ कर दिया था। पूंजीवादी युग में अर्थ जीवन के केंद्र में आ गया था। और व्यक्ति समाज इसी को धुरी मानकर इसके ईद-गिर्द चक्कर लगा रहा था। क्योंकि समाज में आर्थिक धरातल एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इसी कारण से धर्मवीर भारती ने इसका ध्यान रखते हुए अपने कथा साहित्य में स्त्री के आर्थिक धरातल पक्ष को स्पष्ट किया है। वर्तमान समय में ‘अर्थ’ मानव का मूल आधार बना हुआ है। इसलिए अर्थ जीवन का अनिवार्य मेरुदंड बन गया है। गुण और योग्यता का मापदंड भी आर्थिक मूल्य पर निर्भर है। धन के आगे सारे नाते रिश्ते अर्थहीन हो जाते हैं। धन ने मानवीय भावों को पराभूत कर दिया है।

इसका आभाव जीवन की विषमताओं, विसंगतियों को जन्म देता है। इस पूंजीवादी चक्रव्यूह में जीवन बर्बाद  हो रहा है। आज की सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह अर्थव्यवस्था पर निर्भर है। जिसके मूल में पूंजीवाद ही है। जिसके पास अर्थ की ताकत है वही आज श्रेष्ठ है। अर्थ ने आज मानव जाति पर इतना अधिकार हासिल कर लिया है कि उसके राज पर किसी का आक्रमण करना असंभव ही है। इसी सन्दर्भ में डॉ. बिंदु अग्रवाल कहती हैं कि “मार्क्स और एंजेल्स ने भी मानव आचरण में अचेतन मन की प्रेरणाओं के महत्त्व को स्वीकार करते है, किंतु उन्होंने इन अनुभूतियों और प्रेरणाओं का संबंध आर्थिक धरातल से माना है, पर आर्थिक धरातल से उनका संबंध वही होता है जो फूल का मिट्टी से होता है।”[55]

[55] बिंदु अग्रवाल,हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण,राधाकृषण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या45

आज़ादी के बाद तेजी से बदलते समय का सामाजिक मूल्यों में आर्थिक संपन्नता का भी बहुत बड़ा योगदान रहा है। आर्थिक धरातल पर हुए वर्गीकरण में निम्न, मध्य और उच्च वर्ग की मनःस्थिति के मूल में व्यक्ति की सफल मानसिकता का आधार यही रहा है। एक निम्नवर्गीय स्त्री की मानसिकता, मध्यवर्गीय स्त्री की मानसिकता और उच्चवर्गीय स्त्री की मानसिकता शत-प्रतिशत भिन्न होगी। धर्मवीर भारती ने स्त्री रूपों में भी आर्थिक धरातल की भिन्नता को दिखाया है।

अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष ये चार मनुष्य जीवन के पुरुषार्थ माने गए हैं। इनमें से आधुनिक काल में अर्थ का महत्त्वपूर्ण स्थान है क्योंकि समाज जैसे-जैसे विकास की ओर बढ़ता गया वैसे-वैसे अर्थ की जड़ें और भी मजबूत होती गई और साथ ही यह मानव के विकास के लिए भी मूलभूत आधार बन गयी। जिसमें नारी के सर्वांगीण विकास में व्यक्तिगत और सामाजिक स्वतंत्रता के साथ-साथ आर्थिक स्वतंत्रता भी महत्त्वपूर्ण हो गई। आर्थिक स्वतंत्रता के बिना स्त्री का विकास असंभव है। स्त्री के पास आर्थिक स्वतंत्रता न होने के कारण ही पुरुष वर्ग ने उस पर अपना अधिकार और वर्चस्व जमाया हुआ है। आर्थिक रूप में स्त्री युगों से समाज में पिता, पति और पुत्र पर निर्भर रहती आ रही है। स्त्री को घर में और समाज में अपनी वैयक्तिक स्वतंत्रता से हाथ धोना पड़ता है। कथाकार ने 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास में बुआ की अपनी आर्थिक स्वतंत्रता के न होने के कारण उसको वैयक्तिक स्वतंत्रता खोनी पड़ती है। महेसर दलाल अपने मतलब के समय एक औरत को अपने घर लाता है और बच्चों से उसे बुआ कहलवाता है परंतु जब बुआ ने महेसर दलाल से किसी बात पर विरोध जताया तो उसे वह घर से धक्के मार कर निकाल देता है। "महेसर दलाल ठहरे इज्जतदार आदमी, उन्हें बेटे-बेटियों का ब्याह निबटाना है और वे यह ढोल कब तक अपने गले बांधे रहेंगे।"[56]

आधुनिक युग में मनुष्य के जीवन की सभी परिस्थितियां, चाहे फिर वह खुशी हो या दुख सभी कुछ अर्थ पर ही निर्भर करता है। जमुना, तन्ना से विवाह करना चाहती थी किंतु पैसे के कारण उसका विवाह जमुना से नहीं हो सका। जमुना का विवाह बूढ़े जमींदार से हो जाता है और वह अपने ससुराल में खुश भी

---

[56] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ उनतालीसवां संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या 43-44

रहती है। जमुना जब अपने मायके आकर अपनी सखियों से कहती है– "खयाल इतना रखते हैं कि मैं आयी तो ढाई सौ रुपए जबरदस्ती ट्रंक में रख दिये। कहा, हमारी कसम है जो इसे न ले जाओ।"[57]

समाज में मध्य और निम्नवर्गीय लोगों की प्रत्येक समस्या अर्थ से जुड़ी हुई है। अर्थ की कमी के कारण स्त्री के जीवन में सारी समस्याएं और विडंबनाए उत्पन्न होती है। यदि स्त्री के प्रेम को अर्थ के संदर्भ में देखें तो अर्थ की ताकत प्रेम को नष्ट कर देती है। इसी को लेकर माणिक मुल्ला कहते हैं– "जब मैं प्रेम पर आर्थिक प्रभाव की बात करता हूं तो मेरा मतलब यह है रहता है कि वास्तव में आर्थिक ढांचा हमारे मन पर इतना अजब सा प्रभाव डालता है कि मन की सारी भावनाएं उससे स्वाधीन नहीं हो पाती और हम जैसे लोग जो न उच्चवर्ग के हैं न निम्नवर्ग के, उनके यहाँ रूढ़ियां, परंपराएं, मर्यादाएं भी ऐसी पुरानी और विषाक्त हैं कि कुल मिलाकर हम सभी पर ऐसा प्रभाव पड़ता हैं कि हम यंत्र मात्र रह जाते हैं। हमारे अंदर उदार और ऊंचे सपने खत्म हो जाते हैं और एक अजब सी जड़ मूर्च्छना हम पर छा जाती है।"[58]

इस तरह हम आर्थिक व्यवस्था में फंसकर जमुना की तरह बन जाते हैं। क्योंकि हम परिस्थितियों से विद्रोह न करके समझौता कर लेते हैं। "लेकिन हम यह विद्रोह नहीं कर पाते। अन्ततः नतीजा यह होता है कि जमुना की तरह हर परिस्थिति में समझौता करते जाते हैं।"[59]

'गुनाहों का देवता' उपन्यास में भी बिनती का विवाह भी अर्थ की कमी के कारण ही रुक जाता है, जिससे बिनती की माँ बिनती को इसका कारण बताती हुई उसे दिन भर कोसती रहती है। "हमें मालूम होता कि ई मुंह-झौंसी हमके ऐसी नाच नचइहै तौ हम पैदा होतै गला घोंट देइत।…कुलबोरनी…कुलच्छनी ..अभागिन!"[60] आज भी अर्थ के अभाव में ऐसी परिस्थितियां देखने को मिलती रहती है। जिसके करण बेचारी स्त्रियां बेगुनाह होते हुये भी गुनाहगार बन जाती हैं।

[57] वहीं, पृष्ठ संख्या, 29

[58] वहीं, पृष्ठ संख्या, 38

[59] वहीं, पृष्ठ संख्या, 38

[60] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या, 68

धर्मवीर भारती ने अपने उपन्यास 'गुनाहों का देवता' के अंत में स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता पर जोर देते हुए सुधा के माध्यम से व्यक्त किया है कि– "गेसू तुम बहुत बहादुर हो! तुमने अपने को बेचा नहीं, अपने पैरों पर खड़ी हो, किसी के आश्रय में नहीं हो। कोई खाना कपड़ा देकर तुम्हें खरीद नहीं सकता गेसू...।"[61] यहाँ पर भारती ने गेसू को आर्थिक रूप से मजबूत दिखाकर यह बताने का प्रयास किया है कि स्त्रियों के जीवन में आर्थिक स्वतंत्रता कितनी जरूरी है।

अर्थ के अभाव में स्त्री की स्थिति दिन प्रतिदिन दयनीय होती जा रही है। जिसमें हम कथाकार धर्मवीर भारती की कहानियों में से कुछ कहानियों– मसलन कुलटा, एक बच्ची की कीमत, गुलकी बन्नो, सावित्री नंबर दो, मेरे लिए यह नहीं हैं, बंद गली का आखिरी मकान और आश्रम आदि में देख सकते हैं। आर्थिक कमजोरी के कारण स्त्री आत्मनिर्भर नहीं रह पाती। वास्तव में यदि समाज को आगे बढ़ना है तो पहले स्त्रियों को आर्थिक रूप से मजबूती प्रदान करनी होगी। जैसे कथाकार ने गेसू को प्रदान की है।

## 2.3 चयनित कथा साहित्य में पारिवारिक धरातल–

> "नारी! तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास-रजत-नग पगतल में,
> पीयूष-स्रोत-सी बहा करो जीवन के सुंदर समतल में।"[62]

समाज कई इकाईयों से मिलकर बना है। जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण इकाई परिवार है। संसार भर में इस इकाई का केंद्र स्त्री को ही माना गया है। स्त्री के बिना परिवार संस्था का कोई महत्त्व ही नहीं है। क्योंकि सभ्यता के आदिकाल से ऐसा माना गया है कि बिना स्त्री के घर-परिवार पूरा नहीं होता है साथ ही वह परिवार सुखी भी नहीं होता है क्योंकि स्त्री घर परिवार में अपनी भूमिका विभिन्न रूपों में अदा करती है। डॉ. रामेश्वर नारायण ने परिवारिक फलक पर स्त्री की मुख्य भूमिका की ओर संकेत करते हुए लिखा

---

[61] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या, 252

[62] जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, लज्जा सर्ग, पृष्ठ संख्या, 34

है– "भारतीय नारी का केन्द्रीय परिवेश पारिवारिक स्वीकार किया गया है। जिस समाज में कन्या का जन्म अभिशाप की तरह स्वीकृति होता है। उसी समाज के पारिवारिक परिवेश में नारी के विभिन्न रूप भी अपनी विशिष्टता के कारण उल्लेखनीय रहे हैं। कन्या, पत्नी, माता, बहू, सास, ननद और भाभी जैसी अनेक पारिवारिक उपत्तियों के रूप में नारी ने परिवार संस्था को भावात्मक आधार दिया है। विश्व के कई क्षेत्रों में मातृवंशीय परिवारों की परंपरा है लेकिन साहित्य का परिवर्तित विधान यही पुष्ट करता है कि भारतीय परिवार में नारी अपने विभिन्न संबंधों के बीच अनेक समस्याओं और विविशताओं को झेलती रही है। आवश्य ही स्त्री की यह विभिन्न भूमिका आज भी हम सभी के समक्ष मौजूद है।"[63]
समाज में स्त्री की अभिव्यक्ति जिन विभिन्न रूपों में होती है। उनमें उसका पारिवारिक संबंध उसके विवेक बुद्धि कार्य कुशलता और उनेक के बीच शांति के साथ सफलतापूर्वक चलने की एक कड़ी कसौटी है। भारतीय परिवार में स्त्री बहुधा एक परिवार से दूसरे अपरिचित परिवार में और एक स्थान और वातावरण से दूसरे स्थान और वातावरण में जाती है। जहाँ उसे परिवार वर्ग को अपने स्वभाव और भावनाओं से परिचित कराने और उनकी कठिनाइयों तथा संवेदनात्मक भावों को समझने में ही कुछ समय लग जाता है। यदि परिवार तथा उसमें प्रवेश पाने वाली स्त्री एक-दूसरे की भावना और कठिनाइयों को समझकर उसके अनुसार चलने लगती है तो परिवार की सुख शांति निश्चित रहती है। अन्यथा किन्हीं विपरीत कारणों के चलते परिवार उजड़ भी जाता है। परिवार में ही स्त्री का आत्मसम्मान और स्वाभिमान शामिल रहता है। स्त्री के पारिवारिक संबंध के विषय में सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में देखने को मिलता है। जिसमें उनका पूरा ध्यान रखा गया है। विवाह के अवसर पर वधु को आशीर्वाद देने का मंत्र है। इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है–

"सम्राज्ञी श्रव्सुरे भव सम्राज्ञी श्रव्श्रवां भव ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु।"[64]

[63] डॉ.रामेश्वर नारायण, साहित्य में नारी विविध संदर्भ, नचिकेत प्रकाशन, दिल्ली 1990 ,पृष्ठ संख्या 77

[64] ऋग्वेद

इसका भावार्थ इस प्रकार है तुम ससुर की सम्राज्ञी हो, सास की सम्राज्ञी हो, नन्दों की सम्राज्ञी हो और देवरों के बीच सम्राज्ञी के समान प्रतिष्ठित हो। स्त्री के लिए एक ऐसे परिवार की कल्पना की गई है जिसमें उसका स्थान सम्मान पूर्ण होता है और जहाँ वह घर की रानी मानी जाती है। शायद इसीलिए परिवार की धुरी स्त्री के चारों ओर ही रहती है। एक चार दीवारी मकाननुमा घर को वह परिवार में तब्दील करती है। परिवार की सुख संपत्ति स्त्री ही है। यदि स्त्री नहीं तो परिवार की नींव नहीं रखी जा सकती। ऐसा माना जाता है कि जिस परिवार में स्त्रियों का आदर होता है, वहाँ देवताओं का वास होता है और जहाँ उनका निरादर होता है वहाँ परिवार के लोगों द्वारा की गई सभी प्रकार की पूजा-पाठ निष्ठा धार्मिक कर्मकांड सभी धराशायी हो जाते हैं। इसलिए समाज में स्त्री को सम्मान पूर्वक आदर देना चाहिए।

मुख्य रूप से स्त्री का प्रमुख स्थान घर-परिवार ही होता है। परिवार का मेरुदंड स्त्री होती है। क्योंकि परिवार की अर्थनीति को निर्धारित, नियमित और संचालित करने में उनकी भूमिका अनिवार्य रूप से दिखाई पड़ती है। परिवार के भीतर वह गृहस्वामिनी है। परिवार का समस्त आर्थिक ढांचा स्त्री की प्रबंध पटुता, समझ बूझ और परिस्थिति को देखकर चलने की शक्ति पर निर्भर है। संतोष और बुद्धिमान स्त्री आर्थिक कठिनाइयों में अपने परिवार को संभालने का गुण भी अपने भीतर रखती है। परंतु समय के बदलाव के बहाव में स्त्रियों से उनकी यह पारिवारिक सत्ता भी छीनने का षड्यंत्र पुरुषवादियों ने कर डाला। जिसकी व्याख्या राजकिशोर अपने शब्दों में कुछ इस प्रकार करते हुए नज़र आते हैं– “परिवार का केंद्र स्त्री थी, उसके द्वारा संतान की पहचान कायम की जा सकती थी, परिवार की मुख्य होती थी और उसकी आज्ञा सबको शिरोधार्य करनी पड़ती थी। लेकिन जब मनुष्य ने ज्ञान और गतिविधियों का विस्तार किया, तो एक नए ढंग से समाज बनाया जिसके केंद्र में संचय था, संचय पर पुरुष ने कब्जा कर लिया, क्योंकि वह स्त्री की जैविक सीमाओं से मुक्त था और शारीरिक बल में भी उससे श्रेष्ठ था। जिसकी लाठी उसकी भैंस का सिलसिला एक बार शुरू हो गया, तो फिर इसने रुकने का नाम नहीं लिया।”[65]

[65] राजकिशोर,स्त्री और पुरुष कुछ पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, दूसरा संस्करण 2000, पृष्ठ संख्या 31

आज भी यह परिस्थिति देखी जाती हैं की परिवार चलाने के लिए स्त्री को पुरुष का मोहताज होना पड़ता है। यह स्थिति बहुत ही दुखदाई स्थिति है जिसमें घर की स्वामिनी होते हुए भी वह गुलाम सी प्रतीत होती है।

समाज में सारे धर्म नीति नियम सभी कुछ स्त्री के लिए ही बने हैं। पुरुष के लिए न कोई नियम है न कोई धर्म है यदि पुरुष कोई अनुचित कार्य करता है तो उस पर समाज की ओर से कोई भी दृष्टि नहीं जाती परंतु इसके विपरीत वही कार्य कोई स्त्री कर ले तो उसे समाज कई विचित्र नामों से पुकारने लगता है जैसे– कुल्टा, पतीता और न जाने कितनों विशेषणों से उसे कलंकित करता है। यहाँ समाज अपना दोहरा चरित्र दिखाता है एक ओर स्त्री को कलंकित करता है तो दूसरी और उसे घर परिवार की लक्ष्मी देवी कहता है। पर तब तक ही जब तक वह पति के सारे अत्याचारों जुल्मों को बिना विरोध किए सहती जाती है। तब तक ही वह देवी और लक्ष्मी है अन्यथा वह एक कुल्टा है। कथाकार ने अपने कथा साहित्य में कुलटा कहानी में स्त्री के इसी बेबस रूप को एक व्यापक कैनवस पर चित्रित करने का प्रयास किया है। कुलटा कहानी में लाली ने विधावा होने के बाद दूसरा विवाह किया था। “तोहमत! जानते हो विधवा है यह। दूसरा विवाह किया है।”[66] उसने अपने पहले पति द्वारा प्राप्त अपने ही बेटे को पत्र लिखा था परंतु इस बात पर लोगों ने संदेह किया कि– “कौन है जिसके खत के लिए इतनी चिंता कि दूसरे के हाथ न पड़ जाए। किसे खत भेजने की इतनी बेताबी है ईतवार भी काटे नहीं कट रहा”[67]

उसी स्थान पर लाली का पति नंदराम की उम्र 45 वर्ष थी और उसके दो बच्चे भी थे उसे न तो समाज के ठेकेदार कुछ कहते और न उनके बच्चे। नंदराम राम ने भी तो दूसरा विवाह किया था परंतु यह विवाह समाज की नजर में पुरुष के लिए सम्मान की बात थी लांछन की बात तो लाली के लिए थी जो कुल्टा थी जिसने दूसरा विवाह किया था। “जब नंदराम खाना खाकर अपनी मूछों को पोछता हुआ और दांत खोदता हुआ बाहर चबूतरे पर जा बैठता तो दोनों बच्चे लाली की शिकायत करते हैं और कभी-कभी

---

[66] पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 88

[67] वही,पृष्ठ संख्या,89

नंदराम भी कहता है, कमीनी है बदजात!"[68] इतना कहने पर भी जब नंदराम का मन नहीं भरता है तो लाली पर गुर्राते हुए आगे कहता है कि–"मैं कहें देता हूं कि घर में इन्हीं बच्चों के आराम के लिए लाया हूं! तुझे माँ बनकर रहना हो तो रहो वरना याद रख... भूखों मार रही थी, अब चर्बी चढ़ा गयी है न! हड्डी हड्डी तोड़ डालूंगा।"[69] इतने ही में नंदराम का बड़ा लड़का पुत्तन गोद के लड़के को धीरे से चुटकी काट लेता और वह चीखकर रो पड़ता है। लाली जब तक उसे दौड़कर चुप कराती, तब तक नंदराम लाली पर चिल्ला कर कहता– "हरामजादी अपनी संतान को तो खाए जाती है दूसरे के पेट की क्या ममता होगी?"[70]

समाज में सौतेली माँ के प्रति ऐसी धारणा है कि सौतेली माँ, सौतेले बच्चों को अपना स्नेह और वात्सल्य नहीं दे सकती है जो उन्हें अपनी वास्तविक माँ से प्राप्त होता है। इसका कारण नयी माँ के मन में समाई ईर्ष्या नहीं बल्कि उसकी अयोग्यता है। किंतु पुरुषवादी सोच से ग्रसित उसका दूसरा पति लाली पर तो अपनी संतान के देखभाल न करने का दोष लगाता है। बच्चे भी नंदराम के व्यवहार से प्रभावित होकर उसी तरह लाली को चोट पहुंचाते रहते हैं। इन सब परिस्थितियों को देखकर ऐसा लगता है कि स्त्री अपना सब कुछ परिवार में देकर भी अकेली एकांत जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर है चाहे फिर वह वास्तविक माँ हो या सौतेली माँ। माँ का इतना करने पर भी पुरुष कभी उसकी करुण वेदना को नहीं समझ पाता। माँ अपने भीतर की सारी ममता अपने घर परिवार को समृद्ध बनाने में लगा देती है फिर भी उस पर दोषारोपण लगातार किया जाता है। इसलिए स्त्री हमेशा एक अपराध बोध में अपना जीवन व्यतीत करती। उसके भीतर न जाने कितनी उथल-पुथल मची रहती है जो कभी समाप्त होने का नाम ही नहीं लेती। यदि कभी यह उथल-पुथल समाप्त होने का सोचे तो समाज द्वारा उसे याद दिलाया जाता है कि वह एक स्त्री है जिसका जीवन सदैव पीड़ा दर्द से भरा रहेगा। शायद स्त्री की नियति में यही लिखा हुआ है कि वह अपना सब कुछ अर्पण कर के भी खुशी नहीं पा सकती। आजादी के इतने वर्षों बाद

---

[68] वहीं, पृष्ठ संख्या, 89

[69] वहीं, 89

[70] वहीं, 89

आज के औद्योगिक परिवेश में भी स्त्री की ममता मयी छवि इसी दुख दर्द से गुजर रही है। ऐसा लगता है कि समाज में कितने भी परिवर्तन हो जाए परंतु माँ के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

नंदराम दूसरे विवाह का पाप भी दूसरों पर ही मढ़ता हुआ कहता है कि– "मुझे तो समाज के मंत्री जी ने अच्छा फंसा दिया! कहाँ बुढ़ापे में यह पाप गले पड़ा मेरे!"[71] जब नंदराम ने शादी की थी तब नहीं जानता था कि बुढ़ापे में शादी कर पाप कर रहा है। बस उसे मौका मिल जाए तो वह लाली पे लगे बरसने। वह कभी लाली को कहता कि अपने बच्चे को बस प्यार दुलार और देखभाल करती। दूसरे के बच्चे पर ममता नहीं आती और कभी मौका मिलते ही उसे ममताहीन बनाकर बदचलन साबित करने पर तुला रहता है। नंदराम स्त्री की सत्ता को नकारता है। इस सन्दर्भ में प्रसाद ने अपनी कृति कामायनी में नारी की सत्ता के महत्त्व को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है– "तुम भूल गए पुरुष तत्व के मोह में कुछ सत्ता है नारी की समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की"[72]

पुरुष जिस माँ की गोद में पल कर आज समाज का ठेकेदार बन गया है वह अपने पुरुष तत्त्व के मोह में भूल गया है कि स्त्री अपने भीतर कुछ गुण जन्म से लेकर पैदा होती है। इसमें करुणा, संवेदना, भावना, ममता और वात्सल्य जैसे न जाने कितने ही और गुण उसके भीतर विद्यमान रहते हैं। यदि स्त्री में ये सभी गुण न हो तो एक सभ्य समाज का ढांचा टूटकर धराशायी हो जाएगा। क्योंकि विश्व में जो कुछ भी गतिशील है, उनके मूल में स्त्री ही होती है।

लाली जब खाना बना रही होती है तो नंदराम उस समय लाली को गाली देते हुए कहता है कि "पकवान बना रही हरामजादी। कहा था न बच्चों को तैयार कर देना। लेकिन माँ का दिल हो तब ना! अपनी गोद का बच्चा गला फाड़-फाड़कर मरा जा रहा है। जाने किसे खिलाएगी पकवान। एक को तो खिला खिलाकर मार डाला।"[73] लाली पकवान बनाकर अपने बेटे श्याम मनोहर लाल को भेजती है। इस पर नंदराम ने लाली की बहुत पिटाई की और उस तमाशे को देखने वालों ने समझा लाली ने अपने प्रेमी को

---

[71] वहीं,पृष्ठ संख्या, 89

[72] जयशंकर प्रसाद,कामायनीलोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010,इड़ा सर्ग, पृष्ठ संख्या, 53

[73] प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ तीसरा संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या 90

पत्र लिखकर बुलाया है और पकवान उसी को दे दिए और उसी का पत्र आया था जिस पर नंदराम ने उसे मार रहा है और वह उसका विरोध कर रही थी और सहायता के लिए याचना भी कर रही थी। कि वह बेटे का पत्र आया था जिसमें बेटे ने लिखा था– “मैं इमतहान बाद आऊंगा पर ठहरूंगा नहीं, कियोकी कि आप सादी कर लिया है। आपका पुत्र श्याम मनोहर लाल।”[74]

जीवन का ये कैसा चक्र है जिन बच्चों के लिए लाली ने दूसरा विवाह किया आज उन्हीं ने लाली पर दोष लगा दिया कि आपने शादी कर ली है। परिवार में समस्याओं का सामना केवल स्त्री को ही करना पड़ता है, क्योंकि स्त्री भावुक होती है और भावना में डूबकर कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहती, जिससे दूसरों को, मुख्य रूप से परिवार वालों को किसी भी प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़े। इसलिए वह पुरुष के हर फैसले को सिर माथे पर रख सब कुछ मन ही मन में सह लेती है। जयशंकर प्रसाद ने अपनी कृति कामायनी में नारी के इसी रूप को व्याख्यायित करते हुए लिखा है कि– “आँसू से भीगे आँचल पर मन का सब कुछ रखना होगा तुमको अपनी स्मृति रेखा से यह संधिपत्र लिखना होगा।”[75] स्त्री अपने हृदय पर सभी वज्रपात जैसे कष्टों को आराम से सह लेती है और अपना ध्यान किसी और कार्य पर लगाने लगती है जैसे कि धर्मवीर भारती की दूसरी कहानी ‘आश्रम’ की शांता अपने घर-परिवार वालों से द्वंद्व न कर आश्रम में रहने चली जाती है। शांता ने प्रकाश नामक युवक से प्रेम किया था और वह उसी से विवाह भी करना चाहती थी। परंतु शांता की माँ यह नहीं चाहती थी। इसलिए अंत में शांता ने घर से भागकर बनारस में प्रकाश से शादी की तथा वह उसके बच्चे को जन्म भी देना चाहती थी। इसलिए जब उसके ममेरे भाई कुन्नी ने शांता से पूछा– “दीदी तुम कहाँ गई थी। तो शांता ने सिंदूर का लाल सिंधोरा दिखाकर उनसे कहा, तुम्हारा घर, तुम्हारी नौकरी, तुम्हारी गिरस्ती तुम्हें मुबारक, लेकिन मैं क्वारी नहीं मरूंगी नहीं नहीं, नहीं। सुहाग लूंगी, तो तुम्हीं से और लेकर रहूंगी देख।”[76] उसके मामा तथा माँ को पता चलने पर उन्होंने उसका विरोध किया एक दिन शांता कुन्नी से रुंधे गले से बोली “इन लोगों ने ही छीन

---

[74] वहीं, पृष्ठ संख्या, 93

[75] जयशंकर प्रसाद कामायनी,लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, लज्जा सर्ग, पृष्ठ संख्या, 34

[76] पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां,सांस कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ तीसरा संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या,332

लिया, प्रकाश का अंश ले आई थी। मैं सब लांछन सहकर भी उसे नहीं खोना चाहती थी पर इन लोगों ने छीन लिया। ठीक है मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं।"[77] शांता आश्रम में रहने लगती है और भगवान की शरण में आपना पूरा जीवन व्यतीत करती है। वह अपने माँ के पास भी नहीं जाना चाहती और उसे माँ से शिकायत भी नहीं थी। स्त्री अपनी जिंदगी को जला कर दूसरों को सुख दे सकती है। कुछ ऐसी स्थिति हमें धर्मवीर भारती के उपन्यास 'गुनाहों के देवता' में भी देखने को मिलती है। जब डॉक्टर शुक्ला के द्वारा सुधा का विवाह चंदर से न कराकर कैलाश से करा दिया जाता है तो सुधा मन ही मन घुटन का शिकार हो जाती है और जब वह अपने पिता के घर लौटती है तो उसके पिता को यह है अंदाजा हो जाता है कि आज सुधा के गर्भपात के बाद और मरणासन्न अवस्था की जो यह दयनीय हालत है वह उनके एक फैसले के कारण हुई है। सुधा ने पिता के फैसले को सिर माथे पर रखकर अपने आत्मिक प्रेम को त्याग कर परिवार की खातिर विवाह तो कर लिया परंतु अंत में उसे मृत्यु शैय्या ही प्राप्त हुई। स्त्री के जीवन की यह कैसी नियति है? मृत्यु सैया पर लेटकर भी वह अपने परिवार वालों की चिंता से मुक्त नहीं हो पाती। "मैं मर जाऊं तो रोना मत, चंदर तुम ऊँचे बनोगे तो मुझे बहुत चैन मिलेगा। मैं जो कुछ नहीं पा सकी वह शायद तुम्हारे ही माध्यम से मिलेगा मुझे। और देखो, पापा को अकेले दिल्ली में न छोड़ना... लेकिन मैं मरूंगी नहीं, चंदर... यह नरक भोगकर भी तुम्हें प्यार करूंगी... मैं मरना नहीं चाहती, जाने फिर कभी तुम मिलो या न मिलो, चंदर... उफ कितनी तकलीफ है चंदर!"[78] सुधा के इस अंतिम संवाद से स्पष्ट हो जाता है कि स्त्री सदैव अपने परिवार वालों के लिए चिंता ग्रस्त रहती है फिर चाहे उसके जीवन में कितने ही घोर संकट क्यों न आ जाए।

आज के भारतीय समाज में भी स्त्री से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने अस्तित्व की पहचान को पूर्णता मिटाकर परिवार की सुख समृद्धि बढ़ाएं चाहे उसके लिए स्त्रियों को कितना ही कष्ट क्यों न सहना पड़े। यह एक दुखदायी स्थिति है जिसे हमें बदलने की बहुत आवश्यकता है। अन्यथा स्त्री को सदैव

[77] पुष्पा भारती,धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां,सांस कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या, 333

[78] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ, तिहतरवां संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या, 255

पुरुषवादी सोच के तले ही अपना पूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ेगा फिर चाहे स्त्री का जीवन बने या बिगड़े उससे पुरुष सत्तात्मक समाज को तनिक भी फर्क नहीं पड़ेगा, फर्क पड़ेगा तो स्वयं स्त्री के सम्पूर्ण जीवन पर इसलिए जितनी शीघ्र हो सके इस व्यवस्था को बदलना होगा।

## 2.4 चयनित कथा साहित्य में व्यक्तिगत धरातल पर स्त्री के विभिन्न स्वरूप–

सच्चिदानंद ब्रह्म को एक शब्द के माध्यम से विश्लेषित किया जा सकता है किंतु स्त्री के स्वरूप को समझने के लिए उसके विभिन्न रूपों का विश्लेषण करना अनिवार्य है। क्योंकि स्त्री एक ही समय सीमा में कई स्वरूपों के भीतर कार्य कर रही होती है। इसलिए यदि स्त्री को जानना है तो उसके भीतर विद्यमान सभी स्वरूपों को समझना होगा। और इन्हीं रूपों को हम आगे देखेगें।

### 2.4.1 माँ–

हमारे भारतीय साहित्य में स्त्री की उदात्तता का चरम दर्शन उसके मातृत्व रूप में ही होता है। माता पिता के संबंध में माता का स्थान ही प्रथम आता है। भारतीय समाज में मातृत्व रूप स्त्री की सर्वोच्च प्रतिष्ठा इसी से स्पष्ट है कि यहाँ का प्रत्येक मनुष्य देव अधिदेव को अपना सर्वस्व मानते हुए सर्वप्रथम उसकी वंदना माता रूप में ही करता है। माँ को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ माना गया है। निसंदेह माँ भारतीय मनीषियों के जीवन में श्रद्धा गौरव की प्रतीक है। जयशंकर प्रसाद स्त्री के भीतर की माँ के ममत्त्व किरदार को इस प्रकार दिखाते हैं–

“इस अर्पण में कुछ और नहीं केवल उत्सर्ग छलकता है, मैं दे दूं और न फिर कुछ लूं इतना ही सरल झलकता है।”[79] माँ संसार की सबसे बड़ी साधना है सबसे बड़ी त्याग की मूरत है, और माँ ही सबसे बड़ी अर्पण शक्ति की सूरत है।

[79] जयशंकर प्रसाद, कामायनी,लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010, लज्जा सर्ग, पृष्ठ संख्या, 33

स्त्री के स्वरूपों में सबसे महत्वपूर्ण माँ का रूप है, क्योंकि स्त्री की पूर्णता और सार्थकता मातृत्व रूप को ग्रहण करने में ही है। सीमोन द बोउवार अपनी पुस्तक 'स्त्री उपेक्षिता' में लिखती हैं कि "मातृत्व का दायित्व ग्रहण करके स्त्री अपने शारीरिक भाग्य को पूर्ण करती है। उसकी शारीरिक रचना ही जीवन के निरंतरता को बनाए रखने की दृष्टि से की गयी है।"[80] भारतीय परम्परा-संस्कृति में भी माँ के स्थान को सर्वोपरि माना गया है।

"मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव!"[81]

समस्त संसार में माँ का स्थान गुरु और पिता दोनों से पहले लिया जाता है। माँ एक ऐसी शक्ति है जो पूरे संसार रूपी परिवार को जोड़े रखने का कार्य करती है। माँ के बिना समाज में प्रत्येक मनुष्य अपने आप में अधूरा है। माँ के मन के भीतर पूरे ब्रह्मांड का सार छिपा हुआ होता है। समस्त साहित्य जगत व ऐतिहासिक जगत में माँ ही सर्वोच्च है। वह इस जगत की जननी व सृष्टि की रचयिता भी है और साथ ही जीवन की निरंतरता को बनाए रखने का माध्यम भी माँ है। राजेंद्र यादव अपनी पुस्तक 'आदमी की निगाहों में औरत' में माँ के रूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं कि– "नारी प्रकृति है जीवन को निरंतरता देने का माध्यम है, माँ जो हमे संरक्षण देती है।"[82]

माँ का प्रेम सदैव भावना के लिए अवकाशित रहता है। उसका प्रेम सदैव दूसरों को बड़ा बनाता है इसलिए माँ का स्नेहिल बंधन तोड़ना असंभव है। वह परिवार के रूप में हमें सांस्कृतिक आलंबन प्रदान करती है। माँ हमें जन्म देती है। उसका सारा जीवन त्याग-तपस्या कष्टों से भरा रहता है फिर भी वह सबके लिए करूणायुक्त बनी रहती है। क्योंकि वह जानती है कि दूसरों को कष्टों से मुक्त रखने में ही विश्व निरंतरता से चल सकता है। यहाँ पर हम अज्ञेय की कविता 'दुःख सबको माँजता है' को माँ के संदर्भ में देख सकते हैं–

"दुःख सब को माँजता है और

[80] सीमोन द बोउवार ,अनु-प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता,हिन्द पाकेट बुक्स प्रकाशन, नवीन संस्करण 2002,नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 233

[81] आशारानी, नारी शोषण आईने और आयाम, प्रकाशन नेशनल पब्लिशिंग हाउस,नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982, पृष्ठ संख्या 211

[82] राजेंद्र यादव, आदमी की निगाहों में औरत, राजकमल प्रकाशन पेपर बैक्स,पांचवां संस्करण 2019,पृष्ठ संख्या 14

चाहे स्वयं सबको मुक्ति देना वह न जाने ,

किन्तु-जिन को माँजता है

उन्हें यह सीख देता है कि सबको मुक्त रखें।"[83]

आइए अब हम धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में स्त्री के माँ स्वरूप पर बात करें।

धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के माँ स्वरूप को ही सर्वोच्च स्थान दिया है। जैसे कि हम ऊपर बता चुके हैं कि माँ शब्द को समस्त संसार के समाज में बहुत ही आदर, सम्मान एवं प्रेम से लिया जाता है। जिसमें ममता की भावनाओं का भंडार होता है। माँ का उसके बच्चों से सबसे पवित्र संबंध होता है। जहाँ माँ का बच्चों के प्रति अधिक स्नेह रहता है, वहीं पिता का स्नेह कम रहता है। माँ घर में रहकर स्नेह, ममता, प्रेम, वात्सल्य देती है। माँ की शिक्षा के बिना संतान कभी सुयोग्य नहीं बन सकता। बिना सुयोग्य संतान के इस देश का उद्धार संभव नहीं है।

धर्मवीर भारती एक स्त्री के प्रति अपनी भावनाएं स्पष्ट करते हुए उसे प्रेममयी, सहनशील माँ के रूप में देखते हैं वो स्त्री को जन्म से ही माँ मानते आए हैं। वह कहते हैं कि स्त्री माँ हो या ना हो उसमें मातृत्व का गुण अवश्य होता है इसलिए धर्मवीर भारती ने स्त्री की गहराइयों में सदैव मातृत्व का रूप ही देखा है। स्त्री की उदात्तता का चरम फलक उसके माँ रूप में होता है। माता-पिता में से समाज में माता शब्द का स्थान ही प्रथम होता है। माँ को स्वर्ग से भी श्रेष्ठ माना गया है। जिसके लिए वाल्मीकि ने रामायण में कहा है–

"जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।"[84]

मातृत्व स्त्री की सबसे बड़ी शक्ति है, जो एक शक्ति है, एक सृजक है, नियन्ता है, मानव शिशु की पालनहारा है, सृष्टि के विकास क्रम को आगे बढ़ने वाली है।

---

83 https://www.hindisamay.com

84 शांतिकुमार स्याल ,नारीत्व, आत्माराम एंड संस प्रकाशक, प्रथम संस्करण 1998, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 18

नारी की चरम परिणति मातृत्व रुप से ही होती है। मनुष्य के चरित्र निर्माण की सूत्रधारिणी माँ है, पिता नहीं। यहाँ तक की प्रथम गुरु भी माँ ही होती है इसलिए विश्व में सभी मनुष्य के अनुसार स्त्री के विविध रूप में स्त्री का मातृत्व रूप का महत्त्व, पवित्र और सर्वाधिक गौरवशाली है। उनका शरीर साधारण हाड़ मास का बना हुआ है परंतु उनका व्यक्तित्व स्नेह एवं ममता से निर्मित होता है। जो इस जगत में और किसी के पास नहीं होता है। जननी का वात्सल्य केवल अपनी संतान तक ही सीमित न रहकर किसी भी बालक-बालिका के लिए उमड़ सकता है। भारतीय संस्कृति परंपरा में परिवार का दारोमदार माँ के कंधों पर ही होता है। वेदों में स्पष्ट रूप से माँ को पृथ्वी स्वरुपा कहा गया है। माँ पृथ्वी के समान ही संतान धारण करती है। माँ के हृदय में संतान के प्रतिकोमल व सहानुभूति प्रेम होता है। संतान के लिए अपना पूरा जीवन न्यौछावर कर देती है। जिसमें उसका वर्तमान और भविष्य दोनों शामिल होता है। यहाँ तक कि अपने सपनों को छोड़ बच्चों के भविष्य की चिंता करती है। उनके भविष्य की चिंता जितनी माँ को होती है शायद ही उतनी परिवार में किसी और अन्य सदस्य को होती हो। बच्चों के पालन पोषण खाने-पीने शिक्षा आदि के विषय में जागृत रहती है क्योंकि वह जानती है कि अच्छी शिक्षा के बिना बच्चों की उन्नति नहीं हो सकती। बच्चों की सबसे अधिक चिंता माँ को होती है यह चिंता लड़कियों के विषय में और अधिक बढ़ जाती है।

माँ ही बच्चों के मन की बातों को अच्छी तरह समझ सकती है। खासकर लड़कियों की इसलिए 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास में जमुना के मन की बात उसकी माँ ही समझती है और तन्ना से विवाह करने के लिए माँ मान जाती है, परंतु उसका विवाह तन्ना से नहीं होता है। जमुना शादी के बाद अपनी संतान के विषय में ही सोचने लगती है और अपने पिता की जरूरत के समय में भी पैसे की मदद नहीं करती है– "माँ ने कहा है बेटी उधार दे दो! तो ताली माँ के हाथ में देकर बोली, देख लो न, संदूक में दो चार दुअन्नियां पड़ी होंगी। लेकिन जमुना ने सोचा आज बला टल गई तो टल गई, आखिर बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी। इतना तो पहले लूट गया है, अब अगर जमुना भी माँ-बाप पर लुटा दे तो अपने

बाल-बच्चों के लिए क्या बचाएगी? अरे माँ बाप कै दिन के हैं? उसे सहारा तो उसके बच्चे देंगे न!"[85] यह परिस्थिति स्पष्ट करती है कि स्त्री सदैव अपनी संतान के लिए सोचती है। फिर चाहे अपने माता-पिता को ही क्यों न कष्ट देना पड़े। उस समय केवल स्त्री माँ का दायित्व ही निभा रही होती है। वह अपनी संतान के आगे किसी को नहीं देखना चाहती है। इस बात की पुष्टि के लिए कथाकार ने उपन्यास में आगे माणिक मुल्ला से कहलवाया है कि "हमेशा याद रखो कि नारी पहले माँ होती है तब और कुछ! इसका जन्म ही इसलिए होता है कि वह माँ बने। सृष्टि का कार्य आगे बढ़ावे। यही उसकी महानता है। तुमने देखा कि जमुना के मन में पहले अपने बच्चों का ख्याल आया।"[86] माँ को पृथ्वी स्वरूपा और पिता से भी बड़ा माना है। माता के स्वरूप में एक ओर धैर्य, त्याग, ममता और स्नेह का परम उत्कर्ष देखते हैं तो दूसरी ओर उसके पुत्रवती होने को भी अनिवार्य मानते हैं। जमुना अपनी  वात्सल्य भावना से प्रेरित होकर संतान की प्रगति और उन्नति का उपाय ढूँढती है।

इस तरह धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में माँ-संतान के संबंधों में मुख्यता माँ बेटी के रूपों में देखा जा सकता है, मसलन जमुना और उसकी माँ, लिली और उसकी माँ, बिनती और उसकी माँ, रामी और उसकी बेटी, शांता और उसकी माँ आदि। गौण रूप में माँ और बेटे के संबंध को भी देखा गया है जैसे बिरजा और उसके बेटों का संबंध तथा यशोधरा और उसके बेटे राहुल का संबंध।

**जमुना और उसकी माँ का संबंध–**

जमुना की माँ से जमुना और तन्ना के प्रेम की बात छिपी नहीं रही, क्योंकि जमुना की माँ भी अपनी उम्र में वे भी जमुना ही रही होगी "उन्होंने जमुना को बहुत समझाया और कहा कि तन्ना वैसे बहुत अच्छा लड़का है पर नीच गोत्र का है"[87] पर जमुना की जिद के आगे माँ की एक न चली। और माँ ने एक बीच

---

[85] धर्मवीर भारती सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ उनतालीसवां संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या-29-30

[86] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ उनतालीसवां संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या 30

[87] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ उनतालीसवां संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या 42

का रास्ता निकाला “अगर तन्ना घर जमाई बनना पसंद करें तो इस प्रस्ताव पर गौर किया जा सकता है।”[88]

एक स्त्री पत्नी, बहन और बेटी बनकर अपने जीवन को सार्थक नहीं समझती। जब तक वह माँ न बन जाए इसलिए सूरज का सातवां घोड़ा उपन्यास में जमुना संतान प्राप्ति के लिए कठोर से कठोर व्रत उपवास और पूजा करती हैं। “ज्योतिष ने कहा कि जमुना को कार्तिक भर सुबह गंगा नहाकर चंडी देवी को पीले फूल और ब्राह्मणों को चना जौ और सोने का दान करना चाहिए।”[89]

जमुना इस बात के लिए बिना समय गंवाए राजी हो गई “वह नित्य नियम से नहाने जाने लगी। कार्तिक में काफी सर्दी पड़ने लगती है और घाट में मंदिर तक उसे केवल एक पतली रेशमी धोती पहनकर फूल चढ़ाने जाना पड़ता था वह थर-थर कांपती थी।”[90] यदि हम ये कहे कि स्त्री के जीवन में संतान की कितनी आवश्यकता होती है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। क्योंकि वह संतान प्राप्ति करने के लिए वह सभी धार्मिक कर्मकांड कर सकती है। फिर चाहे स्त्री को कितने ही कष्ट क्यों न सहने पड़े।

**लीली और उसकी माँ का संबंध–**

लीली की विधवा माँ लीली के भविष्य की चिंता के कारण ही लीली और तन्ना का विवाह कराती है। परंतु बाद में लीली की माँ ने देखा जब तन्ना को दफ्तर से निकाल दिया गया और घर में खाने के लिए लाले होने लगे तो लीली की माँ, लीली को अपने घर ले आई। लीली को लाते समय उसकी माँ तन्ना से कहती है कि “जब कमर में सूता नहीं था तो भांवरें क्यों फिरायी थी।”[91] माँ संतान को हमेशा सुख देना चाहती है। वह उसे सभी कष्टों से कोसों दूर रखने के लिए दुनिया भर की जुगत लगाती है। शायद इसलिए ही लीली की माँ, लीली को सुख-सुविधा देने के लिए अपने घर वापस ले आती है।

---

[88] वहीं,पृष्ठ संख्या 42

[89] वहीं पृष्ठ संख्या 31

[90] वहीं पृष्ठ संख्या 31

[91] वहीं पृष्ठ संख्या 46

**बिनती और उसकी माँ–**

कथाकार ने अपने दूसरे उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में बिनती और उसकी माँ के संबंध को चित्रित किया है। बिनती और उसकी माँ का सम्बंध विडम्बनाओं से घिरा हुआ है, क्योंकि दोनों ही एक दूसरे से स्नेह नहीं कर पाते हैं।

बिनती की माँ गाँव में रहने के कारण लड़कियों के हंसने बोलने पर पाबंदी लगाती थी और बिनती पर जब तब बहुत गुस्सा भी होती रहती थी साथ ही उसे मारती पीटती भी थी। जब बिनती सुधा के साथ बाहर घूम के आती तो माँ कहती है– "एत्ती देर कहाँ घूमति रहियो? हम खूब अच्छी तरह जानित हैं तू हमार नाक कटाइन के रहयो। पतुरियमन के ढंग सीखे हैं!"[92] बुआ जी लड़कियों का ज्यादा घूमना-फिरना, हंसना, बोलना अच्छा नहीं मानती थी। वह हमेशा बिनती को डांटती फटकारती रहती थी। एक दफा बिनती ने पूजा का पंचपात्र उठाकर ठाकुर जी के सिरहाने के पीछे रख दिया था और उन्हें दिखाई नहीं पड़ा तो सारा गुस्सा बिनती पर उतारते हुए बुआ ऊँची आवाज करके कहती है कि "पैदा करते बखत बहुत अच्छा लग रहा, पालत बखत टें बोल गये। मर गये रहयो तो आपन सन्तानौ अपने साथ लै जात्यौ। हमारे मूड़ पर ई हत्या काहे डाल गयौ। ऐसी कुलच्छनी है कि पैदा होतेहिन बाप को खाय गयी।"[93] धर्मवीर भारती ने माँ के दूसरे रूप को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। समाज में ऐसी भी माएं है जो अपनी संतान से प्रेम नहीं करती हैं। बुआ जी भी बिनती से तनिक स्नेह नहीं करती थी। क्योंकि उन्हें लड़की एक बोझ लगती थी। बिनती को भी अपनी माँ की गोद नरक की तरह लगती। "कैसे मैं माँ जी की बातें बर्दाश्त करती हूँ वह नरक है मेरे लिए, माँ की गोद में नरक है और मैं किसी तरह निकल भागना चाहती हूँ। कुछ चैन तो मिलेगा।"[94] यह कैसी विडंबना है कि एक माँ स्वयं से जन्मे बच्चे से नफरत करती है और वह बच्चा भी माँ की गोद को नरक की तरह देखता है। जबकि भारतीय संस्कृति में माँ की गोद से सुंदर या अनमोल वस्तु पूरे विश्व में आज तक नहीं बनी है।

---

[92] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 73वां संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या,50

[93] वहीं पृष्ठ संख्या69

[94] वहीं पृष्ठ संख्या 95

**रामी और उसकी बेटी का संबंध–**

धर्मवीर भारती ने अपनी कहानी 'एक बच्ची की कीमत' में रामी और उसकी बेटी का संबंध दिखाया है कि कैसे रामी अपने बेटी के उज्जवल भविष्य के लिए उसे एक पंजाबी के हाथों बेच देती है। केवल यही सोचकर कि यदि उसकी बेटी उसके साथ रही तो उसका भविष्य भी उसी की तरह नरक में डूबा रहेगा। वह अपनी बच्ची के भविष्य की चिंता करती है और मन ही मन में कहती है "इससे तो यह पंजाबी के पास आराम से रहेगी।"[95] रामी उठी और पंजाबी के पास चली जा रही थी, परंतु उसके दिल की गर्मी पिघलकर फूट पड़ी। "माँ…माँ! तुम अपनी फूल सी बच्ची बेचने जा रही हो!"[96] रामी की आत्मा को किसी ने मरोड़ कर कहा– खुदगर्ज! तुम माँ हो, अपनी एक छोटी सी ख्वाइश पर अपनी बच्ची की जान ले रही हो। क्यों नहीं बेच देती? आराम से तो रहेगी, पास या दूर!"[97]

**शांता और उसकी माँ का संबंध–**

'आश्रम' कहानी में भी शांता की माँ शांता को प्रकाश से विवाह करने से रोकती है क्योंकि प्रकाश पहले से विवाहित था वह अपनी बेटी शांता की भविष्य की चिंता करती है और इससे शांता बहुत दुखी होती है। अंत में शांता अपनी माँ से संबंध तोड़ अपना पूरा जीवन आश्रम में रहकर बिताती है।

**दरिद्र माँ और उसकी बेटी का संबंध–**

'भूखा ईश्वर' कहानी में कथाकार ने माँ के निष्छल प्रेम को अभिव्यक्त किया है। बाप अपने भूखें बच्चे को अनदेखा कर झूठे पत्तल चाटता रहता है परंतु माँ है जो भूखी बेटी के लिए कुत्ते से भी टुकड़ा खींच लाती है। उसको कुत्ते ने काटा परंतु बच्ची के चेहरे पर मुस्कुराहट देख वह भी अपना दर्द भूल गई। एक

---

[95] धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, पुष्पा भारती, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण 2014,नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 121

[96] वहीं, पृष्ठ संख्या 122

[97] वहीं, 122

टुकड़ा उसे भी दे दो न औरत बोली। भिखमंगे ने महज उसे घुड़क दिया अपना टुकड़ा खाता रहा। औरत ने मिन्नत के स्वरों में कहा– उसने दो दिन से कुछ नहीं खाया! कैसे बाप हो उसके गले से आवाज भी नहीं निकल रही है।... औरत उठी और वहाँ गई जहाँ अब भी कुत्ते पत्तल चाट रहे थे उसने पास पड़े एक टुकड़े को उठाना चाहा। कुत्ता गुर्राया। वह रुकी जैसे आदमियों से निराश होकर अब जानवरों से दया याचना कर रही है। कुत्ते ने भी मुँह फेर लिया उसने मौका पाकर वह टुकड़ा उठा लिया परंतु यकायक कुत्ता गुर्राकर उठा और बाहें झकझोर डाली मगर फिर भी उसने टुकड़ा न छोड़ा कुत्ता हारकर पीछे हट गया ऐसा लगा जैसे किसी ने ईश्वर के ईश्वरत्त्व को मरोड़ दिया हो? वह औरत की चीख उठी उसने दर्द से हाथ झटका...औरत आई और उसने अपने बच्चे को वह टुकड़ा दे दिया बच्ची ने टुकड़ा कुतरा और मुस्कुरा कर माँ की और देखा। माँ दर्द से हाथ झिटक रही थी मगर बच्ची की मुस्कुराहट पर वह भी मुस्कुरा उठी और झुककर उसने बच्ची के ओंठ चूम लिये।"[98] कहते हैं कि संसार में भूख ही सबसे बड़ी बीमारी है पर माँ के प्रेम के आगे यह बीमारी भी नहीं टिक पाती। माँ स्वयं को भूखा रख सकती है परंतु अपनी संतान को कभी भी भूखा नहीं रख सकती।

**बिरजा और उसके बेटों के संबंध–**

'बंद गली का आखिरी मकान' में बिरजा ने अपने बेटों की अच्छी जिंदगी और भविष्य की चिंता से ही मुंशीजी से विवाह किया था और बिरजा के बड़े बेटा राघोराम के विवाह में कोई रुकावट न आए इसलिए मुंशीजी को उनके सामने न आने को कहा था।

बिरजा अपने बेटे राघो की शादी में कोई रुकावट नहीं पैदा हो इसलिए बुखार से पीड़ित होने पर भी सारा काम करती है। राघोराम की नौकरी लगने पर उसके लिए कपड़े सिलवाती है और वह आनंद से फूली नहीं समाती है। कुछ इस तरह होता है माँ और संतान का संबंध। संतान के लिए वह हर कष्ट सहने को तैयार रहती है उसके उज्जवल भविष्य के लिए हमेशा चिंता ग्रस्त रहती है।

[98] वहीं पृष्ठ संख्या 114

**दीनू और उसकी माँ का संबंध–**

'यह मेरे लिए नहीं' कहानी में दीनू की माँ दीनू के पैसे से अपने पति की आखिरी निशानी घर की कुछ न कुछ मरम्मत करवाती रहती हैं और साथ में मनमानी भी करती हैं। परंतु अंत में बेटे से हार मानती है। "आज आँगन कैसा उजड़ा-उजड़ा सा है। जीत दीनू की हुई है। वह विराट, आतंकप्रद, चट्टानी प्रतिमा चूर-चूर हो गयी है। उसके टुकड़े आँगन में बिखरे हुए हैं। शेष रह गयी है माँ, बीस दिनों में ही कितनी बूढ़ी, खामोश, टूटी, पराजित। विजय के बाद की यह निचाट उदासी–दीनू को कितना खाली है। माँ की उस प्रतिमा के संदर्भ में जो भी दुनिया चारों और बनी थी वह प्रतिमा के टूटते ही कैसी-कैसी तो लगने लगी है।"[99] दीनू की माँ की दयनीयता का बहुत प्रभावी चित्र लेखक ने खींचा है।

अंत में माँ ने बेटे के साथ समझौता कर लिया क्योंकि माँ का सुख अपने बच्चों के सुख में ही होता है।

**यशोधरा और उसके बेटा का संबंध-**

'नारी और निर्वाण' कहानी में यशोधरा के त्यागमयी माता रूप को उच्चता प्रदान किया है। सिद्धार्थ यशोधरा के माँ रूप का बखान करते हैं कि– "क्या मुझे भ्रम हो रहा है! सिद्धार्थ बोले और फिर उन्हें दिखी यशोधरा इस बार उसके साथ अकेला राहुल न था। यशोधरा के भाल से फूट रही थी अगणित रजत किरणें और उसके कोमल अंचल के नीचे कोलाहल कर रहे थे अनेक शिशु। वह अपनी दृष्टि से बरसा रही थी ममता की मृदुल बूंदें।"[100] सिद्धार्थ आगे कहते हैं कि "नारी! माँ! शक्ति! तुम्हारा यह स्वरूप देवोपम है यशोधरा! मैंने तुम्हें पहचाना न था, यशोधरा।"[101] पुरुष स्त्री के सभी रूपों नकार सकता है पर उसके ममतामयी, स्नेहमयी और उसके वात्सल्यमयी रूप को कभी अनदेखा नहीं कर सकता है। इसकी

[99] वहीं,पृष्ठ संख्या, 273

[100] वहीं पृष्ठ संख्या 201

[101] वहीं पृष्ठ संख्या 201

पुष्टि लेखक ने स्वयं सिद्धार्थ के मुख से करवाई है "नारी के प्रणयपाश को तोड़ा जा सकता है, पर स्नेह की अक्षय वात्सल्य धारा में मनुष्य को तिनके सा बहना ही पड़ता है।"[102] अंत में मातृत्व की साधना ने नारी को निर्वाण से भी ऊँचा बना दिया है। बुद्ध का निर्माण राहुल की माता के सामने झुक जाता है। क्योंकि यशोधरा अपनी जान से प्यारे राहुल को  भिक्षा के रूप में बुद्ध को दे देती है और यही यशोधरा का माँ के रूप सबसे बड़ा त्याग है।

### 2.4.2 पत्नी

हमारी भारतीय संस्कृति परंपरा में अर्धनारीश्वर की परिकल्पना की गई है। जिसमें आधा शरीर पुरुष का होता है व आधा शरीर स्त्री का होता है। यह परिकल्पना हमें शिव पार्वती के अर्धनारीश्वर रूप में देखने को मिलती है। यहीं से पत्नी को अर्धांगिनी का दर्जा दिया गया है। पत्नी यानी अर्धांगिनी। अर्धांगिनी का अर्थ है पुरुष शरीर का आधा अंग लेकिन यह शब्द पति पत्नी के संदर्भ में प्रयुक्त होता है और वे दोनों परस्पर एक दूसरे के अर्धांग है। जिनके प्रत्यक्ष सम्मेलन से संपूर्ण अंग बनता है। विवाह के उपरांत ही स्त्री पुरुष की अर्धांगिनी बनती है और पत्नी के रूप में समाज के समक्ष मजबूती से खड़ी रहती है। पुरुष के प्रत्येक कार्य में सहयोग देती है क्योंकि पति और पत्नी का अस्तित्व भिन्न न होकर एक रूप में होता है। वह अपनी एकल पहचान को हटाकर कर्मनिष्ठता व धर्मनिष्ठा से पत्नी होने के कर्तव्य का निर्वाह करती है।

वैदिक काल से पत्नी को पति के घर में विशेष स्थान दिया गया है। इसका प्रमाण हमें ऋग्वेद में मिलता है कि पत्नी ही घर है अथर्ववेद में यह उल्लेखनीय है कि हे पत्नी! तू दृढ़ रूप से स्थिर रहे तू विराट है, हे सरस्वती! तू पति ग्रह के विष्णु की तरह है। पति के समस्त घर की संचालिका और व्यवस्थापिका होती है। वही घर की कर्ता-धरता होती है। पत्नी ईंट, पत्थर और सीमेंट से बने एक मकान को घर में तब्दील कर उसे स्वर्ग से भी श्रेष्ठ बनाने का काम दिन प्रतिदिन बिना किसी रुकावट के करती रहती है। एक

[102]वहीं पृष्ठ संख्या 201

गृहिणी ही घर परिवार की गृहलक्ष्मी होती है। जो घर की शोभा भी बढ़ाती है। इसलिए समाज में उसे घर की स्वामिनी और गृहिणी भी कहा जाता है। आशारानी व्होरा अपनी पुस्तक 'नारी शोषण आईने और आयाम' में कहती हैं कि- "घर समाज की सबसे छोटी इकाई है और घर परिवार की धुरी स्त्री का पत्नी रूप है… बिना धरनी घर भूत का डेरा अर्थात बिना पत्नी के घर भूत का डेरा होता है।"[103] गौर करें तो लेखिका ने कुछ अतिशयोक्ति नहीं की है। वर्तमान समय में भी घर परिवार की शोभा स्त्री के पत्नी रूप को ही माना जाता है।

जिस प्रकार समुद्र वर्षा करके नदियों पर राज करता है उसी प्रकार पत्नी पति के घर जाकर वहाँ की साम्राज्ञी बनती है। पत्नी पूज्य है उसकी प्रसन्नता में ही परिवार की प्रसन्नता है और उसके दुख में पूरे परिवार के दुखी होने की स्थिति होती है। पति-पत्नी का रिश्ता समाज में सबसे पवित्र रिश्ता माना गया है। दोनों के प्रत्यक्ष संबंध पर समाज का कल्याण छिपा हुआ है इसलिए विवाह संस्थान को भारतीय समाज में सर्वोपरि माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि वैवाहिक जीवन का आधार समझौतावादी दृष्टि है इसके उचित समन्वय से ही जीवन असफल होने से बच जाता है। पति-पत्नी के मध्य पारस्परिक संबंध ही एक सफल वैवाहिक जीवन बन पाता है। जिसमें स्त्री पत्नी का रूप धारण कर हम सबके सामने प्रस्तुत होती है क्योंकि स्त्री की जीवन यात्रा पत्नी रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण और विश्वसनीय है। पति-पत्नी के संबंध पर समाज की सुनहरी मुहर भी लगी हुई है।

धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के पत्नी रूप का वर्णन बहुत ही सटीक शब्दों में किया है। उन्हें अपने उपन्यास 'सूरज का सातवां घोड़ा' में जमुना को एक आदर्श पत्नी के रूप में हमारे सामने उजागर किया है। जमुना का विवाह एक तेहाजु पुरुष के साथ कर दिया जाता है। तिहाजु पति होने के बाद भी वह पति की बहुत प्रशंसा करती है पहली बार विवाह के उपरांत अपने घर आती है तो अपनी सहेलियों से कहती है "अरी कम्मो, वो तो इतने सीधे हैं कि जरा सी तीन पांच नहीं जानते। ऐ जैसे छोटे

---

[103] आशारानी व्होरा  अपनी पुस्तक नारी शोषण आईने और आयाम  नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982,पृष्ठ संख्या 226

बच्चे से हो। पहली दोनों के मैके वाले सारी जायदाद लूट ले गए, नहीं तो धन फटा पड़ता था। मैंने कहा अब तुम्हारे साले, साली आवेंगे तो बाहर ही से विदा करूंगी, तुम देखते रहना। तो बोले, तुम घर की मालकिन हो। सुबह शाम दाल रोटी दे दो, बस मुझे क्या करना है।"[104] और वह यह कहकर खुश होती थी कि– "चौबिसों घंटा मुँह देखते रहते हैं। जरा सी कही गई-बस सुनती हो, ओ जी सुनती हो, अजी कहाँ गई। मेरी तो नाक में दम है कम्मो।"[105]

जमुना जहाँ फिल्मों के गाने तथा प्रेम कहानियों से भरी किताबें पढ़ती थी वहीं पति के संसर्ग में आकर वह भजनामृत, गंगा महात्म्य, गुटका रामायण आदि ग्रंथ पढ़ने लगी थी क्योंकि जमुना तन मन धन कर्म वचन से परायण थी। पति भी उसके गहने कपड़े का ध्यान रखते थे तो वे भी पति की रुचि का ध्यान रखती थी। जमुना पत्नी बनने के बाद अपने पहले के जीवन को भूलती जा रही थी। उसके मन में तन्ना का प्यार बसे रहने पर भी वह अपने पति को कभी दुखी नहीं करती है। जमुना पत्नी के रूप में एक आदर्श पत्नी का रूप धारण किए हुए थी। आजादी के इतने वर्षों बाद भी भारतीय समाज में लगभग अस्सी प्रतिशत स्त्रियाँ इस रूप में हमें देखने को मिल जाएंगी जो अपने पति को परमपिता परमेश्वर के समक्ष रखती हैं। उनके लिए पति ही सब कुछ होता है। वह पति को अपने जीवन का केंद्र बिंदु मानती हैं। पति है तो जीवन में सभी खुशहाली है, यदि पति नहीं तो जीवन का कोई अर्थ नहीं है। ये जाल पुरुषसत्तात्मक समाज ने बुना है। जिसमें स्त्रियाँ बुरी तरह से फंसती ही चली जाती हैं। इससे बाहर निकलने का कोई उपाय भी नहीं है। ये षड्यंत्रकारी कार्य इसलिए भी रचा गया है कि स्त्रियाँ पुरुषों के पैरों तले दबी हुई रहें। उन्हीं का कहना, उन्हीं के अनुसार, उनके ही दिखाई रस्ते पर आँख मूंदकर चलती रहें। किसी भी प्रश्न पर उंगली तक न उठाएं और सबसे दुखद यह है कि समाज भी आदर्शात्मक पत्नी को ही सर्वोपरि मानता है।

---

[104] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ,39वाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 29

[105] वहीं पृष्ठ संख्या, 29

‘गुनाहों का देवता’ उपन्यास में धर्मवीर भारती ने सुधा को पत्नी के रूप में प्रस्तुत किया है। किंतु उन्होंने विवाह पूर्व प्रेम आकर्षण की समस्या को दिखाते हुए सुधा का वियोग भरा रूप भी उजागर किया है। विवाह के उपरांत वह चंदर को भूल नहीं पाती परंतु वह आदर्श को निभाते हुए यथार्थ को भी निभाना उसके लिए दुख पूर्ण कार्य हो जाता है। इसी दुख-ग्लानि में घुलकर मृत्यु के समीप पहुँच जाती है। फिर भी वह अपनी तकलीफ किसी को बताती नहीं है न ही उसके मुँह से उफ्फ मात्र की ध्वनि सुनाई देती है। वह अपने पति कैलाश मिश्र के घर में सबके मन मुताबिक काम करती है व सभी को खुश रखती है। किंतु अपने आप को खुश रखना उसके लिए असंभव सा कार्य प्रतीत होता था। सुधा की प्रशंसा करता हुआ कैलाश कहता है “जब से ये गयी है माँ और शंकर भैया दोनों ने मुझे नालायक करार दे दिया है इन्हीं से पूछ कर सब कार्य करते हैं।”[106]

सुधा के विपरीत पम्मी को शादी से नफ़रत थी। पम्मी एक अंग्रेजी लड़की थी। जो आजाद और स्वच्छंद ख्यालों से ताल्लुकात रखती थी। वह एक तलाकशुदा स्त्री थी। जो तलाक होने के बाद विवाह को व्यर्थ मानती थी। स्वयं कहती है कि– “मुझे शादी से नफरत है, शादी के बाद होने वाले आपसी धोखेबाजी से नफरत है।”[107] आगे पम्मी चंदर से अपने पति को तलाक देने की बात करती है– “तुम जानते हो, मैंने तलाक क्यों दिया? मेरा पति मुझे बहुत चाहता था लेकिन मैं वैवाहिक जीवन के वासनात्मक पहलू से घबरा उठी! मुझे लगने लगा, मैं आदमी नहीं हूँ बस मांस का लोथड़ा हूँ जिसे मेरा पति जब चाहे मसल दे, जब चाहे…ऊब गई थी! एक गहरी नफ़रत थी मेरे मन में।” [108]

विवाह के उपरांत पति और पत्नी में केवल शारीरिक संबंध ही महत्वपूर्ण नहीं होना चाहिए अपितु भावात्मक संबंध अधिक होना चाहिए। जिसमें वे दोनों एक दूसरे को समझ सकते हैं,जान पाते हैं। आजीवन एक दूसरे के साथ बिताने का सपना देखते हैं परंतु पम्मी का पति केवल शारीरिक रूप से उसका उपभोग करता था इसलिए पम्मी ने अंत में अपने पति को तलाक देने की बात की और उसे

---

[106] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या 223

[107] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तिहतरवाँ संस्करण ,पृष्ठ संख्या 30

[108] वहीं पृष्ठ संख्या 84

तलाक देकर अपने भाई के साथ अलग रहने लगी। यहाँ पर गौर करने कि बात यह है कि जिस समय उपन्यास लिखा जा रहा था उस समय स्त्रियों को खुले आसमान में खुली सांस लेने की अनुमति भी नहीं थी और वहीं लेखक अपने उपन्यास में स्त्री के द्वारा किसी पुरुष को तलाक देने की और शारीरिक संबंध पर बात करने की खुली छूट देता है। यह लेखक की उपलब्धि ही है कि जो अन्य कथाकार उस समय नहीं कर पाए। वह धर्मवीर भारती अपने एक स्त्री पात्र से कहलवा डाला। इनकी स्त्रियाँ आदर्श रूप के साथ-साथ आधुनिक व आजाद ख्यालों से तारूफ भी रखती हैं।

'गुलकी बन्नो' कहानी में गुलकी पति को परमेश्वर मानती है। पति के ठुकराए जाने के बाद भी जब उसका पति उसे अपने मतलब से लेने आता है तो वह अपना सारा अपमान भूलकर पति के पैरों में गिरकर रोने लगती है और कहती है हाय! हमें काहे को छोड़ दियौ! तुम्हारे सिवा हमारा लोक-परलोक और कौन है। वह यह भी जानती थी कि उसका आगे पीछे कोई नहीं है "अरे हमरे मरे पर कौन चुल्लू भर पानी चढ़ायी।"[109] पति को ही परमेश्वर मानकर जो पत्नी अपनी समस्त इच्छाओं को पति की इच्छा में ही विलीन कर देती है वे क्या नहीं कर सकती पति चाहे जैसा भी हो वह उसके गुणों को अपने प्रभाव व अपनी साधना के सहारे एक निष्ठाता के आधार पर सकारात्मक ऊर्जा में बदल कर पत्नी कर्तव्य का पालन करती है। यही हमारी भारतीय संस्कृति हमें सदियों से सिखाती आ रही है परंतु अब समय बदल गया है। स्त्री अपना अच्छा बुरा जानती हैं पर पत्नी के रूप में समाज उसे आदर्शात्मक रूप में देखना अधिक पसंद करता है इसलिए वह पढ़ी लिखी स्त्रियाँ भी पत्नी के आदर्शात्मक रूप को ही तवज्जो देती हैं। इसी संदर्भ में राजकिशोर अपनी पुस्तक 'स्त्री परंपरा और आधुनिकता' में कहते हैं "पति ही देवता है पति का ही ध्यान करो। पति की ही पूजा करो। पति का ही भजन करो। स्त्रियों के वास्ते पति परमेश्वर है और दूसरा कोई नहीं। जो स्त्री पति के अलावा दूसरा परमेश्वर जानती है वह इस दुनिया में बड़ा दुख और परलोक में नरक पाती है।"[110]

---

[109]पुष्पा भारती,सांस की कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,तीसरा संस्करण 2014,पृष्ठ संख्या 234

[110] राजकिशोर,स्त्री परंपरा और आधुनिकता,वाणी प्रकाशन,प्रथम संस्करण 1999,पृष्ठ संख्या 15

यदि पुरुष इंसान है तो स्त्री भी इंसान है। दोनों को एक दूसरे के प्रति सम्मानजनक और आदर्श भाव रखना चाहिए यदि एक दूसरे के प्रति हीन भाव रखता है तो दूसरे को भी उसे आदर भाव देना नहीं चाहिए परन्तु ऐसा स्त्रियाँ नहीं कर पाती हैं, तो केवल वह भारतीय परंपरा के आवेश में आकर। क्योंकि उन्हें जन्म से ही यह सिखाया जाता है कि विवाह के उपरांत पति ही उसके जीवन का कर्ता-धर्ता है उसके अतिरिक्त उसके पास और कोई विकल्प नहीं है। स्त्रियाँ सिर झुका कर आराम से यह बात मान भी लेती है और यही हमारी सभी स्त्रियों की दुर्गति का महत्त्वपूर्ण कारण है।

'सावित्री नंबर दो' कहानी में सावित्री अपनी सास के कहे अनुसार बनना चाहती थी क्योंकि उसके सास ने आशीर्वाद के तौर पर कहा था जैसा नाम वैसी बनो बहू। परंतु उसे एक असाध्य रोग ने घेर लिया था। जिससे वह ही मौत से बचाना चाहती थी। परिस्थितियों ने उसे ऐसे बना दिया कि वह अपने पति की रक्षा की बात तो छोड़ उसी की मौत की कामना करने लगी। "मैं अकेली नहीं मरूंगी। तुम्हें ले के मरूंगी। तुम्हें चैन से जीने के लिए नहीं छोड़ जाऊँगी।"[111]

वैवाहिक जीवन के प्रथम वर्ष में पति का बेहद प्यार और धीरे-धीरे उस प्यार का खत्म होना उसको पति के प्रति हीन भाव से ग्रस्ति कर देता है। वह अपने पति को अपने घर परिवार के सामने लांछित भी करती है– "तुम्हें माँ बाप से क्या लेना-देना। तुम तो मुझे वहाँ से ले आए ताकि तुम्हारे माँ बाप, भाई बहन को रोग न लग जाए। मेरे माँ बाप भाई बहन चाहे गल कर मर जाएं…सबित्तरा उस समय ज्वालामुखी की तरह फट गई थी। ये चुप कुर्सी थामे खड़े थे और मैं बकती जा रही थी। मेरे माँ बाप कसाई थे जो तुम्हारे यहाँ भेजा। क्या है तुम्हारे घर में? सब रोगहे हैं। सब कुत्सित हैं। तुम लोगों को बड़ा पढ़े लिखे होने का घमंड है! जबान मुँह मत खुलवाओ। बहन छैल-छबीली बनकर मास्टरों के यहाँ घूमती फिरती है तो पहली पोजीशन लाती है चुप रह सबित्तरा! पिता ने डॉटा, पर सबित्तरा पर भूत सवार था, क्या तुम अपने को बड़ा बनते हो। मेरे लिए सोने का छल्ला तक नहीं बना और दोस्तों की बीवियों की खातिर होती रही। मैं तुम्हारे कारण घुली हूँ। तुमने मुझे गलाया है। भगवान तुम्हें ग्लायेंगे। यह मत सोचो…तुमने जान

---

[111] प्रस्तुति पुष्पा भारती, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण 2014 ,पृष्ठ संख्या 242

बूझकर मुझे मारा है।"[112] उसका शरीर बीमारी से गल रहा था, परंतु उसके भीतर मन का प्रेम अभी बाकि था। उसको लेकर वह बहुत बार मन में ही अपमानित भी होती थी।

सावित्री, पति की अनुपस्थिति में उसके लिए सच-धजकर प्रतीक्षा करती है लेकिन पति के आने पर अंदर से घृणा और क्रोध से भर जाती है। एक वो सावित्री थी जो अपने पति के प्राण यम से छीन कर उसे जीवन दान देती है और एक यह सावित्री है जो अपने पति के लिए मृत्यु का आवाहन करती है। एक वर्तमान की सावित्री है और एक सदियों पुरानी सतयुग की सावित्री है।

'बंद गली का आखिरी मकान' में कथाकार गृहस्थी में पति-पत्नी के प्रेम में ज्वारभाटे के उतार चढ़ाव के प्रसंग को लेकर आए हैं। कभी दूरी, कभी उदासीनता, कभी संशय, कभी गुस्सा दोनों को एक दूसरे से विरक्त के चरम छोर पर पहुँचा देता है तो कभी किसी छोटे बड़े आत्मिक स्पर्श से रस भीने ऐसे प्रसंग आ खड़े होते हैं कि इस विरक्ति की दूरी क्षण में लांघकर अपने आप समझौता कर लेती है। असल में यह समझौता कहीं भीतर अतल में विद्यमान वैवाहिक जीवन संसार की पवित्र साझेदारी का आधार होता है। पति-पत्नी दोनों का संबंध इसी भावात्मक लगाव पर टिका होता है। इसी के आधार पर उनके सुखी गृहस्थ जीवन का भवन का निर्माण भी होता है।

बिरजा को लेकर मुंशीजी ने साहस से समाज को ललकारा तो बिरजा ने भी अपनी समूची संकोचशीलता को ताक पर रखकर राधोराम के विवाह के अवसर पर रिश्तेदारों को चुनौतियाँ दे दी।

धर्मवीर भारती की स्त्रियों ने पत्नी का किरदार भली भांति निभाया है। वह अपने आप से भले ही टूट जाए लेकिन इस सामाजिक बंधन को नहीं टूटने देती। अंत तक इस संबंध को निभाती है। पत्नी पति के द्वारा परित्यक्त होने अथवा दूसरी स्त्री से संबंध रखने पर भी वह सदैव उसी की उपासना करती है। हमेशा उसका हित ही सोचती है।

[112] वहीं, पृष्ठ संख्या 244-245

### 2.4.3 बहन

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में बहन भाई का प्रेम अत्यंत पवित्र माना जाता है। पिता के बाद बहन की जिम्मेदारी भाई के कंधो पर होती है। भाई केवल बहन का पालन पोषण ही नहीं करता, अपितु उसकी शिक्षा पूर्ण हो जाने के उपरांत उसका विवाह भी करवाता है। यह भाई की जिम्मेदारी ही नहीं होती है अपितु भाई का कर्तव्य भी होता है। वह अपनी बहन का आजीवन साथ दे क्योंकि यह संसार में एक ऐसा रिश्ता है जिसमें कोई दुर्वेश भाव नहीं होता है। इस रिश्ते की नींव प्रेम पर टिकी होती है। इसके विपरीत यदि यह प्रेम किसी कारणवश जरा सा भी डगमगाने लगता है तो संबंधों में खटास आने लगती है।

बहन-भाई का प्यार अनोखा होता है। 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास में तन्ना जब भी अपनी माँ को याद करके रोता तो उसकी दोनों बहनें भी रोने लगती थी। परंतु मंझली बहन अपने मन के साथ शरीर से भी विकलांग थी और अपनी इस असमर्थता के कारण तन्ना को गालियां दिया करती थी साथ ही भला बुरा भी कहती थी। तन्ना अक्सर माँ को याद करते हुए रोया करता था और उन्हें रोते देखकर बड़ी और छोटी बहन भी रोने लगती थी परन्तु इसके विपरीत मंझली अपने दोने टूटे पैर पटक कर उन्हें गालियां देने लगी थी "मंझली बहन जिसके दोनों पैरों की हड्डियां बचपन से खराब हो गई थी। वह कोने में बैठी रहती या आँगन भर में घिसट-घिसटकर सभी भाई बहनों को गालियां देती रहती थी।"[113]

धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के बहन रूप को भी कम तवज्जो नहीं दी है।

तन्ना अपनी छोटी बहन के ब्याह न कर पाने के कारण घुट-घुटकर मर रहा था। "छोटी बहन ब्याह के काबिल हो गयी और तन्ना सिर्फ इतना कर पाये कि सूखकर कांटा हो गये, कनपटियों के बाल सफेद हो गये, झुककर चलने लगे दिल का दौरा पड़ने लगा।"[114]

---

[113] सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ,उनतालीसवां संस्करण 2010 ,पृष्ठ संख्या 40

[114] वहीं, पृष्ठ संख्या ,39

तन्ना की मंझली बहन अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण घर पर रहकर कुंठित हो गयी थी। जिससे वह अपने मन के गुब्बार को भाई-बहनों पर निकालती थी। वह चाहती थी कि उसकी तरह ही तन्ना तथा उसकी बहनें गुजर बसर करें तभी तो जब तन्ना को मार पड़ती थी तो वह कहती "खूब मार पड़ी। अरे अभी क्या? राम चाहें तो एक दिन पैर टूटेंगे कोई मुँह में खाना डालने वाला नहीं रह जाएगा। ...आज खूब मार पड़ी है तन्ना हो।"[115] 'बंद गली का आखिरी मकान' में मुंशीजी ने अपनी छोटी बहन बिटौनी का व्याह कराया परन्तु अपनी शादी नहीं की। मुंशीजी ने कहा "बिटौनी चार बरस की थी जब अम्मा मरी थीं। हमने बहन करके नहीं, लड़की करके पाला। शादी नहीं की, कि गैर खून की लड़की आकर उसे सताये, चलो अब अपने घर में खुश है, समाज में नाम है।"[116] मुंशी ही ने बिरजा से शादी की तो बिटौनी अपने ही बड़े भाई की भूल दिखाते हुए कहती है– "हमारा सगा भाई क्या है, हमारा दुश्मन है। हम लोगों की शहर में मान-मर्यादा है...सब जगह हमारी इज्जत ली है। हमारे भाई ने तो हमारे मुँह पर कालिख लगा दी।"[117] वह अपनी भाई को समझाने आई थी कि बिरजा को छोड़ दे। मुंशीजी ने बिटौनी की बड़ी सेवा की थी जब मुंशी जी बीमार पड़े थे तो उन्हें याद आने लगा कि वह किस तरह बिटौनी के बीमार पड़ने पर व्यस्त हो जाते थे तथा उन्हें डॉक्टर, हकीम जिसकी भी जरूरत लगे उनके पास ले जाते थे। एकबार बिटौनी के बीमार पड़ने पर वह उसे एक महात्मा के पास ले गए और कहा– "महाराज, हमारा और कोई नहीं है, इसे अच्छा कर दो। बड़ी किरपा हो इसके हाथ पीले कर दें, पति के घर जाए। नहीं तो महाराज हमारे प्रान ले लें, इसे दे दें।"[118]

बिटौनी जितनी भी बिरजा और मुंशी जी को अपना दुश्मन समझे पर मुंशी जी के घर में बिटौनी की बातें होती रहती थी। मुंशी जी की बीमारी की खबर सुनकर बिटौनी आती है "बिटौनी बहुत देर तक भैया के पास बैठी रही। ज्यादा बोली नहीं। अगर मुंशीजी सततसहाय या बच्चों के बारे में पूछें तो बता दें और

---

[115]वहीं ,पृष्ठ संख्या, 41

[116] सांस की कलम से, प्रस्तुति पुष्पा भारती, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण2014, पृष्ठ संख्या 284

[117]वहीं ,पृष्ठ संख्या,284

[118] वहीं ,पृष्ठ संख्या, 306

बाकी बीच-बीच में आँख डब-डबाकर चुपचाप भैया की ओर देखती रहे। बहुत देर बाद दबी जबान में बोली भैया तुम खुश रहो, अच्छे रहो, हम कभी कुछ कहती थी तब इसी ख्याल से कहतीं थी। हमारे कहे-सुने को क्षमा कर देना।"[119]

मुंशी जी ने कहा– नहीं बिटौनी! ठीक है बेटा। मुंशी जी ने अपने बहन की सारी बातें भूला दी थी। बिटौनी अपने भैया की बीमारी के लिए बिरजा को ही दोषी समझती थी। "चलते-चलते बिटौनी ने फिर मुड़कर भैया की ओर देखा, कैसी कंचन काया थी भैया की। मिट्टी में मिला दी लोगों ने।"[120]

भाई-बहन का प्यार विश्वास और प्रेम पर ही आधारित है। 'आश्रम' कहानी में शांता ने अपनी दिल की सारी बातें अपने छोटे भाई कुन्नी को ही बताती थी। एक दिन कुन्नी 'प्रकाश और शांता' के प्रेम के विषय जानता है तो उसका मन चाहा की जाकर 'बुआ' (शांता की माँ) को बता दे परंतु दीदी (शांता) का चेहरा देखकर चुप रहा और शांता बड़े ही विश्वास के कुन्नी से कहती है– "कुन्नी पर मुझे विश्वास है, माँ से कुछ कहना मत भइया। समय आने पर मैं खुद कह दूँगी।"[121]

'गुलकी बन्नो' कहानी में मिरवा मटकी के द्वारा भाई-बहन के प्यार को सहजता से दिखाया गया है।

भारतीय समाज में बहन भाई की तरह बहन-बहन का रिश्ता भी पवित्र माना गया है। बहन-बहन का रिश्ता सहज प्रेम और आत्मीयता पर आधारित होता है।

भारती जी ने गुनाहों का देवता उपन्यास में सुधा और बिनती के आपसी प्रेम को दिखाया है। हालांकि सुधा और बिनती सगी बहनें नहीं थी फिर भी एक दूसरे के दु:ख में दु:खी रहती थी तथा आपस में खुशियाँ भी बाँटती थी। जब बिनती की माँ बिनती को मारती थी तब सुधा गुस्से से कहती है– "सुना, पापा तुमने, बुआ बिनती को मार डालेगी।"[122]

---

[119] वहीं ,पृष्ठ संख्या,317

[120] वहीं, 318

[121] सांस की कलम से प्रस्तुति पुष्पा भारती भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन उनतालीसवां संस्करण पृष्ठ संख्या 339

[122] धर्मवीर भारती,गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 69

भारती ने 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में भी बहन के आपसी रिश्तों का वर्णन ही सहज भाव से किया है। महेसर दलाल की तीनों बेटियाँ भी अपनी स्थिति के अनुसार घृणा तथा प्रेम के साथ रहती थी। तन्ना की मझली बहन अपनी लुंज-पुंज पैरों को लेकर दिनभर घर में घिसटती फिरती थी तथा अपने दुःख और तकलीफ को दूसरों पर लादने का असफल प्रयास करती थी। जब कभी बड़ी बहन और छोटी बहन को उनकी बुआ से मार पड़ती थी तो मझली बहन अपनी दोनों खराब टांगों को जमीन पर पटक-पटक खुश होती थी। परंतु तीनों बहनों में आपसी प्यार भी था।

एक ही माँ की संतान होने के कारण बहनों को बचपन से ही समान वातावरण और समान संरक्षण मिलता है। इसलिए एक ओर उनके मन में सहज-स्नेह का भाव रहता है तो दूसरी और बराबरी का, और कभी-कभी प्रतिद्वंद्विता की भावना भी रहती है।

'सावित्री नंबर दो' में सावित्री अपनी छोटी बहन के प्रति स्नेहशील होकर पति से कहती है "मैं मर जाऊँ तो तुम सित्तो की देखभाल करना। बेचारी तुम्हारी बहुत इज्जत करती है।"[123] और वही सावित्री सित्तो के साथ अपने पति के संबंधों पर संदेह भी करती है। बहन के प्रति ममता एवं उसके पति के प्यार को एक साथ रखा गया है।

### 2.4.4 चाची

चाची का स्थान माँ के बाद ही आता है। धर्मवीर भारती द्वारा चित्रित चाची-भतीजा का संबंध 'यह मेरे लिए नहीं' कहानी में देखने को मिलता है। 'यह मेरे लिए नहीं' में दीनू जब सब तरफ से नाराज होता तो सिर्फ चाची ही उसे अपने मधुर वचन से मनाती थी। वह अपनी मन की बात अपनी माँ से न कहकर डॉक्टर चाची से कहता था और डॉक्टर चाची भी कहे बिना ही सबकुछ समझ भी जाती थी। दीनू जब नाराज होकर एक ओर बैठा रहता तो क्या मजाल कोई कुछ कह तो दे। सारी दुनिया में सिर्फ डॉक्टर

[123] पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, ज्ञानपीठ प्रकाशन तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या, 224

चाची थीं जो बहुत बारीक मुसकान से पूछती थी। “दीनू भैया! ये कमीज के बटन क्या साँची की चुटैया में फंसकर टूटे है।”[124]

जब वह चारों ओर से निराश हो जाता तो उसे एक ही घर-आँगन याद आ जाता था डॉक्टर चाची का घर। उस घर में दीनू की काफी इज्जत की जाती थी। दीनू को आता देखते ही चाची के बेटा और बेटी दोनों ही चहकने लगते थे। घर के सभी प्राणी अपना काम छोड़कर दीनू से बातें करने लगते थे। चाची तुरंत चाय की पतीली में एक प्याला पानी डालकर बैठक में गयीं और झांककर बोली, सुनते हो दीनू आया है। “डॉक्टर चाचा जल्दी ही दवाओं की शीशियों होमियोपैथिक बक्से में रखते हुए, पाँव में खड़ाऊँ डालते हुए उठे।”[125]

दीनू जब अपनी माँ की बेमतलब वाले कामों से चीढ़ जाता तो चाची उसे समझाती थी और कहती “तो क्या करे घर में बैठी-बैठी? ठीक तो कहती है बहू ले आओ उसकी देख रेख में लगे, न दरार सूझेगी, न नींव की सीलन।”[126]

दीनू जब हर तरह से निराश और अंदर से टूटा हुआ महसूस करता तो चाची के घर चला जाता और चाची के घर में अपने आपको हलका महसूस करता था। “असल में चाचा-चाची के घर की ये तो बात है यहाँ आकर जैसे दीनू चारों ओर से बिखरता हुआ दीनू, हर ओर से संवरने लगता है अंदर से जहाँ-जहाँ टूट भी गया है वह भी सार्थक लगने लगता है।”[127]

### 2.4.5 मौसी

माँ की बहन को मौसी कहते हैं। मौसी अपनी बहन के बच्चे को उसी तरह चाहती है जैसे अपनी बहन से प्यार करती है। वह अपनी बहन के बच्चे को अपने बच्चे की तरह प्यार करती है। ‘हरिनाकुश और

---

[124] वहीं पृष्ठ संख्या, 262

[125] वहीं, पृष्ठ संख्या, 265

[126] वहीं, पृष्ठ संख्या, 267

[127] वहीं, पृष्ठ संख्या, 268

उसका बेटा' कहानी में धनिया अपनी बहन के बेटे को प्राण से भी ज्यादा चाहती थी। जब बिसुआ के बाप ने उसे कोड़े से मारा तो धनिया आकर उसे अपने गोद में दुबकाकर कहती है– "मार डाल हत्यारे। मुफ्त का है न। अपनी पाप की कुढ़न उस पर निकाल रहा है। खबरदार जो हाथ चलाया अबकी दफे।"[128] धनिया उसके बाप से कहती है कि उसे बस्ती में हरिजन सेवा वालों की पाठशाला में भेजे। धनिया बिसुआ की भविष्य की चिंता में सदा लगी रहती है। धनिया बिसुआ से जितना प्यार करती थी उतना ही नाराज होने पर बाप के साथ तुलना कर कहती है "बाप से बेटा कोई कम थोड़े ही है। मुझ पर गुस्सा उतार रहा है कम्बख्त।"[129]

### 2.4.6 प्रेयसी (प्रेमिका)

मानव-जीवन में प्रेम का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। प्रेम स्त्री के पूरे जीवन काल की आधारशिला होती है। जिस पर वह भवन को मजबूती से खड़ा करती है। स्त्री-पुरुष के जीवन में प्रेम का आकर्षण सहज सुलभ है। प्रेम का एक मधुकण मानव जीवन में पर्याप्त परिवर्तन ला सकता है। गरीब हो या श्रीमंत, शिक्षित हो या अनपढ़ सबकी आत्मा किसी के प्रेम के लिए तड़पती है। धर्मवीर भारती ने स्त्री-पुरुष के प्रेम का चित्रण अपने कथा साहित्य के अंतर्गत उपन्यासों और कहानियों में किया है। प्रेम का चित्रण विवाह पूर्व और विवाह के बाद दो रूपों में किया गया है। विवाह पूर्व प्रेम का चित्रण उन्होंने 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' उपन्यास में तन्ना और जमुना का प्रेम, माणिक और लीली का प्रेम तथा माणिक और सती का आकर्षण के रूप में किया है। धर्मवीर भारती ने अपने दूसरे उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में सुधा और चंदर के प्रेम का चित्रण किया है। राजकिशोर के अनुसार- "प्रेम पुरुष के जीवन का एक कोना भर है, जबकि स्त्री के लिए वह पूरा जीवन है।"[130]

---

128 वहीं, पृष्ठ संख्या, 84

129 वहीं, पृष्ठ संख्या, 85

130 राजकिशोर, स्त्री पुरुष कुछ पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन,दिव्तीय संस्करण,पृष्ठ संख्या,23

धर्मवीर भारती की कहानियों में 'अमृत की मृत्यु' कहानी में अंजलि और आचार्य नागार्जुन का प्रेम, 'आधार और प्रेरणा' कहानी में सरिता और शिखर का प्रेम तथा 'स्वर्ग और पृथ्वी' कहानी में कल्पना और स्वर्ग से निर्वासित युवक (प्रेम) का प्रेम और वेदना के द्वारा प्रेम को पृथ्वी पर पहली बार एक बालिका ने और उसके परदेसी पथिक ने महसूस किया था। 'पूजा' कहानी में पूजा और नक्षत्र का प्रेम 'स्वप्नश्री ओर श्री रेखा' कहानी में स्वप्नश्री और युवराज समुद्रगुप्त का प्रेम, 'शिंजिनी' कहानी में शिंजिनी और किंजल्क का प्रेम, 'नारी और निर्वाण' कहानी में गौतम और यशोधरा, 'सावित्री नंबर दो' कहानी में सावित्री और राजाराम के बीच आकर्षण तथा सावित्री और उसके पति का प्रेम, 'यह मेरे लिए नहीं' कहानी में दीनू और सांजी तथा दीनू और अर्पणा का प्रेम। 'आश्रम' कहानी में शांता तथा प्रकाश का प्रेम और कुन्नी तथा विमली के बीच का आकर्षण को दिखने का प्रयत्नकिया गया है। 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में सुधा और चंदर का प्रेम सहज और आत्मीय है। उनका पारस्परिक प्रेम वासना से परे है। सुधा और चंदर का वह परस्पर खुलकर बातें करना, अपनी मन की बात एक दूसरे से कहना रूठना-मनाना यह आपस का प्यार था। जब डॉ. शुक्ला के कहने पर चंदर ने सुधा को विवाह के लिए राजी किया तो चंदर के हृदय में अनचाहा बोझ पड़ गया था। चंदर सुधा को समझाते हुए कहता है– "सुधा तुम हमें जाने क्या समझ रही होगी, लेकिन अगर तुम समझ पाती कि मैं क्या सोचता हूँ। क्या समझता हूँ। मैं तुम्हारे मन को समझता हूँ सुधा। तुम्हारे मन ने जो तुमसे नहीं कहा। वह मुझसे कह दिया था। जब सुधा रोने लगती है और नाराज हो जाती है तो चंदर कहता है। हम दोनों एक-दूसरों की जिंदगी में क्या इसीलिए आये कि एक दूसरे को कमजोर बना दे।"[131]

परंतु सुधा किसी से भी विवाह नहीं करना चाहती थी, परंतु मजबूरन उसे विवाह करना पड़ता है। और विवाह के बाद भी अपनी जिंदगी को सुधार नहीं पाती है। अपने ससुराल में पूजा-पाठ तथा ससुराल वालों का कहना मानती हुई अपने आप को दुःख में मिटा देती है। सुधा का पति समझदार था, परंतु राजनीतिज्ञ होने के कारण भावुक नहीं था। हर बात को ज्ञान से तोलता था। मन से नहीं, सुधा भावना में

[131]धर्मवीर भारती , गुनाहों का देवता ,,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन , तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या, 175

बहकर। अंत में मर जाती है। सुधा के पति ने महसूस किया कि सुधा शादी-व्याह जैसी चीजों के लिए नहीं बनी थी। 'अमृत की मृत्यु' कहानी में देवदासी अंजलि का प्रेम आचार्य नागार्जुन को प्रेम करने के लिए बना देता है और निर्वाण में विश्वास करने वाले सांसारिक मोह माया में बंध जाता है। अंजलि की मृत्यु पर आचार्य देवता से कहते हैं– "मैं तुम्हारी पूजा काहे से करूं। हृदय तो मेरे पास है ही नहीं! रहा भी हो तो पहले ही स्पर्श में चूर-चूर हो चुका। लेकिन है मस्तिष्क है उसे तुम्हारे चरणों पर रखता हूँ देवता! मुझे पत्थर बना लो।"[132]

अंजलि को प्यार पर विश्वास था– "मुझे जीवन के जीतने की कामना ही नहीं आचार्य। हम जीवन को केवल प्यार करते हैं। जीवन स्वयं हमारे सामने हार जाता है।"[133]

'आधार और प्रेरणा' कहानी में शिखर सरिता के प्रेम को ठुकराकर स्वर्ग की तलाश में निकलता है और जब शिखर वह स्वर्ग की साधना छोड़कर सरिता के पास आता है तो सरिता कहती है– "मैंने भी तप की दीक्षा ले ली।" शिखर को उसकी भूल का अहसास दिलाती है और कहती है– "मैं भूल रही हूँ या तुम भूल रहे हो! याद करो शिखर, जब तुम स्वर्ग के पीछे किसी को ठुकरा कर चले गए थे तो क्या क्षण भर को भी सोचा था कि तुम किसी का स्वर्ग उजाड़कर जा रहे हो! यही तुम्हारा प्रेम था शिखर।"[134] इस संदर्भ में प्रसाद ने अपनी सुप्रसिद्ध कृति महाकाव्य कामायनी में नारी की सत्ता के महत्व को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है– "तुम भूल गए पुरुषत्त्व– मोह में कुछ सत्ता है नारी की, समरसता है संबंध बनी अधिकार और अधिकारी की।"[135]

सरिता शिखर और स्वर्ग के मार्ग से हट जाती है और उसके लिए मंगलकामना करती है। शिखर सरिता की प्रेरणा को आधार बनाता है सरिता सिसककर कह उठती है– "जाओ देवता। तुम कभी न समझोगे, सरिता ने तुम्हें क्यों लौटा दिया। क्षणभर के उल्लास के लिए सरिता तुम्हारी साधना को तोड़ना नहीं

---

[132]पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, ज्ञानपीठ प्रकाशन तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या, 49

[133] वहीं, पृष्ठ संख्या 46

[134] वहीं, पृष्ठ संख्या 53

[135] कामायनी, जयशंकर प्रसाद,लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2010,इड़ा सर्ग, पृष्ठ संख्या 53

चाहती थी।"[136] शायद सृष्टि ने स्त्री को इसी उदात्त भाव के लिए रचा है। कि वह सभी के पथ को परास्त करे।

'पूजा' कहानी में पूजा मंदिर में रहने वाले आचार्य के पास रहती थी। जो एक शिल्पी से प्रेम कर बैठती है। वह (नक्षत्र) शिल्पी से पूछती है कि तुम्हारे जीवन में नारी का क्या स्थान है तो वह कहता है कि नारी उसके लिए पूजा के फूल है जो देवता के चरणों में अर्पित कर देना चाहता है। उसके जीवन में नारी का कोई स्थान नहीं है। नक्षत्र पूजा का स्थान अपने जीवन में तब समझता है जब पूजा को उसके पिता के आज्ञानुसार देवदासी का जीवन बिताना पड़ता है। नक्षत्र देवी की प्रतिमा में पूजा का रूप ढालकर अपने संप्रदाय से निर्वासन का दंड पाता है। स्त्री की इस दशा को देख कर हमें डॉ प्रभा खेतान की पुस्तक स्त्री उपेक्षिता की पंक्ति याद आती है कि- "पुरुष का प्रेम पुरुष के जीवन का एक हिस्सा भर होता है लेकिन स्त्री का तो यह सम्पूर्ण अस्तित्व ही है।...स्त्री का प्यार शर्तहीन होता है, क्योंकि स्त्री केवल एक को ही अपनाती है।"[137]

स्वप्नश्री और श्रीरेखा अंतरंग सहेली थी, जिन्होंने युवराज से प्रेम किया था किंतु स्वप्नश्री और युवराज समुद्रगुप्त के प्रेम को स्वीकराते हुए श्रीरेखा मृत्यु को गले लगाती है, क्योंकि प्यार का दूसरा नाम त्याग ही है और श्रीरेखा का त्याग का पता उसके सहेली स्वप्नश्री को भी नहीं चलता है। नारी और निर्वाण में गौतम अपने प्रेमिका यशोधरा से नहीं माता यशोधरा से कहते हैं– "नारी! माँ! शक्ति! तुम्हारा यह स्वरूप देवोपम है यशोधरा! मैंने तुम्हें पहचाना न था यशोधरा।"[138]

गौतम का निर्वाण माता के आगे झुक जाता है और कहते हैं– "नारी! हाँ कह सकती हो! पर निर्वाण प्रणयिनी गोप के सामने नहीं झुका वह झुका है राहुल की माता के सामने। निर्वाण नारी के सामने झुका

[136] वहीं, पृष्ठ संख्या 54

[137] स्त्री उपेक्षिता अनु डॉ प्रभा खेतान,हिंद पॉकेट बुक्स प्रकाशन संस्करण 2002,पृष्ठ संख्या 331

[138] सांस की कलम से प्रस्तुति पुष्पा भारती भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन तीसरा संस्करण 2014,पृष्ठ संख्या 201

अवश्य पर तब जब मातृत्व की साधना ने नारी को निर्वाण में भी ऊँचा बना दिया।"[139] यशोधरा अपने प्रेम को अपना पुत्र अर्पित करती है और यशोधरा के सिंदूर-बिंदु में झिलमिला उठा बुद्ध का निर्वाण।

'सावित्री नंबर दो' कहानी में सावित्री अपनी बीमारी में अपने से कम उम्र के राजाराम पर आकर्षित हो जाती है। उसके आने से उसके हृदय में भी संतोष होता था तथा पति के व्यवहार में दया का भाव दिखता था, जिससे वह उदास हो जाती थी। जिससे उसके पड़ोस में रहने वाली माया मौसी माँ से कहती है– "राजारमवा से तो ऐसे घुल मिलकर बातें होती हैं और अपना आदमी शाम को आता है तो मुँह लटकाकर बैठ जाती है।"[140]

'यह मेरे लिए नहीं' कहानी में अपर्णा बनर्जी दीनू से प्रेम करती थी तथा परिस्थिति के कारण उसे दीनू को छोड़कर अपने पिता के साथ जाना पड़ता है। वह दीनू को उसके संकट के समय में सहायता करना उसे दुखी होने पर मनाती थी किंतु उसे दीनू को छोड़कर जाना पड़ता है।

'आश्रम' कहानी में शांता प्रकाश को प्राणों से भी अधिक प्रेम करती थी। वह प्रकाश के प्रेम को हमेशा साथ रखने के इरादे से उसका अंश अपने साथ लाई थी एवं उसने समाज तथा माँ से लड़ी भी, परंतु उसकी माँ ने उसका गर्भपात करवा दिया था। अंत में शांता समाज से हारकर शांत हो जाती है और आश्रम में अपना जीवन व्यतीत करती है।

कथाकार ने अपने कथा साहित्य में स्त्री के भीतर के सभी स्वरूप व्यक्त करने का एक सफल प्रयत्न किया है। उनके कथा-साहित्य में स्त्रियाँ भारतीय संस्कृति को मानने वाली तथा परिस्थितियों से लड़कर कभी जीतती है तो कभी हार जाती है। तथा उन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यासों को किसी वाद के दायरे में नहीं रखा है जो भी लिखा है सत्य लिखा है। अपनी कहानी संग्रह 'साँस की कलम से' में स्त्रियों के अच्छे या बुरे चरित्र को परिस्थितियों के आधार पर प्रकाशित किया है।

139 वहीं पृष्ठ संख्या 203

140 वहीं पृष्ठ संख्या 250

## संदर्भ ग्रंथ सूची


28 डॉ. अमिता मुखर्जी ,वूमेन इन इंडिया लाइफ एंड सोसायटी,पुस्तक महल  प्रकाशन, पहला संस्करण,1996, पृष्ठ संख्या 275

29 आशारानी व्होरा, नारी शोषण आईने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982, पृष्ठ संख्या 225

30  संपादक पुष्पा भारती,धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली,दूसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या 20

31 अनु डॉ प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिन्दी पाकेट बुक्स प्रकाशन, नयी दिल्ली, नवीन संस्करण 2002 पृष्ठ संख्या 19

[32] स्त्री  चिंतन की चुनौतियां,रेखा कस्तवार , राजकमल प्रकाशन, पहला  संस्करण:2006,पृष्ठ संख्या 21

[33] जॉन स्टूअर्ट मिल, स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल प्रकाशन 2016 पृष्ठ 26

[34] संपादक डॉक्टर संजय गर्ग, स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, सामयिक प्रकाशन, दूसरा संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 94

[35] संपादक डॉक्टर संजय गर्ग, स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास, सामयिक प्रकाशन, दूसरा संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 94

[36] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या28

[37] वहीं, पृष्ठ संख्या 28

[38] वहीं, पृष्ठ संख्या29

[39] वहीं, पृष्ठ संख्या 28

[40] वहीं, पृष्ठ संख्या 45

[41] धर्मवीर भारती,गुनाहों के देवता, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, तिहतरवां संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या 106

[42] वहीं, पृष्ठ संख्या 106

[43] वहीं, पृष्ठ संख्या 223

[44] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या 26

[45] वहीं पृष्ठ संख्या 28

[46] धर्मवीर भारती, गुनाह का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 73

[47] धर्मवीर भारती, गुनाह का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 45

48 https://hi.quora.com

[49] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या 19

[50] धर्मवीर भारती,गुनाहों का देवता,, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 45

[51] वहीं, पृष्ठ संख्या 45

[52] वहीं, पृष्ठ संख्या 187

[53] पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, ज्ञानपीठ प्रकाशन तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 281

[54] वहीं, पृष्ठ संख्या 161

55 बिंदु अग्रवाल, हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण, राधाकृषण प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या45

[56] धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या 43-44

[57] वहीं, पृष्ठ संख्या 29

[58] वहीं, पृष्ठ संख्या 38

[59] वहीं, पृष्ठ संख्या 38

[60]धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 68

[61]धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 252

[62]जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2010, लज्जा सर्ग, पृष्ठ संख्या 34

[63]डॉ. रामेश्वर नारायण, साहित्य में नारी विविध संदर्भ नचिकेत प्रकाशन, दिल्ली, 1990 ,पृष्ठ संख्या 77

[64]ऋग्वेद

[65]राजकिशोर, स्त्री और पुरुष कुछ पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2000, पृष्ठ संख्या 31

66 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 88

67 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 89

68 वहीं, पृष्ठ संख्या89

[69] वहीं, 89

[70] वहीं, 89

71 वहीं, 89

[72]जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2010, इड़ा सर्ग, पृष्ठ संख्या 53

73 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या 90

[74]वहीं पृष्ठ संख्या 93

[75] जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2010, लज्जा सर्ग, पृष्ठ संख्या 34

[76]प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या332

[77]प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण कहानियां, सांस कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014 पृष्ठ संख्या333

[78]धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवां संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या 255

79 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2010, लज्जा सर्ग, पृष्ठ संख्या 33

[80]सीमोन द बोउवार, अनु-प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिन्द पाकेट बुक्स प्रकाशन, नवीन संस्करण 2002, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 233

[81] आशारानी व्होरा, नारी शोषण आईने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982, पृष्ठ संख्या 211

[82] राजेंद्र यादव, आदमी की निगाहों में औरत, राजकमल प्रकाशन पेपर बैक्स नई दिल्ली, पांचवां संस्करण 2019, पृष्ठ संख्या 14

[83] https://www.hindisamay.com

[84]शांतिकुमार स्याल, नारीत्व, आत्माराम एंड संस प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1998, दिल्ली, पृष्ठ संख्या 18

[85]धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या-29-30

[86]धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010 पृष्ठ संख्या 30

[87]धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या 42

[88] वहीं, पृष्ठ संख्या 42

[89] वहीं पृष्ठ संख्या 31

[90] वहीं पृष्ठ संख्या 31

[91] वहीं पृष्ठ संख्या 46

[92] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 73वां संस्करण 2015 पृष्ठ संख्या,50

[93] वहीं पृष्ठ संख्या69

[94] वहीं पृष्ठ संख्या 95

[95] प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण 2014, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 121

[96] वहीं, पृष्ठ संख्या 122

[97] वहीं,122

[98] वहीं, पृष्ठ संख्या 114

[99] वहीं, पृष्ठ संख्या, 273

100 वहीं, पृष्ठ संख्या 201

101वहीं, पृष्ठ संख्या 201

102वहीं, पृष्ठ संख्या 201

103 आशारानी व्होरा, नारी शोषण आईने और आयाम नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982, पृष्ठ संख्या 226

104 धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 39वाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 29

105 वहीं पृष्ठ संख्या, 29

106 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या 223

107 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 30

108 वहीं, पृष्ठ संख्या 84

109 प्रस्तुति पुष्पा भारती धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014, पृ पृष्ठ संख्या 234

110 राजकिशोर, स्त्री परंपरा और आधुनिकता, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1999, पृष्ठ संख्या 15

111 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 242

112 वहीं, पृष्ठ संख्या 244-245

113 धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या 40

114 वहीं, पृष्ठ संख्या ,39

115 वहीं, पृष्ठ संख्या, 41

116 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण2014, पृष्ठ संख्या 284

117 वहीं, पृष्ठ संख्या 305

118 वहीं पृष्ठ संख्या 317

119 वहीं पृष्ठ संख्या 317

120 वहीं, पृष्ठ संख्या 318

121 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, उनतालीसवां संस्करण पृष्ठ संख्या 339

122 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 69

123 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या 224

124 वहीं पृष्ठ संख्या 262

125 वहीं पृष्ठ संख्या 265

126 वहीं पृष्ठ संख्या 267

127 वहीं पृष्ठ संख्या 268

128 वहीं पृष्ठ संख्या 84

129 वहीं पृष्ठ संख्या 85

130 राजकिशोर, स्त्री पुरुष कुछ पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, दूसरा संस्करण, पृष्ठ संख्या,23

131 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवताभारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या, 175

132 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण पृष्ठ संख्या 49

133 वहीं पृष्ठ संख्या 46

134 वहीं पृष्ठ संख्या 53

135 जयशंकर प्रसाद, कामायनी, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2010, इड़ा सर्ग, पृष्ठ संख्या 53

136 वहीं, पृष्ठ संख्या 54

137 अनु डॉ प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिंद पॉकेट बुक्स प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2002, पृष्ठ संख्या 331

138 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2014, पृष्ठ संख्या 201

139 वहीं, पृष्ठ संख्या 203

140 वहीं, पृष्ठ संख्या 250

# तृतीय अध्याय

# धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री सरोकार

3.1 **स्त्री स्वतंत्रता**

3.2 **स्त्री स्वतंत्रता का हनन**

3.3 **स्त्री और यौन नैतिकता**

3.4 **अस्मिता की तलाश में संघर्षरत स्त्री**

3.5 **स्त्री और विवाह**

3.6 **निष्कर्ष**

## तृतीय अध्याय

# धर्मवीर भारती के चयनित कथा साहित्य में स्त्री सरोकार

सृष्टि की सबसे सुंदर रचना स्त्री है। जिसे समाज का एक अभिन्न अंग माना गया है। समाज के लिए पुरुष की जितनी जरूरत है, उतनी ही स्त्री की भी है। सच कहूँ तो प्रकृति के मूल में स्त्री का ही अस्तित्व है, स्त्री के बिना किसी भी समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। किंतु सदियों से पुरुष और स्त्री दोनों उतने ही महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी है, जितने की रथ के दो पहिए। जिस प्रकार एक उपयोगी रथ के लिए जरूरी वस्तुओं के साथ पहिए भी अपना विशेष महत्त्व रखते हैं यदि दोनों पहियों में से एक पहिया छोटा, निर्बल है तो दूसरा पहिया भी किसी काम का नहीं रहता और धीरे-धीरे रथ का अस्तित्व मिट जाता है। ठीक इसी प्रकार पारिवारिक जीवन में पुरुष व स्त्री की समानता आवश्यक है। जिसने भी स्त्री की आवश्यकता को न के बराबर समझा है उसने स्त्री को सही से समझने का प्रयास ही नहीं किया है। क्योंकि वह लोग स्त्रियों को केवल वस्तु के रूप में ही देखते हैं।

सदियों से सामाजिक रीति-रिवाज और पारिवारिक बंधन में स्त्री बंधी हुई है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय कवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपनी दो पंक्तियों में स्त्री के पूरे जीवन का चित्र कुछ इस प्रकार उजागर कर दिया है–

“अबला जीवन हाय! तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी।”[141]

न जाने कब से भारतीय स्त्री इस दर्द भरी कहानी को अपने आँचल में छुपाकर बैठी है केवल पुरुष की आवश्यकता को पूरा करने वाले यंत्र के रूप में उसको देखा गया। उसके बाहरी सौंदर्य का केवल काम उत्तेजना के लिए प्रयोग किया गया लेकिन उसके भीतर मन में झांकने का न किसी ने प्रयास किया और

[141] https://hi.quora.com

न किसी को अवसर मिला। यही कारण है कि स्त्री के जीवन में विभिन्न प्रकार की समस्याएं आती रहती है। जिसके कारण स्त्री का सम्पूर्ण जीवन दु:खमय बना रहता है। आज की स्त्री के सामने जो समस्याएं दृष्टिगत होती है। उनमें से अनेक समस्या आज से शताब्दियों पूर्व भी थीं परंतु तब की स्त्रियों के लिए वे समस्याएं, समस्याएं न होकर स्त्री धर्म था परंतु वर्तमान समय में स्त्रियों ने उन समस्याओं को धर्म के रूप में न देखकर केवल समस्याओं के रूप में ही देखा है। और साथ ही उन समस्याओं को हल करने का प्रयास भी कर रही हैं।

स्त्री जीवन की समस्याएं किसी न किसी रूप में प्रत्येक युगों से उपस्थित रहीं है। लेकिन इन समस्याओं के प्रति दृष्टिकोण में अंतर अवश्य दिखाई देता है। आज की स्त्री प्राचीन काल की स्त्री से अधिक प्रबुद्ध है और उसमें अपने अधिकारों के लिए नई चेतना जागृत हो गई है। पुरुष को मनुष्य व मानव के रूप में देखा जाता है तो स्त्री को केवल वस्तु माना जाता है। पुरुष की जननी होने पर भी स्त्री को समाज में दूसरे दर्जे का स्थान दिया गया है। इसी दोयम दर्जे के खिलाफ स्त्री अपनी आवाज़ बुलंद कर अपने अधिकारों के लिए समाज में आगे बढ़कर अपने सरोकारों की बात करती हुई नज़र आती है। इसीलिए आज के युग में स्त्री सरोकार की बातें चारों ओर हो रही हैं। यदि कोई भी कथाकार स्त्री संबंधी विचारों को अपने साहित्य में उल्लेखित करता है तो वह स्त्री सरोकार से जुड़े प्रश्नों को नजरअंदाज करके अपने कथा साहित्य को संपूर्ण नहीं कर सकता है। इसलिए धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्री से संबंधित प्रश्नों व समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

सरोकार से अभिप्राय संबंध व वास्ते से है। मानक विशाल हिंदी शब्दकोश के अनुसार- "सरोकार आपस के व्यवहार का संबंध,लगाव, वास्ते को कहते हैं।"[142]

[142] संपादक डॉ शिव प्रसाद भारद्वाज शास्त्री, मानक विशाल हिंदी शब्दकोश,अनिल प्रकाशन, न्यू मार्केट, नई दिल्ली

इसलिए स्त्री सरोकार से अभिप्राय है स्त्री से संबंधित अथवा स्त्री विषयक मुद्दों से जुड़ा हुआ। स्त्री सरोकार और दृष्टि से तात्पर्य है स्त्री और स्त्री-संसार से संबंधित विचारों, प्रश्नों, समस्याओं, चर्चाओं, मुद्दों पर गहन-विश्लेषण व दृष्टि से विचार विमर्श।

समकालीन समय में स्त्री विमर्श ने समाज में एक ऐसी क्रांति ला दी है जो स्त्री के प्रति अपने रूढ़िवादी दृष्टिकोण को परिवर्तित करने का आग्रह करती है। यही आग्रह हमें धर्मवीर भारती के कथा साहित्य लेखन में देखने को मिलता है। स्त्री विमर्श में स्त्री विमर्श का प्रश्न, मानवीय अस्मिता का प्रश्न प्रमुख है। समकालीन साहित्य लेखन में स्त्री स्वतंत्रता व स्त्री अस्मिता के प्रश्नों ने उग्र-बहस का रूप लिया हुआ है। लगभग इन्हीं प्रश्नों पर विचार-विश्लेषण हमें धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में दिखाई देता है। उन्होंने अपने कथा साहित्य के  माध्यम से स्त्री से संबंधित प्रश्नों व समस्याओं को हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया है।

धर्मवीर भारती के कथा साहित्य के संदर्भ में देखा जाए तो उनके कथा लेखन में कई स्थलों पर, कई प्रसंगों में उनकी स्त्री-विषयक विचारधारा प्रकट होती है। स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री अस्मिता, स्त्री चेतना, स्त्री मुक्ति, यौन नैतिकता आदि कई प्रश्नों पर उन्होंने अपने विचारो की अभिव्यक्ति की है। स्त्री स्वतंत्रता व स्त्री अस्मिता से जुड़े उन तमाम प्रश्नों को धर्मवीर भारती अपने लेखन के घेरे में लेते हैं जो स्त्री की अस्मिता पर प्रश्न चिन्ह लगाते हैं। वे न केवल मुद्दों पर प्रश्न उठाते हैं बल्कि इन प्रश्नों का हल भी प्रस्तुत करने का प्रयत्न भी करते हैं। धर्मवीर भारती इन सभी सामाजिक परंपराओं, कुप्रथाओं व रूढ़ियों का यथार्थ चित्रण कर उपयुक्त विश्लेषण और विवेचन भी करते हैं।

जिस प्रकार से कथाकार ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन से जुड़े सभी सरोकारों व विभिन्न समस्याओं का चित्रण किया है। उसी प्रकार कथाकार ने उपन्यासों में भी स्त्री जीवन से जुड़े सभी सरोकारों से सम्बंधित समस्याओं का चित्रण किया है। (स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री स्वतंत्रता का हनन, स्त्री और यौन नैतिकता, अस्मिता की तलाश में संघर्षरत स्त्री, स्त्री और विवाह) इन सभी विभिन्न शीर्षकों के अंतर्गत धर्मवीर भारती की इस विचार दृष्टि को मूल्यांकित करने का एक छोटा प्रयास किया है।

### 3.1 स्त्री स्वतंत्रता

स्त्री स्वतंत्रता का प्रश्न आज के स्त्री विमर्श का एक अहम प्रश्न है। स्त्री बेशक वर्तमान में कुछ स्वंतत्र हुई हो किंतु अभी भी वह पुरुष की भांति स्वतंत्र नहीं है। उसे प्रत्येक विषय में पुरुष पर निर्भर रहना पड़ता है। अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति व अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए स्त्री को बहुत संघर्ष करना पड़ता है। स्त्री ने जब-जब अपनी एक अलग पहचान के साथ जीना चाहा तब-तब उसे घर, परिवार व समाज के नकारात्मक दृष्टिकोण का सामना करना पड़ा। आज भी समाज की नज़रें उसे घर परिवार के दायरे से निकालकर स्वतंत्र अस्तित्व को निर्मित करने की आजादी नहीं देती। इस बात पर तसलीमा नसरीन अपनी पुस्तक 'औरत का कोई देश नहीं' में कहती है– "औरत जिंदगी भर एक हाथ से दूसरे हाथ में समर्पित होती रहती हैं। बस उसके मालिक बदलते रहते हैं। पिता से प्रेमी को प्रेमी से पति को पति से पुत्र को। औरत की ज़िंदगी औरत की तो होती नहीं औरत विभिन्न रिश्तों से पुरुष से बंधी हुई है, जंजीरों में जकड़ी हुई होती है।"[143] वर्तमान में स्त्री अपने अधिकारों के प्रति जागरूक व सचेत है। वह अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत है परंतु यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि आज स्त्री आर्थिक स्तर पर स्वतंत्र होकर भी अपनी मुक्ति की राह तलाश रही है। राह की तलाश में कुछ परिवर्तन जरूर हुए हैं किंतु अभी भी वह पूरी तरह आजाद नहीं है। महादेवी वर्मा आज की स्त्री दशा पर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए कहती हैं कि– "आज हमारी सामाजिक परिस्थिति कुछ और ही है। स्त्री न घर का अलंकार मात्र बनकर जीवित रहना चाहती है, न देवता की मूर्ति बनकर प्राण-प्रतिष्ठा चाहती है। कारण वह जान गई है कि एक अर्थ में अन्य की शोभा बढ़ाना है तथा उपयोग न रहने पर फेंक दिया जाना है। तथा दूसरे का अभिप्राय दूर से उस पुजापे को देखते रहना है, इसे उसे न देकर उसी के नाम पर लोग बात लेंगे।"[144] मतलब यह कि आज स्त्री अपनी स्वतंत्रता और अस्तित्व को पहचानने लगी है परंतु इसके उपरांत आज भी समाज की समय-सीमा में स्त्री को घर परिवार की शोभा माना जाता है इसलिए उसे घर की चार दीवारी तक ही

[143] तसलीमा नसरीन, औरत का कोई देश नहीं, वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2009,पृष्ठ संख्या 24

[144] हेमलता महिश्वर, स्त्री लेखन और समय के सरोकार, नेहा प्रकाशन , संस्करण 2006, पृष्ठ संख्या 59

सीमित रखा जाता है। इस रूढ़िवादी विचारधारा से आज के पुरुष की मानसिकता भी संक्रमित है। एक ओर शिक्षा के प्रसार और आधुनिकता के प्रभाव में पुरुष स्त्री को उसकी स्वतंत्रता का अधिकार देने की बात करता है, दूसरी ओर वही पुरुष अपने घर की स्त्री को स्वतंत्रता की राह पर चलते देखकर भयभीत हो जाता है। स्त्री की स्वतंत्रता पुरुष को अपनी स्वतंत्रता में बाधा के रूप में नज़र आती है। आज का वर्तमान साहित्य स्त्री की इसी स्वतंत्रता की तड़प को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत करता है– "स्त्री स्वतंत्रता की बात करते हैं तो सवाल यह उठता है कि कैसी स्वतंत्रता चाहती हैं स्त्री? स्त्री की स्वतंत्रता की चाह परिवार को तोड़ने की चाह नहीं हो सकती, उसे जोड़ने की होनी चाहिए। जोड़ने के इस काम में पुरुष की भागीदारी उतनी है जितनी स्त्री की है। संवैधानिक रूप में स्त्री बिल्कुल पुरुष के बराबर है लेकिन वास्तविक जीवन में? प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है।"[145]

स्त्री स्वतंत्रता से जुड़े इन्हीं प्रश्नों को आज का स्त्री विमर्श समाज के सम्मुख प्रस्तुत करता है। एक पढ़ी-लिखी व आत्मनिर्भर स्त्री भी अपने घर में पुरुष सत्ता के अधीन है। इसका कारण यह नहीं है कि एक औरत पुरुष के समक्ष चुनौतीपूर्ण भूमिका अदा करने का साहस नहीं रखती बल्कि घर परिवार के प्रति लगाव उसे धैर्य अपनाए रखने के लिए विवश करता है। घर और बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी का एहसास एक औरत अपने अंदर जितना महसूस और अनुभव करती है उतना पुरुष नहीं। स्त्री को भय होता है कि कहीं उसकी बगावत से घर न बिखर जाए। स्त्री की इसी कमजोरी का पुरुष फायदा उठाता है और स्त्री को अपने अधीन के लिए मजबूर करता है। इसी परिदृश्य को सीमोन द बोउवार अपनी पुस्तक में उजागर करती हुई कहती हैं कि– "औरत को औरत होना सिखाया जाता है औरत बनी रहने के लिए उसे अनुकूल किया जाता है।"[146]

परंतु यह स्थिति अब हर स्त्री की नहीं है। स्त्री की छवि अब परिवर्तित होने लगी है। समकालीन परिवेश में स्त्री विमर्श स्त्री शोषण की समस्या को केवल पारिवारिक स्तर पर न देखकर वैश्विक स्तर पर देख रहा

---

[145] डॉ. के.एम मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन , संस्करण 2017 नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 76

[146] अनु डॉ प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिन्द पाॅकेट बुक्स प्रकाशन, नवीन संस्करण 2002, पृष्ठ संख्या, 21

है और आकलन भी कर रहा है। साहित्य लेखन में ऐसी बहुत सी स्त्री पात्र हैं जो स्त्री की इस बदलती छवि को प्रतिबिंबित करती हैं। समकालीन साहित्य में स्त्री की घुटन, त्याग, कुंठा को खोलकर व्यक्त किया गया है। पुरुष के समान अधिकार प्राप्त करने के लिए स्त्री अपने घर, परिवार, समाज को चुनौती देती हुई दिखाई देती है। "पित्तृसत्तात्मक समाज में पुरुष आर्थिक चाबुक से स्त्री पर शासन करता है इसलिए स्त्री की आर्थिक आजादी को उसकी लड़ाई का पहला चरण माना जाता है और भारतीय स्त्री ने इस आजादी के रास्ते पर अपना पहला कदम बढ़ाया है। आधुनिक सामाजिक परिदृश्य में स्त्री केवल पारंपारिक घरेलू भूमिकाएं निभाने वाली स्त्री ही नहीं बल्कि वह शिक्षित और नौकरी पेशा बनकर एक आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में परिभाषित हो रही है और जो पुरुष के समानांतर अपनी पहचान बना रही है।"[147]

धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य के भीतर ऐसे स्त्री पात्रों की रचना करते हैं। जो अपनी स्वतंत्रता की बात करती है। मसलन कथाकार ने अपने प्रथम उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में गेसू अपने प्रेमी अख्तर से धोखा मिलने पर कभी न शादी करने का फैसला लेती है और साथ ही आत्मनिर्भर होने का निश्चय करती है– "अब आपकी शादी अम्मीजान कब कर रही हैं? कभी नहीं! मैंने कस्द कर लिया है कि शादी ताउम्र नहीं करुंगी। देहरादून के मैटरनिटी सेंटर में काम सीख रही थी कोरस पूरा हो गया अब किसी अस्पताल में काम करूंगी।

आप…!

क्यों आपको ताज्जुब क्यों हुआ? मैंने अम्मीजान को इस बात के लिए राजी कर लिया है मैं अपने पैरों पर खड़ी होना चाहती हूँ।"[148]

---

[147] राजेश कुमार गर्ग, दसवें दशक के स्त्री उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की खोज (आलेख ),संपादक कल्पना वर्मा ,स्त्री विमर्श: विविध पहलू, पृष्ठ संख्य100

[148] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 208

यह बात कथाकार ने भारत की आजादी के दो वर्षों के बाद एक स्त्री से कहलवायी है। वह उस समय स्त्री को आत्मनिर्भर और स्वतंत्र बना रहे हैं। क्योंकि स्त्री स्वतंत्रता के लिए उसका आर्थिक तौर पर स्वतंत्र व आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। एक पराश्रित स्त्री के रूप में वह अपने जीवन में स्वतंत्रता की कल्पना नहीं कर सकती। आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री में एक आत्मविश्वास पैदा करती है जो उसे अपने ऊपर हो रहे शोषण अत्याचार का विरोध करने के लिए शक्ति प्रदान करता है।

यह बात विचारणीय है कि धर्मवीर भारती उस समय सीमा में स्त्री की स्वतंत्रता की बात करते हैं जब उस समय स्त्री को नाम मात्र की स्वतंत्रता मिली थी।

कथाकार ने ठीक इसी तरह अपनी कहानी 'गुलकी बन्नो' में सती का स्वतंत्र पात्र गढ़ा है। जो लगभग 'सूरज का सातवां घोड़ा' की सती की तरह है। सत्ती साबुन वाली जो अपनी कमर में काले भेंट का चाकू लटकाएं हुए रहती थी। जिससे वह साबुन की टिक्की काटकर दुकानदारों को देती थी और समय आने पर अपनी व गुलकी की हिफाजत भी करती थी।

कथाकार ने अपने कथा साहित्य में ऐसी स्त्रियों का सृजन करके यह बताने का प्रयास किया है कि स्त्री के जीवन में उसकी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता कितनी आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

### 3.2 स्त्री स्वतंत्रता का हनन

आज ही भले देश आजाद हो गया है, लेकिन स्त्री स्वतंत्र नहीं हुई है। वर्तमान स्त्री के अपने विचार-विमर्श हैं। वह पश्चिमी चिन्तन से काफी प्रभावित है। स्त्री स्वतंत्रता का मतलब यह नहीं है कि वह पारिवारिक अथवा सामाजिक बंधनों से मुक्त हो जाये, बल्कि स्त्री स्वतंत्रता का मतलब है 'अपने विचार व अपनी भावनाओं को अभिव्यक्ति देना' स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों ने अनेक जगहों पर स्त्री स्वातंत्र्य सम्बन्धी विचारों को प्रमुख विषय बनाया है। सदियों से स्त्री की अवहेलना होती आई है। धर्मवीर भारती भी स्त्री को उस कैद में से निकालना चाहते हैं। लेकिन कभी-कभी दूसरी स्त्रियाँ अपनी पुरानी मर्यादा को बनाये रखना चाहती है या पुरानी रूढ़िवादिता की जड़े इतनी मजबूत हैं कि स्त्री का उसमें से निकलना

नामुमकिन है। इसीलिए कथाकार अपने उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में पम्मी से कहलवाते हैं– "मैं शादी और तलाक के बाद इसी नतीजे पर पहुंची हूँ कि चौदह बरस से चौंतीस बरस तक लड़कियों को बहुत शासन में रखना चाहिए।"[149]

पम्मी आगे स्त्रियों की स्वतंत्रता को लेकर वेदना व्यक्त करती हुई कहती है– "मैं अब सोच रही हूँ कि स्त्री स्वाधीन नहीं रह सकती। उनके पास पत्नीत्व के सिवाए कोई चारा नहीं। जहाँ वह स्वाधीन हुई कि बस उसी अन्धकूप में जा पड़ती है जहाँ मैं थी।"[150]

समाज में स्त्री की स्वतंत्रता केवल उसके संरक्षक पति के हाथों में दी गई है पति जब चाहे स्त्री की स्वतंत्रता का हनन कर सकता है। क्योंकि पितृसत्तात्मक समाज स्त्री की महत्ता को कभी समझा ही नहीं है केवल उसे एक वस्तु के नजरिए से ही देखा गया है।

हिन्दुस्तान की नारी को लेकर चन्दर को बिसारिया कहता है– "हिन्दोस्तान में पता नहीं क्यों हम नारी को इतना महत्त्वहीन समझते हैं, या डरते हैं, या हममें इतना नैतिक साहस नहीं है।"[151]

बिनती भी अपने अधिकार के प्रति जागृत होती हुई चंदर को साफ शब्दों में कहती है– "आखिर नारी का भी एक स्वाभिमान है, मुझे माँ बचपन से कुचलती रही, मैंने तुम्हें दीदी से भी बढ़कर माना। तुम भी ठोकरें लगाने से बाज नहीं आये, फिर भी मैं सब सहती गयी। उस दिन जब मण्डप के नीचे मामा जी ने ज़बरदस्ती हाथ पकड़कर खड़ा कर दिया तो मुझे उसी क्षण लगा कि मुझ में भी कुछ सत्व है, मैं इसलिए नहीं बनी हूँ कि दुनिया मुझे कुचलती ही रहे। अब मैं विद्रोह करना भी सीख गई हूँ जिंदगी में स्नेह की जगह है, लेकिन स्वाभिमान भी कोई चीज है।"[152]

अब स्त्री अपनी स्वतंत्रता के प्रति जागृत हो गयी है। अब वह स्वतंत्र निर्णय लेकर अपने अधिकार के लिए लड़ती भी है।

---

149 धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73वाँ संस्करण 2015 ,नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 62

150 धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73 वाँ संस्करण 2015 ,नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या 210

151 धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73 वाँ संस्करण 2015 ,नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या 175

152 धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73 वाँ संस्करण 2015 ,नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या 188

### 3.3 स्त्री और यौन नैतिकता

समाज को एक सही ढंग से चलाने के लिए स्त्री और पुरुष के रिश्ते एवं संबंधों के लिए समाज में कुछ नियम तय किए जाते हैं। स्त्री पुरुष दोनों विपरीत यौन प्रकृति के हैं और स्वाभाविक है दोनों का रिश्ता समाज की सभ्यता और संस्कृति को सीधे प्रभावित करता है। क्योंकि दोनों के संबंध से सृष्टि का चक्र निरंतर चलता रहता है।

“प्राकृतिक रूप से विपरीत ‘यौन’ होने के कारण स्त्री और पुरुष संबंध इतने अधिक मोड़ से गुजरते है कि यौन संबंधी कमजोरियां दोनों तरफ से कभी भी उत्पन्न हो जाती है। पुरुष में यह कमजोरी तत्काल और आक्रामक रूप में दिखाई देती है लेकिन स्त्री की यौन संबंधी कमजोरियां समाज के सामने जल्दी दिखलाई नहीं पड़ती हैं।”[153]

यौन-संबंध में सबसे प्रबल काम भावना होती है। मानव के साथ कामवृत्ति का संबंध जन्म से रहता है। जीवन-सृष्टि के आरंभ से ही इस प्रवृत्ति का अस्तित्व माना जाता है। भूख और जिजीविषा की तरह यह मूल रूप में विद्यमान रहती है। पाश्चात्य चिंतकों ने ‘सेक्स’ को व्यापक अर्थों में ग्रहण किया है। यौन प्रवृत्ति का उदय सर्वप्रथम यौवनावस्था में प्रकट होता है, इस धारणा को फ्रायड ने गलत ठहराया। उनके मतानुसार बालक में आरंभ से ही यह आवेग विद्यमान रहता है। व्यक्ति के अंदर यौन प्रवृत्ति जन्म से ही विद्यमान है। जो युवावस्था में परिपक्व होने से पहले कई अवस्थाओं से गुजरती है। डॉ. गणेशन के अनुसार– “सेक्स जीवन का सबसे जघन्य, किंतु सबसे पवित्र सत्य है। अनादिकाल से मनुष्य की आन्तरिक तथा बाह्य-प्रवृत्तियों को रूप देती आने वाली काम-वासना सृजन की मूल प्रेरणा है, तो मनुष्य को पशुता से ऊपर उठने में बाधा देने वाली सबसे बड़ी शक्ति भी है।”[154]

वर्तमान काल स्त्री और पुरुष में सुखोपभोगी दृष्टि तथा भौतिकतावादी वृति के कारण यौन भावना को प्रधानता दी जाती है।

---

[153] नासिरा शर्मा औरत के लिए औरत सामयिक प्रकाशन, संस्करण 2007, पृष्ठ संख्या 110

[154] डॉ.एम.एम गणेशन, हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, राजपाल एंड संन्ज,नई दिल्ली , पृष्ठ संख्या 316

आज 'सेक्स' को ही जीवन का प्रधान अंग स्वीकारा जा रहा है। वर्तमान काल में सेक्स की संज्ञा को प्रेम माना जा रहा है। इसलिए समाज में कई समस्याओं का उद्गम हो रहा है। धर्मवीर भारती ने ऐसी तमाम समस्याओं का यथार्थ और मानसिक धरातल पर अंकन किया है। मनुष्य की जिजीविषा और क्षुधा तृप्ति के बाद कामतृप्ति का स्थान आता है। क्षुधा तृप्ति के अभाव में मानव मस्तिष्क उद्विग्न हो उठता है, उसी प्रकार काम-तुष्टि की उपेक्षा करने के परिणामस्वरूप भी व्यक्तिगत और सामाजिक विकृतियाँ जन्म लेती हैं। काम भावना मनुष्य जीवन का अनिवार्य अंग है। काम-सेवन मनुष्य के लिए स्वाभाविक और प्रकृत है परंतु उसका अति-दमन और अति-सेवन अस्वाभाविक तथा अहितकर है। वहीं मनुष्य को समस्याग्रस्त बनाता है। इस समस्या को मनोवैज्ञानिक समस्या कहते हैं।

आदमी सेक्स से दूर रह पाए, यह आदमी के लिए संभव नहीं है। यदि संभव है तो वह आदमी नहीं है आदमी से बढ़कर कुछ और है। सेक्स प्रकृति का सहज सत्य है जिसका अनुकरण मानव करता आया है और करना आवश्यक भी है। इसी दृष्टि को धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में भिन्न-भिन्न रूपों में और भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में प्रस्तुत किया है। 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में पम्मी एक स्थान पर चंदर से सेक्स के बारे में कहती है "यह तो सेक्स है मि. कपूर। सेक्स कितनी भयंकर शक्तिशाली भावना है यह भी शायद तुम नहीं समझते अभी तुम्हारी आँखों में बड़ा भोलापन है तुम रूप की आग के संसार से दूर मालूम पड़ते हो, लेकिन शायद दो-एक साल बाद तुम भी जानोगे कि यह कितनी भयंकर चीजे है। आदमी के सामने वक्त बेवक्त, नाता रिश्ता, मर्यादा अमर्यादा कुछ भी नहीं रह जाता... आदमी को कहाँ ले जाता है यह अंदाजा भी नहीं किया जा सकता। तुम तो अभी बच्चों की तरह भोले हो और ईश्वर न करे तुम कभी इस प्याले का शरबत चखो।"[155] पम्मी सेक्स को पवित्रता से देखती है। लेकिन उसका पति सेक्स को उपभोग के नजरिए से देखता था। उसका उपभोग जब चाहे करने की इच्छा रखता है। इससे दुःखी होकर पम्मी अपने पति से तलाक ले लेती है। पवित्र सेक्स की कामना करती हुई चंदर से कहती है "तुम जानते हो मैंने तलाक क्यों दिया। मेरा पति मुझे बहुत चाहता था लेकिन मैं विवाहित

---

[155] धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73वाँ संस्करण 2015 नई दिल्ली,पृष्ठ संख्या 83

जीवन के वासनात्मक पहलू से घबरा उठी! मुझे लगने लगा मैं आदमी नहीं हूँ इस मास का लोथड़ा हूँ जिसे मेरा पति जब चाहे मसल दे, जब चाहे... ऊब गई थी। एक गहरी नफरत थी मेरे मन में। तुम आये तो तुम बड़े पवित्र लगे। तुमने आते ही प्रणय-याचना नहीं की। तुम्हारी आँखों में भूख नहीं थी। हमदर्दी थी, स्नेह था, कोमलता थी, निश्छलता थी। मुझे तुम काफी अच्छे लगे। तुमने मुझे अपनी पवित्रता देकर जिला दिया।..."[156]

बंटी इस यौन समस्या की ओर संकेत करता हुआ चंदर को एक जगह पर सलाह देता हुआ कहता है–
"मैं इतनी सलाह तुम्हें दे रहा हूँ कि अगर तुम किसी लड़की से प्यार करते हो तो ईश्वर के वास्ते उससे शादी मत करना तुम मेरा किस्सा सुन चुके हो। अगर दिल से प्यार करना चाहते हो और चाहते हो कि वह लड़की जीवन-भर तुम्हारी कृतज्ञ रहे तो तुम उसकी शादी करा देना... यह लड़कियों के सेक्स जीवन का अन्तिम सत्य है।"[157]

स्त्री का जीवन उसकी यौन भावना से संबंधित रहता है क्योंकि जन्म से ही स्त्री को बताया जाता है कि उसका यौवन ही उसके जीवन का केंद्र है। यदि उसके जीवन का कौमार्य भंग हो जाता है तो स्त्री को समाज में कई तरह के अपमानजनक शब्दों का सामना करना पड़ता है। और स्वयं वह पुरुष भी समाज के डर से स्त्री का साथ छोड़ देता है जिसके साथ स्त्री अपने संबंध बनाती है।

यौन नैतिकता को सुधा और चंदर के संबंधों में कुछ अलग तरह से देख सकते है। यहाँ पर सेक्स नहीं आता परंतु आंतरिक (मानसिक) संबंध जरूर आते हैं जो आध्यात्मिक धरातल को छूता है और इसी धरातल पर चंदर जीता है, लेकिन चंदर का यह देवत्व भी इस सेक्स के सामने आकर पारे के कणों सा बिखर जाता है और यह सेक्स ही है जिसने चंदर को देवता से गुनाहों का देवता बना दिया है। सुधा को अपनी प्रेमिका मानने वाला चंदर सुधा को भी सेक्स के रूप में देखने लगा था। और कहीं न कहीं सुधा के प्रेम में सेक्स का गौण रूप देखने को मिल जाता है इसलिए सुधा चंदर को अपने शादी के छह महीने

[156] धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73वाँ संस्करण 2015 ,नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या83-84

[157] धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73वाँ संस्करण 2015 ,नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या184

बाद एक खत लिखती है जिसमें स्पष्ट करती है कि– “मैं यही कहूंगी चंदर कि तुमने अच्छा नहीं किया। मेरी आत्मा सिर्फ तुम्हारे लिए बनी थी, उसके रेशे में वे तत्त्व हैं जो तुम्हारी ही पूजा के लिए थे। तुमने मुझे दूर फेंक दिया लेकिन इस दूरी के अंधेरे में भी जन्म-जन्मांतर तक भटकती हुई सिर्फ तुम्हीं को ढूंढूंगी। इतना याद रखना और बस इस बार अगर तुम मिल गए तो जिंदगी की कोई ताकत, कोई आदर्श, कोई सिद्धांत, कोई प्रवंचना मुझे तुमसे अलग नहीं कर सकेगी।…”[158]

जिस प्रकार कथाकार ने स्त्री और यौन नैतिकता, यौन भावना के बारे में अपने उपन्यासों में बताया है। उसी प्रकार उन्होंने अपनी कहानियों में स्त्री और यौन नैतिकता, यौन भावना को एक ठोस धरातल पर प्रस्तुत किया है। ‘तारा और किरण’ कहानी के भीतर यौन नैतिकता को दिखाकर यह बताने का प्रयास किया गया है कि मानव जीवन में यौन भावना कितनी आवश्यक है। कहानी में अतिथि और रानी के प्रेम की बातों के माध्यम से यौन नैतिकता को दिखाया गया है– “रानी! हम मनुष्यों का प्रेम मनुष्य ही समझ सकते हैं– यौवन का आश्रित प्रेम नश्वर होता है– पर प्रेम का आश्रित प्रेम अमर-हम नश्वर जानते हुए भी पलकें मूंदकर प्रेम करते हैं क्योंकि हमारा प्रेम आत्मदान होता है-याचना नहीं। तुमने प्रेम को यौवन की तुला पर तौलना चाहा रानी! और प्रेम के भीषण ताप में गल रही हो। तुम्हारी वासनाएँ और तुम्हारा नश्वर यौवन-और मैं। तुम अनन्त शून्य में झाँककर देखना रानी! मैं प्रेम की जलन में जलकर भी तुमसे प्रेम करूंगा। प्रेम की जलन मेरे हृदय में तुम्हारी कांचन-प्रतिभा को और भी चमका देगी रानी! मेरा प्रेम मलिन न होगा-बिदा।”[159] ध्यान पूर्वक इस उदाहरण को देखें तो यौन नैतिकता की बात स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

अंत में यथार्थवादी कथाकार के रूप में धर्मवीर भारती की विशेषता यह है कि उन्होंने भारतीय समाज में सदियों से चली आ रही परंपरा में यौन नैतिकता के सारे दृष्टिकोण को व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। क्योंकि उनके यहाँ सेक्स कोई गोपनीय वस्तु नहीं है। धर्मवीर भारती ने सेक्स को समाज के

[158] धर्मवीर भारती ,गुनाहों का देवता ,भारतीय ज्ञानपीठ, 73वा संस्करण 2015 ,नई दिल्ली ,पृष्ठ संख्या178

[159] प्रस्तुति पुष्पा भारती, सांस की कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण 2014 नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 210

सामने स्त्री के माध्यम से बहुत ही खुले रूप में प्रस्तुत किया है। इसलिए कथाकार ने परम्परागत यौन नैतिकता के समक्ष पूंजीवादी और भौतिकतावादी नैतिकता को दिखाकर सेक्स संबंधी नवीन मूल्यों का निर्माण किया है।

## 3.4 अस्मिता की तलाश में संघर्षरत स्त्री

स्वयं के व्यक्तित्व को पहचानना, अपने व्यक्तित्व को तलाशना, स्वयं की खोज में निकलना ही अस्तित्व की तलाश में उठाया गया पहला कदम होता है। क्योंकि जब तक स्त्री स्वयं के अस्तित्व की पहचान नहीं करेगी तब तक वह मुक्त भी नहीं हो पाएगी इसलिए उसे अपने अधिकारों व स्व की पहचान करना अति आवश्यक हो जाता है यही तलाश समाज को प्रगति की राह पर ले जाएगी। “स्त्री विमुक्ति सामाजिक प्रगति का अनिवार्य हिस्सा है। यह केवल स्त्रियों का मामला नहीं है। स्त्रियों का अधिकार संपन्न होना न केवल स्वयं उनके जीवन को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सका है बल्कि वास्तव में, पुरुष और उसकी संतानों पर भी प्रभाव डाल सकती है जिन पर हमारे परिवार, समाज और राष्ट्र का भविष्य निर्भर करता है।”[160]

पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री को अपनी एक स्वतंत्र पहचान बनानी होगी। केवल अपने लिए नहीं अपितु भविष्य में आनी वाली पीढ़ियों के लिए भी, उसे यह संघर्ष करना होगा। और यह संघर्ष उसे अपनी बुद्धि और श्रम के जरिए करना होगा। तभी वह अपनी विजय पताका पितृसत्तात्मक समाज में स्वच्छंद रूप से लहरा सकेगी।

आज के औद्योगिक परिवेश में स्त्री ने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक आदि क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाई है। आज की सजग स्त्री अपनी प्रतिभा व कौशल को पहचानती है। वह अपने इन्हीं गुणों के बल पर अपना अस्तित्व निर्मित करना चाहती है। किंतु घर और बाहर दोनों जगहों में बंटी स्त्री को

[160] रेखा कस्तवार,स्त्री चिंतन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2006,नयी दिल्ली,पृष्ठ संख्या 189

इसके लिए अत्यधिक संघर्ष करना पड़ता है। बाहर की दुनिया में वह कितनी ही कामयाबी हासिल कर ले, लेकिन घर में उसे अपमान, घुटन, निराशा, कुंठा आदि मानसिक प्रताड़नाएं झेलनी पड़ती है। सीमोन द बोउवार अपने पुस्तक 'स्त्री उपेक्षिता' में स्त्री के दोहरे जीवन पर अपने मत को समाज के सामने उपस्थित करती हुई कहती है कि– " हमारे देश में औरत यदि पढ़ी-लिखी है और काम करती है, तो उससे समाज और परिवार की उम्मीदें अधिक होती है। लोग चाहते हैं कि वह सारी भूमिकाओं को बिना किसी शिकायत के निभाए। वह कमाकर भी लाए और अपने बच्चों का भरण-पोषण भी करे।... वह पति के ड्राइंग रूम की शोभा भी बने और पलंग की मखमली बिछावन भी।" इसी तरह उसका जीवन दो भागों में विभाजित हो गया है। स्त्री अब इस दोहरे मापदंड से थक चुकी है और अपने अस्तित्व की तलाश के संघर्ष में लग गई है।

इसके लिए कहीं न कहीं पुरुष सत्तात्मक समाज ही जिम्मेदार है। इसलिए स्त्री अस्मिता मात्र एक व्यक्तिगत लड़ाई नहीं है, वह एक सामाजिक लड़ाई भी है। जो अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। वर्तमान में भारतीय स्त्री के सामने अनेक प्रश्न मौजूद हैं जैसे सैद्धांतिक, तार्किक, व्यावहारिक। वह आज पुराने मिथकों, आदर्शों को तर्क के तराजू पर तौलती है परंतु साथ ही नयी परिस्थितियों ने उसे नए उत्तरदायित्व भी दिए हैं। इसलिए उसे समाज में प्रतिक्रियावादी ताकतें हमेशा से परेशान करती रहेंगी किंतु उनके भीतर जागृत हुई आत्मसम्मान की चेतना उन्हें संघर्ष के दिनों में सहारा भी देंगे। शायद इसलिए राजकिशोर ने अपनी पुस्तक स्त्री परंपरा और आधुनिकता में कहा है कि "स्त्री की अस्मिता की लड़ाई स्त्री को मनुष्य के समान दर्जा दिलाने की लड़ाई है। अभी तो यह लड़ाई शुरू ही हुई है। अगली सदी इस लड़ाई की ही सदी होगी।"[161]

धर्मवीर भारती स्त्री अस्मिता को लेकर एक गम्भीर लेखक के रूप में सामने आए हैं। जिन्होंने अपने लेखन में स्त्री अस्मिता को मुखर रूप में उजागर किया है साथ ही स्त्री शोषण का विरोध भी दिखाया है। वह स्त्री को पुरुष के समान रखने का प्रयत्न भी करते हैं। उन्होंने स्त्री की अस्मिता और अधिकारों से

[161] राजकिशोर, स्त्री परंपरा और आधुनिकता वाणी प्रकाशन,नयी दिल्ली,पहला संस्करण 1999 पृष्ठ संख्या15

संबंधित अपनी विचारधारा को अपने लेखन में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्ति दी है। कथाकार ऐसे समाज और ऐसी परंपराओं को दकियानूसी समझते हैं जो स्त्री की अस्मिता को दबाए रखने का घोर षड्यंत्र रचता है।

वर्तमान समय में अस्मिता के अर्थ परिवर्तित हो चुके हैं पारंपरिक, संस्कारनिष्ठ, पतिव्रता और आदर्शवादी होना स्त्री अस्मिता नहीं है। आज स्त्री अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्वयं निर्माता बनना चाहती है। पुरुष अपनी सत्ता का लोहा मनवाने के लिए अपनी इच्छा अनुरूप मनचाहे ढंग से स्त्री के व्यक्तित्व को ढालना चाहे तो यह आज की पढ़ी-लिखी आधुनिक स्त्री स्वीकार नहीं करेगी। क्योंकि स्त्री अब अपने अस्तित्व का मोल जान चुकी है।

उनके उपन्यास 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'गुलकी बन्नो' कहानी में 'सत्ती' नामक स्त्री पात्र एक संघर्षरत स्त्री हैं। जो मेहनत करने वाली स्वाधीन लड़की है। जो न पढ़ी-लिखी भावुक है और न अनपढी़ दमित मन वाली। "इस मेहनत करने वाली स्वाधीन लड़की के व्यक्तित्व में कुछ ऐसा था। जो न पढ़ी-लिखी भावुक लिली में था और न अनपढी़ दमित मन वाली जमुना में था। इसमें सहज स्वस्थ ममता थी जो हमदर्द चाहती थी, हमदर्दी देती थी, जिसकी मित्रता का अर्थ था एक दूसरे के दुख-सुख में, श्रम और उल्लास में हाथ बटाना। उसमें कहीं से कोई गांठ, कोई उलझन, कोई भय, कोई दमन, कोई कमजोरी नहीं थी, कोई बंधन नहीं था उसका मन खुली धूप की तरह था स्वच्छ था। अगर उसे लिली की तरह थोड़ी शिक्षा भी मिली होती तो सोने में सुहागा होता।"[162] वह एक आत्मनिर्भर स्त्री के रूप में अपने जीवन को पहचान देना चाहती है। क्योंकि वह जानती है कि स्त्री जब तक आत्मनिर्भर नहीं होगी तब तक उसके अस्तित्व को पहचान नहीं मिलेगी। साथ ही साथ'कुलटा' कहानी में अस्तित्व की पहचान को बहुत ही मुखर रूप में दिखाया गया है। नंदराम जब लाली को मार रहा होता है तो वह अपने अस्तित्व की पहचान कर नंदराम का विरोध करती है और कहती है कि "मैं लिखूंगी जरूर लिखूंगी उसे यहीं

[162] धर्मवीर भारती ,सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ 39 वाँ संस्करण 2010,पृष्ठ संख्या 63

बुलाऊंगी तेरी छाती पर बैठाऊंगी।"[163] 'तारा और किरण' कहानी में रानी अपनी अस्मिता की तलाश के लिए संघर्षरत रहती है और कहती है कि "मैं अतृप्त तृष्णा से जलती ही रहूंगी मैं कितनी दुखी हूँ। अतिथि! मेरा रानीत्व मेरे नारीत्व के स्वच्छन्द विकास को चूर-चूर कर रहा है।"[164] इससे स्पष्ट होता है कि रानी अपने अस्तित्व के लिए कितनी बेचैन और आतुर है यहाँ पर एक और बात गौर करने योग्य है कि वह स्त्री आम न होकर रानी है फिर भी अपने अस्तित्व की तलाश कर रही है यह हमारे समाज के लिए एक विचारणीय विषय है कि आज सत्ता में रह रही स्त्री को भी अस्मिता की तलाश करनी पड़ी।

### 3.5 स्त्री और विवाह

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में विवाह एक ऐसा पवित्र बंधन है, जिसका निर्वाह करना स्त्री और पुरुष दोनों के लिए अहम कर्त्तव्य माना जाता है। विवाह एक संस्कार व परम्परा है। जिसे अपनाकर स्त्री-पुरुष एक दूसरे से बंधकर गृहस्थ जीवन में प्रवेश करते हैं और सृष्टि के क्रम को आगे बढ़ने का दायित्व अपने कंधो पर लेते हैं। "नारी पुरुष के प्रेम को चिरस्थाई करने वाली मुहर का नाम विवाह है, जिसमें दो दिलों का मिलन और युग्म होता है।"[165] "विवाह प्रत्येक समाज की संस्कृति का एक आवश्यक अंग होता है चाहे वह आदिम हो अथवा सभ्य समाज हो क्योंकि यह वह साधन है जिसके आधार पर समाज की प्रारंभिक इकाई परिवार का निर्माण होता है।"[166]

पुत्री के माता-पिता इस विषय में अति चिन्तित रहते हैं क्योंकि पुत्री को शादी के बाद दूसरे घर में जाना होता है। लड़की के लिए यह एक नए जन्म के समान होता है। अलग परिवेश में जाकर उसे ससुराल के तौर-तरीकों के अनुरूप खुद को ढालना होता है। अपने घर-परिवार का मोह त्याग कर उसे दूसरे घर की

---

[163] धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सास की कलम, प्रस्तुति पुष्पा भारती,भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण 2014 नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 93

[164] धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सास की कलम, प्रस्तुति पुष्पा भारती,भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण 2014 नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 208

[165] हरिसिमरन कौर ,महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी का स्वरूप, पृष्ठ संख्या 71

[166] मुदिता चन्द्रा, विवाह: मात्र एक सामाजिक बन्धन या पवित्र विश्वास (आलेख), सं. मुदिता चन्द्रा, सुलक्षणा टोप्पो, आधुनिक एवं हिंदी कथा-साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप, पृष्ठ संख्या 85

जिम्मेदारियों के प्रति खुद को समर्पित करना होता है। विवाह के पश्चात् लड़का व लड़की दोनों के जीवन में परिवर्तन आते हैं किंतु एक लड़की के जीवन की तो यह संपूर्ण धारा ही परिवर्तित कर देता है।

धर्मवीर भारती ने 'गुनाहों का देवता' में हिंदू विवाह संस्था के विषय में विविध दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है जैसे उपन्यास का नायक चंदर और नायिका सुधा दोनों विवाह नहीं करना चाहते। चंदर का मानना है कि विवाह से सभी का भविष्य बिगड़ा है विवाह करके कोई सुखी नहीं हो पाया है उसके अनुसार विवाह के पहले पति पत्नी दोनों को एक दूसरे को समझना चाहिए इसलिए वो कहता है "आदमी एक दूसरे को समझे, बूझे, प्यार करे, तब विवाह के भी कोई माने है।"[167]

चंदर विवाह को केवल सामाजिक दृष्टिकोण से देखता है इसलिए जाति के बाहर विवाह का समर्थन करता है उसका कहना है– "अगर दो विभिन्न जाति के लड़के लड़की अपना मानसिक संतुलन ज्यादा अच्छा कर सकते हैं, तो क्यों न विवाह की इजाजत दी जाए।"[168]

विवाह के कटु अनुभवों के बाद पम्मी पति से अलग हो जाती है और विवाह से घृणा करने लगती है। वह चंदर से कहती है– "अगर यह विवाह संस्था हट जाए, तो कितना अच्छा हो पुरुष और नारी में मित्रता हो बौद्धिक मित्रता और दिल की हमदर्दी। यह नहीं कि आदमी औरत को वासना की प्यास बुझाने का प्याला समझे और औरत आदमी को अपना मालिक।"[169] लेकिन अंत में पम्मी की विवाह विषयक धारणा बदल जाती है और अपने पति के पास लौटने का निर्णय लेती है। और जाते वक्त चंदर को दिए खत में लिखती है– "मैं ईसाई हूँ पर सभी अनुभवों के बाद मुझे पता लगता है कि हिंदूओं के यहाँ प्रेम नहीं वरन धर्म और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर विवाह की रीति बहुत वैज्ञानिक और नारी के लिए सबसे ज्यादा लाभदायक है। उनमें नारी को थोड़ा बंधन चाहे क्यों न हो लेकिन दायित्व रहता है, संतोष रहता है वह अपने घर की रानी रहती है। काश कि तुम समझ पाते कि खुले आकाश में इधर-उधर भटकने के बाद, तूफानों से लड़ने के बाद मैं कितनी आतुर हो उठी हूँ। बंधनों के लिए, और

---

[167] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या 54

[168] धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या 46

[169] धर्मवीर भारती,गुनाहों का देवता भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या 84

इस सशक्त डाल पर बने सुखद सुकोमल नीड़ मंदिर में बसेरा लेने के लिए जिस नीड़ को मैं इतने दिनों पहले उजाड़ चुकी थी, आज वह मुझे पुकार रहा है। नारी के जीवन में यह क्षण आता है और शायद इसलिए हिंदू प्रेम के बजाय विवाह को अधिक महत्त्व देते हैं"[170] पम्मी पहले आजाद पंछी की तरह जीवन जीना चाहती थी परंतु वह अब वापस अपने घरौंदे में जाना चाहती है। उसे अब हिंदुओं की विवाह संस्था के आदर्श और महत्त्वपूर्ण लगने लगते हैं।

### 3.6 निष्कर्ष

अंत में धर्मवीर भारती स्त्री सरोकार के अंतर्गत स्त्री की अस्मिता व उसकी स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए उसे समाज में पुरुष की बराबरी का दर्जा देने का एक सफल प्रयत्न अपने कथा साहित्य के माध्यम से करते हैं। वह समाज को स्त्री की इच्छा और भावनाओं को समझने के लिए प्रेरित करते हैं। और साथ ही वह स्त्री को गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर स्वतंत्र मानव के रूप में जीने के लिए प्रोत्साहित भी करते हैं इसलिए आज के समय में स्त्री के सभी सरोकारों को समझना अत्यंत आवश्यक हो गया है क्योंकि स्त्री ही पूर्ण सृष्टि का आधार बिंदु है।

## संदर्भ ग्रंथ सूची

---

[170] धर्मवीर भारती,गुनाहों का देवता भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या 210

141 https://hi.quora.com

142 संपादक डॉ शिव प्रसाद भारद्वाज शास्त्री, मानक विशाल हिंदी शब्दकोश, अनिल प्रकाशन, न्यू मार्केट, नई दिल्ली

143 तसलीमा नसरीन, औरत का कोई देश नहीं, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2009, पृष्ठ संख्या 24

144 हेमलता महिश्वर, स्त्री लेखन और समय के सरोकार, नेहा प्रकाशन, संस्करण 2006, पृष्ठ संख्या 59

145 डॉ. के.एम मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2017 नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 76

146 अनु डॉ प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिन्द पाकेट बुक्स प्रकाशन, नवीन संस्करण 2002, पृष्ठ संख्या, 21

147 राजेश कुमार गर्ग, दसवें दशक के स्त्री उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की खोज (आलेख), संपादक कल्पना वर्मा, स्त्री विमर्श: विविध पहलू, पृष्ठ संख्या 100

148 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन ,73 वाँ संस्करण नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 208

149 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 73वाँ संस्करण 2015, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 62

150 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 73वाँ संस्करण 2015, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 210

151 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 73 वाँ संस्करण 2015, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 175

152 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 73 वाँ संस्करण 2015, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 188

153 नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2007, पृष्ठ संख्या 110

154 डॉ. एम .एम गणेशन, हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, राजपाल एंड संन्ज प्रकाशन,नई दिल्ली,पृष्ठ संख्या 316

155 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 73वाँ संस्करण 2015 नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या 83

156 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 73वाँ संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या83-84

157 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 73वाँ संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या184

158 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 73वाँ संस्करण 2015, पृष्ठ संख्या178

159 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सांस की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण 2014 नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 210

160 रेखा कस्तवार, स्त्री चिंतन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, पहला संस्करण 2006, नयी दिल्ली, पृष्ठ संख्या 189

161 राजकिशोर, स्त्री परंपरा और आधुनिकता, वाँणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पहला संस्करण 1999 पृष्ठ संख्या15

162 धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, 39 वाँ संस्करण 2010, पृष्ठ संख्या 63

163 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सास की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण 2014 नई दिल्ली पृष्ठ संख्या 93

164 प्रस्तुति पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की संपूर्ण कहानियां, सास की कलम से, भारतीय ज्ञानपीठ, तीसरा संस्करण 2014 नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या208

165 हरिसिमरन कौर, महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी का स्वरूप, पृष्ठ संख्या 71

166 मुदिता चन्द्रा, विवाह: मात्र एक सामाजिक बन्धन या पवित्र विश्वास (आलेख), सं. मुदिता चन्द्रा, सुलक्षणा टोप्पो, आधुनिक एवं हिंदी कथा-साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप, पृ. 85

167 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 54

168 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन नई दिल्ली, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 46

169 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तिहतरवाँ संस्करण, पृष्ठ संख्या 84

170 धर्मवीर भारती, गुनाहों का देवता, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तिहतरवाँ संस्करण पृष्ठ संख्या 210

# उपसंहार

इस तरह धर्मवीर भारती के साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने से पता चलता है कि वे सिर्फ एक सफल कहानीकार या उपन्यासकार ही नहीं बल्कि कवि, निबंधकार, समालोचक एवं अनुवादक भी हैं। साहित्य की कोई भी विधा उनकी लेखनी से अछूती नहीं रही। काव्य से लेकर पत्रकारिता तक सभी विधाओं में उन्होंने सफल रूप से अपनी कलम चलाई है। धर्मवीर भारती ने अपने लेखन कार्य में सभी समस्याओं को हमारे सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। क्योंकि किसी भी युग का महान प्रतिभाशाली कलाकार अपने युग की ज्वलंत समस्याओं की उपेक्षा नहीं कर सकता। एक महान कलाकार वह होता है जो जीवन की गहन संवेदनाओं से ऊपर उठने की प्यास रखता हो और साथ ही चारों ओर धुंध को चीर कर एक सशक्त जीवन दर्शन की मशाल लेकर आगे बढ़ने का साहस भी रखता हो।

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है। समाज की सारी व्यवस्था पुरुषों के हाथों में रही है। पुरुषवादी सत्ता ने ऐसा कुचक्र रचा कि समाज का स्वामी स्वयं बन गया और स्त्री को समाज की दासी मात्र बना दिया। ऐसा जाल चारों ओर फैलाया कि अपना आधिपत्य स्थापित कर स्त्री का सारा व्यक्तित्व अपने पैरों के नीचे कुचल दिया। जिसके कारण स्त्री का परिवार और समाज में उसका कोई स्वतंत्र अस्तित्व ही नहीं बचा।

हमारे समाज में जो कुछ भी घटित होता है, वह मानव जीवन को स्पष्ट रूप से प्रभावित करता है। इस प्रभाव से ही मनुष्य का जीवन के प्रति दृष्टिकोण निर्धारित होता है। धर्मवीर भारती का कथा-साहित्य स्त्री प्रधान है। धर्मवीर भारती के साहित्य में स्त्री समाज का आइना रही है। अतः सम्पूर्ण समाज में स्त्री जीवन को जानने के लिए स्त्री का जीवन के प्रति क्या दृष्टिकोण रहा है, वह जानना भी अतिआवश्यक है। धर्मवीर भारती ने अपने समस्त कथा-साहित्य में स्त्री जीवन के प्रति अपार सहानुभूति प्रकट की है, जिसमें तप, त्याग, साधना आदि। मानव जीवन के सद्गुणों को धर्मवीर भारती जी ने स्त्री जीवन के माध्यम से प्रकट किया है, धर्मवीर भारती के साहित्य में यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि, स्त्री जो सहन करती है जिसे जीती है वही उसका जीवन है।

भारतीय समाज में स्त्री को देवी, माता आदि से संबोधित कर उसे समाज में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। मनु का यहाँ तक कहना है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:" प्राचीनकाल में स्त्री के प्रति समाज में श्रद्धा थी परन्तु वह आगे चलकर कालांतर में नहीं रही। प्राचीन काल में नारी देवी थी तो मध्यकाल में माया समझी गई। इससे उसका स्थान कलंकित होने लगा। रीतिकाल के कवि उसकी छवी का आश्रय लेकर शोभायमान हो गये तो छायावाद में कविजन स्त्री नाम से ही कल्पना लोक में  खो जाते थे। लेकिन यह स्थिति दीर्घकाल तक नहीं रह पायी, पुरातनकाल

की देवी, माता, से संबोधित होने वाले स्त्री के ये रूप, गुण आधुनिक परिस्थितियों से टकरा गये और तितिर बितिर हो गए।

धर्मवीर भारती के कथा साहित्य में स्त्रियाँ अपना एक अलग ही स्थान रखती है। इनकी स्त्रियों में पुरातन घीसी हुई धारणा उपलब्ध नहीं होती वरन् उनमें आदर्श तथा यथार्थ का स्वरूप देखने को मिलता है। इनकी स्त्रियाँ स्वाधीन व्यक्तित्त्व वाली हैं। उनमें भावुकता की चरम सीमा तो है पर उदात्त गुण की कमजोरी नहीं है। उन्होंने ऐसी स्त्री पात्रों का सृजन किया है जो परिस्थितियों से लड़कर अपने जीवन को नई दिशा देती है। साथ ही इनकी स्त्रियाँ त्याग, सेवा, पवित्रता, भक्ति, उदारता, सहिष्णुता आदि भावों का भी प्रतिनिधित्व करती है।

'गुनाहों का देवता' की सुधा भावुक मन से कह रही है– "हम लड़कियों की ज़िन्दगी भी क्या मैं तो सोचती हूँ गेसू कि मैं भी ब्याह ही न करूं" इन पंक्तियाँ में परंपरा की टूटन के साथ इनकी भावुक स्त्री स्वतंत्र बनकर रहना चाहती है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि भारती की स्त्रियों में खुलापन है। जैसे पमिला में स्वतंत्रता तथा भावुकता का भाव उभरा है– "कपूर में सोच रही हूँ अगर यह विवाह संस्था हट जाये तो कितना अच्छा होगा। पुरुष और नारी में मित्रता हो बौद्धिक मित्रता और दिल की हमदर्दी।" पमिला के इस मर्मस्पर्षी भाव में भावुकता का भाव ही भरा हुआ है। 'सूरज का सातवां घोड़ा' की सत्ती में भी स्वतंत्र व्यक्तित्व उभरा है। वह हर दिन दुकान जाकर साबुन बेचा करती थी तथा उसी वक्त पैसे भी वसूल कर लाती थी। उसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति भी थी तो उसकी मित्रता का लक्ष्य एक दूसरे के दुःख-सुख में हाथ बटाना भी था। इसी उपन्यास की जमुना में भी आदर्श तथा उदात्त के गुण रहे हैं। वक्त ने इसके पति पर अन्याय किया। पति वियोग के बाद जमुना मन मानी कर सकती थी, लेकिन यथार्थ यह है कि एक टाँगा हांकने वाले रामधान को पति मानकर शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगी। वैसे तो स्त्री की एक सहज प्रवृत्ति होती है कि वह बाहरी दुनिया का शीघ्र ही आत्मसमर्पण कर लेती है। जमुना का जीवन भी ऐसे ही रहा है। इसलिए स्त्री का जीवन आनन्ददायक कैसे हो सकता है, जबकि वह अनमेल विवाह जैसी कुरीति मे फसकर अपना पूरा जीवन व्यतीत कर देती है। इन सभी स्थितियों में सामान्य नारी की स्थिति भी सहज ही रूप से देखने को मिल जाती है।

भारती की स्त्रियों में सेवा, त्याग, पवित्रता, भक्ति, उदारता आदि भावों का समावेश भी कम नहीं है। 'गुलकी बन्नों' कहानी में गुलकी पति द्वारा तिरस्कृत होने के बावजूद पति के साथ चली जाती है अपनी सौतन के बच्चे की देख रेख करने के लिए। यहाँ पर गुलकी का आदर्श, त्याग भाव छिपा हुआ है। 'गुनाहों का देवता' की सुधा ने तो लोक मर्यादा के बन्धनों को कभी नहीं तोड़ पाती है क्योंकि उसके भावुक स्त्रीत्व में ही प्रेम का भाव विद्यमान है।

भारती के कथा साहित्य में स्त्री प्रमुख भूमिका निभाती है जैसे– 'अमृत की मृत्यु' में अंजलि, 'आधार और प्रेरणा' में सरिता, 'कुलटा' में लाली, 'एक बच्ची की कीमत' में रानी और बिन्दो, 'आश्रम' में शांता, 'यह मेरे लिए नहीं' में दीनू की माँ, सांजी, अपर्णा, 'बंद गली का आखिरी मकान' में बिरजा, 'सावित्री नंबर दो' में सावित्री आदि पात्र प्रमुख भूमिका निभाते हैं। लेखक की पूरी कहानी ही इन्हीं पर टिकी हुई है। इसी तरह धर्मवीर भारती के दोनों उपन्यासों में नारी पात्र ही प्रमुख है। 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' में जमुना, सत्ती और लीली पूरी उपन्यास में छाई हुई है। उसी तरह 'गुनाहों का देवता' में सुधा, पम्मी और बिनती के इर्द गिर्द ही पूरी कहानी घूमती है। इस तरह धर्मवीर भारती ने स्त्री चरित्र के स्वरूपों को प्रमुखता प्रदान की है और स्त्री को पुरुष के समकक्ष महत्त्व दिया है। धर्मवीर भारती ने स्त्री के रूप को उनकी परिस्थितियों के अनुसार ही प्रस्तुत किया है। धर्मवीर भारती ने स्त्री के हर रूप का चित्रण सूक्ष्मता और बारीकी से किया है चाहे वह एक भिखारिन हो, या पढ़ी-लिखी सुसंपन्न स्त्री।

धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में स्त्रियों के सरोकार से जुड़ी समस्याओं को दिखया है। स्त्री को केंद्र में रखकर उन्होंने स्त्री स्वतंत्रता, स्त्री स्वतंत्रता का हनन, स्त्री और यौन नैतिकता, अस्मिता की तलाश में संघर्षरत स्त्री तथा स्त्री और विवाह का विश्लेषण किया है। धर्मवीर भारती ने अपने लेखन में स्त्री शोषण का विरोध दिखाया है और स्त्री को पुरुष के सामान रखने का प्रयत्न किया है। स्त्री की अस्मिता और अधिकारों से संबंधित अपनी विचारधारा को उन्होंने अपने लेखन में प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है ऐसे समाज और ऐसी परंपराओं को उन्होंने दकियानूसी समझा है जो स्त्री की अस्मिता को दबाए रखते हैं।

वर्तमान समय में अस्मिता के अर्थ परिवर्तित हो चुके हैं। पारंपरिक, संस्कारनिष्ठ, पतिव्रता, आदर्शवादी होना स्त्री अस्मिता नहीं है। आज स्त्री अपने स्वतंत्र अस्तित्व की स्वयं निर्माता बनना चाहती है। पुरुष अपनी सत्ता का लोहा मनवाने के लिए अपनी इच्छा के अनुरूप मनचाहे ढंग से स्त्री के व्यक्तित्व को ढालना चाहे तो भी आज की यानी आधुनिक स्त्री स्वीकार नहीं करेगी। आज से हजार वर्ष पहले की स्त्री और आज की स्त्री में आकाश पाताल का अंतर है। परन्तु अब भी स्त्रियों का एक बहुत बड़ा भाग विकास की न्यूनतम सीमा को पार नहीं कर पाया है। भारती के साहित्य में वर्तमान की इस सत्यता को डंके की चोट पर उजागर किया गया है, जिसे देखते सब हैं, जानते सब हैं, समझते सब हैं पर पुरुष अपनी सुविधा के लिए चुप और शान्त रहता है तो नारी अभ्यासवशतः।

धर्मवीर भारती ने स्त्री शोषण की प्रत्येक समस्याओं का उल्लेख करते हुए जितनी गहराई के साथ चिंतन मनन अपने कथा साहित्य में किया है। उतना हिंदी के किसी अन्य पुरुष साहित्यकार के कथा साहित्य में देखने को नहीं मिलता

है। पुरुष के वर्चस्व से दबी स्त्री की छटपटाहट को धर्मवीर भारती ने अपने कथा साहित्य में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

अपनी बात को मैं महादेवी वर्मा के इस कथन के साथ समाप्त करना चाहूंगी।

"पुरुष को यदि ऐसे वृक्ष की उपमा दी जाय, जो अपने चारों ओर के छोटे-छोटे पौधों का जीवन-रस चूस-चूस कर आकाश की ओर बढ़ता जाता है तो स्त्री को ऐसी लता कहना होगा, जो पृथ्वी से बहुत थोड़ा-सा स्थान लेकर, अपनी सघनता में बहुत से अंकुरों को पनपाती हुई उस वृक्ष की विशालता को चारों ओर से ढक लेती है। वृक्ष की शाखा प्रशाखाओं को काटकर भी हम उसे एकाकी जीवित रख सकते हैं, परन्तु लता की, असंख्य उलझी-उलझी उपशाखाएँ नष्ट हो जाना ही उसकी मृत्यु है।"

समग्रता: में देखें तो-यदि संसार को नई दिशा की ओर ले कर जाना है तो स्त्री और पुरुष दोनों को एक साथ रहकर सभी कार्य पूरे करने होंगे और ये तभी संभव हो सकता है जब स्त्रियों को उनका अधिकार और सम्मान मिलेगा।

# संदर्भ ग्रंथ सूची

## आधार ग्रंथ सूची


**चयनित उपन्यास**

**1** धर्मवीर भारती, गुनाहों के देवता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, तिहतरवां संस्करण 2015

**2** धर्मवीर भारती, सूरज का सातवां घोड़ा,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,नई दिल्ली ,उनतालीसवां संस्करण

**चयनित कहानियाँ**

**3** प्रस्तुति पुष्पा भारती,धर्मवीर भारती की सम्पूर्ण,सांस की कलम से,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण

1 चाँद और टूटे हुए लोग

2 अमृत और मृत्यु

3 आधार और प्रेरणा

4 कुलटा

5 धुआँ

6 भूखा ईश्वर

7 एक बच्ची की कीमत

8 पूजा

9 स्वप्नश्री  और श्रीरेखा

10 शिंजिनी

11 नारी और निर्वाण

12 तारा और किरण

13 मंजिल

14 गुलकी बन्नो

15 सावित्री नंबर दो

16 यह मेरे लिए नहीं

17 बंद गली का आखिरी मकान

18 आश्रम

**सहायक ग्रंथ सूची**


1 धर्मवीर भारती, मानव मूल्य और साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,पाँचवाँ संस्करण 2019 नई दिल्ली

2 धर्मवीर भारती, सात गीत-वर्ष ,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण जनवरी 1976, नई दिल्ली

3 हरिवंश राय बच्चन ,नीड़ का निर्माण फिर,राजपाल एंड संन्ज, चौथा संस्करण 1976, नई दिल्ली

4 डॉक्टर चंद्रभानु सीताराम सोनवणे,धर्मवीर भारती का साहित्य सृजन के विविध रंग,पंचशील प्रकाशन जयपुर

5 संपादक पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती की साहित्य साधना,भारतीय ज्ञानपीठ,नई दिल्ली,दूसरा संस्करण 2002

6 संपादक पुष्पा भारती, धर्मवीर भारती से साक्षात्कार,भारतीय ज्ञानपीठ, दूसरा संस्करण 2004,नई दिल्ली,

7 चंद्रकांत बांदिवेडकर, धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और कृतित्व, साहित्य अकादेमी, पहला संस्करण 2001

8 डॉ सरिता शुक्ला,धर्मवीर भारती: युग चेतना और अभिव्यक्ति, चिंतन प्रकाशन,प्रथम संस्करण,कानपुर

9 धर्मवीर भारती,प्रगतिवाद :एक समीक्षा, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयागराज

10 डां पुष्पा वास्कर, धर्मवीर भारती: व्यक्ति और साहित्य, अलका प्रकाशन,कानपुर, प्रथम संस्करण

11 धर्मवीर भारती, ठंडा लोहा,साहित्य भवन लिमिटेड, इलाहाबाद

12 धर्मवीर भारती, सपना अभी भी,वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

13 धर्मवीर भारती,अंधा युग,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकशन,नई दिल्ली

14 डॉ हुकुमचंद राजपाल,धर्मवीर भारती,:साहित्य के विविध आयाम,विभू प्रकाशन, पहला संस्करण,

15 धर्मवीर भारती,नदी प्यासी थी,भारतीय ज्ञानपीठ प्रकशन नई दिल्ली

16 संपादक चंद्रकांत बांदिवेडकर,भारती ग्रंथावली 5

17 डॉ.अमिता मुखर्जी ,वूमेन इन इंडिया लाइफ एंड सोसायटी,पुस्तक महल प्रकाशन, पहला संस्करण,1996

18 आशारानी व्होरा, नारी शोषण आईने और आयाम, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982

19 अनु डॉ प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, हिन्दी पाकेट बुक्स प्रकाशन, नयी दिल्ली, नवीन संस्करण 2002

20 रेखा कस्तवार, स्त्री चिंतन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन पहला संस्करण 2006,नयी दिल्ली

21 जॉन स्टूअर्ट मिल,स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल प्रकाशन 2016

22 संपादक डॉक्टर संजय गर्ग,स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास,सामयिक प्रकाशन ,दूसरा संस्करण 2015

23 बिंदु अग्रवाल,हिंदी उपन्यास में नारी चित्रण,राधाकृषण प्रकाशन, नई दिल्ली

24 जयशंकर प्रसाद, कामायनी,लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली,संस्करण 2010

25 डॉ.रामेश्वर नारायण, साहित्य में नारी विविध संदर्भ नचिकेत प्रकाशन, दिल्ली, 1990

26 ऋग्वेद

27 राजकिशोर, स्त्री और पुरुष कुछ पुनर्विचार, वाँ णी प्रकाशन नई दिल्ली,दूसरा संस्करण 2000, पृष्ठ संख्या 31

28 श्रीमद्भागवत गीता, भूमिका

29 राजेंद्र यादव ,आदमी की निगाहों में औरत,राजकमल प्रकाशन पेपर बैक्स नई दिल्ली,पांचवां संस्करण 2019

30 शांतिकुमार स्याल,नारीत्व, आत्माराम एंड संस प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1998, दिल्ली,

31 राजकिशोर,स्त्री परंपरा और आधुनिकता, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,प्रथम संस्करण 1999

32 संपादक डॉ शिव प्रसाद भारद्वाज शास्त्री, मानक विशाल हिंदी शब्दकोश, अनिल प्रकाशन,नई दिल्ली

33 तसलीमा नसरीन, औरत का कोई देश नहीं, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली,प्रथम संस्करण 2009

34 हेमलता महिश्वर ,स्त्री लेखन और समय के सरोकार, नेहा प्रकाशन, संस्करण 2006

35 डॉ. के.एम मालती, स्त्री विमर्श: भारतीय परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2017 नई दिल्ली,

36 राजेश कुमार गर्ग,दसवें दशक के स्त्री उपन्यासों में स्त्री अस्मिता की खोज (आलेख ),संपादक कल्पना वर्मा स्त्री विमर्श: विविध पहलू,

37 नासिरा शर्मा, औरत के लिए औरत, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2007,

38 डॉ.एम.एम गणेशन, हिंदी उपन्यास साहित्य का अध्ययन, राजपाल एंड संन्ज प्रकाशन,नई दिल्ली

39 हरिसिमरन कौर ,महिला कहानीकारों की कहानियों में नारी का स्वरूप

40 मुदिता चन्द्रा, विवाह: मात्र एक सामाजिक बन्धन या पवित्र विश्वास (आलेख), सं.मुदिता चन्द्रा, सुलक्षणा टोप्पो,आधुनिक एवं हिंदी कथा-साहित्य में नारी का बदलता स्वरूप

41 महादेवी वर्मा, श्रृंखला की कड़ियां, लोकभारती पेपर बैग्स, दूसरा संस्करण 2012 नई दिल्ली

**पत्रिकाएं**

1. स्त्रीकाल (स्त्री का समय और सच) संपादक संजीव चंदन वॉल्यूम- 5, अंक- 1.
2. नया ज्ञानोदय स्त्रीस्वर का सच संपादक लीलाधर मंडलोई अंक 176,अक्टूबर2017.
3. गवेषण--संपादक शंभूनाथ ,अंक 87,अप्रैल सितंबर2007.
4. कादम्बिनी मासिक पत्रिका, जून 1973

**वेब**

1.https://www.hindisamay.com

2. https://hi.quora.com